अघोरानंद और कपालिनी का रहस्य

अनिल शेखर "अमस"

अघोरानं

द

और

कपालि

नी

का रहस्य

-: डिस्क्लेमर :-

****

यह संपूर्ण कथानक काल्पनिक है और लेखक की शुद्ध कल्पना है ।

किसी वास्तविक पात्र या प्रसंग या स्थान से किसी भी प्रकार की युति अगर बैठती है तो उसे केवल एक संयोग माना जाए ।

कथा के प्रसंग में जिन साधनाओं तथा मंत्रों का उल्लेख है । उनको प्रतीकात्मक समझा जाए ।

किसी भी प्रकार की साधना तथा प्रयोग सक्षम गुरु के सानिध्य में तथा उनके निर्देशन में ही संपन्न किए जाएं , तभी उपयुक्त परिणाम प्राप्त होते हैं ।

इस कथानक में दिए गए मंत्रों को तथा साधना विधियों को लेखक की कल्पना मान कर पढ़ें तथा स्वयं किसी भी प्रकार से उनका उपयोग न करें । क्योंकि यह गुरुगम्य विषय है ।

किसी प्रकार की त्रुटि होने पर गंभीर दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं , जिसकी जिम्मेदारी आपकी स्वयं की होगी ।

शव, बलि तथा अन्य प्रक्रियाओं का उल्लेख केवल कथा में रोमांच पैदा करने के लिए किया गया है ।
इसका किसी भी वास्तविक घटना या व्यक्ति से किसी भी प्रकार का संबंध होना महज एक संयोग है ।
पाठक स्वविवेक से कार्य करें और साधना के पथ पर किसी योग्य और अनुभवी साधक या गुरु के मार्गदर्शन में ही आगे बढ़े ।
कथा में उल्लिखित किसी भी प्रक्रिया का जो कानूनन अपराध हो, प्रयोग ना करें !
यह आपके लिए हानिकारक होगा ।
किसी भी गैर कानूनी गतिविधि में संलिप्त होने पर आपको कानून के तहत दंड का पात्र होना पड़ेगा ।

अंत में .....
इस रचना को तंत्र कथा के रूप में मनोरंजन के लिए पढ़ें तथा इस का आनंद लें ।

सस्नेह

अनिल शेखर

anilshekhar.amas@gmail.com

॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

प्रिय पाठक पाठिकाओं ,

सादर नमस्कार,

मेरी कहानियों का विषय तंत्र रहता है जो कि आमतौर पर डर और दूसरों को नुकसान पहुंचाने वाली क्रिया के रूप में ही समाज में जाना जाता रहा है । ऐसा होने के पीछे उन ढेर सारे तथाकथित तांत्रिकों का भी हाथ है, जिन्होंने अपने छोटे-मोटे फायदे के लिए दूसरों को नुकसान पहुंचाने को अपनी आजीविका का साधन बना लिया ।

तंत्र या तांत्रिकों से डरने की जरूरत नहीं है । उसके मर्म को जानकर उसका सकारात्मक उपयोग करने की जरूरत है ।

वास्तव में अगर आप देखें तो तंत्र का साहित्य शायद विश्व में सबसे पुराना साहित्य है । चाहे वह वेदों में से अथर्ववेद हो या फिर महाकाल संहिता जैसे ग्रंथ हों , वे अपनी प्राचीनता किसी न किसी रूप में सिद्ध करते रहे हैं ।

कहा जाता है कि लकड़ी की हांडी दोबारा चूल्हे पर नहीं चढ़ती !

इसका तात्पर्य है कि अगर आप लकड़ी की हांडी चूल्हे पर चढ़ाएंगे तो हो सकता है कि वह एक बार आपका खाना पका दे ....

लेकिन इस प्रक्रम में वो खुद जल जाएगी और फिर अगली बार खाना पकाने लायक नहीं बचेगी ।

अगर तंत्र साधना में किसी प्रकार का लाभ नहीं होता तो आज तक वह लुप्त हो चुकी होती .....

लेकिन.... इतने हजार वर्ष बीत जाने के बाद भी अगर वह जीवित है चैतन्य है तो आप यह मान कर चलिए कि उसमें कुछ सार अवश्य छिपा है.....

सनातन धर्म मे तंत्र साधना को काफी महत्व दिया जाता रहा है । यदि आप महाभारत की कथा को देखें तो भी आप पाएंगे कि भगवान कृष्ण ने स्वयं अर्जुन को भगवान शिव की साधना करके पाशुपतास्त्र प्राप्त करने का निर्देश दिया था ।

स्वयं भगवान श्री कृष्ण जो कि भगवान विष्णु का अवतार माने जाते हैं... चक्र धारण करते हैं वह भी एक

प्रकार की शक्ति है जो कि भगवान शिव की आराधना करके उन्हें प्राप्त हुई थी ।

चाहे महिषासुर हो या किसी प्रकार की आसुरी शक्तियों का प्रकोप हो .....
उनके निवारण के लिए विभिन्न प्रकार की साधनाएं करने और उसके माध्यम से अद्भुत शक्तियों को प्रकट करने का कथानक हम अपने धर्म ग्रंथों में सुनते हैं .... जो स्वयं इस बात को प्रमाणित करते हैं कि साधनाएं और मंत्र जाप कई प्रकार से आपको अनुकूलता दे सकते हैं ।
कोरोना काल में भारत के विषय में कई प्रकार की भविष्यवाणियां की गई थी ....
अगर आप अधिकारिक मृत्यु दर को देखें तो वह कम से कम 3% के आसपास बैठती है ।
अगर हम 140 करोड़ का 3% देखें तो वह संख्या 4 करोड से कुछ ऊपर होगी । उन भविष्यवाणियों के अनुसार भारत में इतने व्यक्तियों की मृत्यु संभावित थी ।
आंकड़े इससे बहुत कम है ...

अगर आप यह मान ले कि इस से 3 गुना लोगों ने अपनी जान गवाई है तब भी इन भविष्यवाणियों की तुलना में वह एक चौथाई से भी कम बैठेगा ।

इसके पीछे मेरे विचार से सबसे बड़ा कारण भारत के लोगों का आध्यात्मिक होना ...
उनका ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास होना भी है ...
हमारे तमाम संत....
चाहे वह किसी भी धर्म संप्रदाय से जुड़े हैं ....
अपने अपने स्तर पर सभी ने कोरोना से मुक्ति दिलाने के लिए उस परम सत्ता से प्रार्थना जरूर की है.....
और उनकी कृपा भी मिली है....
तभी हम इस भयानक महामारी से जूझने में सफल हो पाए हैं ।
और.....
काफी हद तक इसे नियंत्रित करने में भी कोशिशें कामयाब हुई है ।
ऐसा नहीं है कि केवल मंत्र जाप कर लेने से आपके सब काम हो जाएंगे लेकिन उनका रास्ता आपको थोड़ा

सरल लगने लगेगा और देवी सहायता की वजह से चीजें सुगम हो जाएंगे ।

आपने भगवान वेंकटेश्वर बालाजी के मंदिर में चढ़ावे के रूप में कई किलो सोने की वस्तुएं जैसे मुकुट तलवार आदि भेंट के रूप में किसी व्यक्ति के द्वारा चढ़ाने का जिक्र अवश्य सुना होगा । यह कलयुग है और आप यह मान कर चलिए कि अगर किसी ने 10 तोले का सोने का मुकुट चढ़ाया है.....

तो कम से कम उसे 100 तोले का लाभ हुआ होगा.....

तभी वह 10 तोले का मुकुट चढ़ाएगा ।

इतनी सामान्य गणना तो आप भी कर सकते हैं ।

वर्तमान समय में हमारे देश के सबसे अमीर आदमियों में मुकेश अंबानी की गिनती की जाती है । आप उनको भगवान सिद्धिविनायक के मंदिर मे पूजन दर्शन करते हुए कई बार देख चुके होंगे । वह व्यक्ति जिसने पूरे भारत के डिजिटल संसार को बदल कर रख दिया .....

जो आज के डेट में कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी का सिरमौर माना जाता है....

वह अगर सिद्धिविनायक मंदिर में जाकर सिर झुका रहा है तो .....

कुछ तो बात होगी..... बस इसी बात को समझना है । कर्म करना जरूरी है, लेकिन कर्म करने के साथ-साथ अगर आप देवी कृपा भी प्राप्त कर लें, तो आपका मार्ग सरल भी हो जाएगा और लक्ष्य की प्राप्ति जल्द भी हो जाएगी ।

खैर .....

आप में से अधिकांश लोगों ने अघोरानंद सीरीज को काफी पसंद किया । इस कहानी में कई जगह पर कपालिनी का उल्लेख आया है और बहुत सारे पाठक उसके संबंध में जानना चाहते थे । उनकी इसी जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए इस कहानी में कपालिनी के विषय में कुछ लिखने का प्रयास कर रहा हूं ..... आशा है आपको पसंद आएगा ।

सस्नेह

अनिल शेखर

पूर्व पीठिका

जैसा कि आप मेरी पूर्व कथाओं में पढ़ चुके हैं मैं अघोरानंद हूँ !

मेरी सरकारी नौकरी थी ।

मेरी शादी इक्कीस साल में हो गयी थी । पत्नी माला सुंदर स्त्री थी उस के साथ मेरा जीवन अत्यंत आनंद के साथ व्यतीत हो रहा था ।

विवाह के लगभग 5 वर्ष के बाद भी जब माला गर्भवती नहीं हो पाई तो हमारे जीवन में निराशा घर करने लगी ! इसी निराशा में एक दिन उसने बिस्तर पकड़ लिया । उसके देह का रोग कोई पकड़ नहीं पा रहा था और मन का रोग लाइलाज होता चला गया ।

माला की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गई और उसने जन्माष्टमी की रात्रि अपनी देह छोड़ दी.....

मैं अकेला रह गया ! मैं अपनी प्यारी माला को खो चुका था ! उसके साथ बिताए खूबसूरत पल मेरे मानस पटल पर तैरते रहते !

मैं पागलों की तरह रात रात भर
जागता.....उस आनंद की तलाश करता
जो मैंने उसके साथ महसूस किया था ! लेकिन वह सब
खत्म हो चुका था ।
समय आगे बढ़ता रहा और चलते चलते दीपावली आ
गई ।
दीपावली की रात मेरे जीवन की एक ऐसी रात थी
जिसने मेरे जीवन की दिशा बदल दी और मैं साधना के
क्षेत्र में प्रवेश कर गया ।
उस दीपावली की रात .....
नीले रंग की रोशनी का एक गोला मेरी चारपाई के पास
नजर आया, जिसमें लगभग 1 फुट की मानव आकृति
दिखाई दे रही थी ।
कुछ ही क्षणों में वह आकृति धीरे धीरे बडी हुई और
मुझे अपने घेरे में ले लिया .....
उसके बाद मैं एक अजीब सी शांति और समाधि जैसी
अवस्था में चला गया .....

जब मेरी आंखें खुली तो मैं श्मशान घाट में पडा था ?

वहां मुझे अपने बड़े गुरु भाई डोम बाबा मिले और मेरी साधनात्मक यात्रा प्रारंभ हो गई ।

यह सारी कहानी विस्तार से आप मेरी पहली रचना तांत्रिक अघोरानंद में पढ़ सकते हैं । जो कि प्रतिलिपि पर उपलब्ध है ।

इसके बाद विभिन्न प्रकार की साधनायें और चित्र विचित्र प्रकार की घटनाएं जीवन में होती रही और समय आगे की ओर बढ़ता रहा ।

डोम बाबा से मुलाक़ात

वह मंगलवार की शाम थी, जब मैं मसान घाट में डोम बाबा से मिलने के लिए पहुंचा !

उस समय लगभग सात बजे का समय रहा होगा ।

डोम बाबा अपने कार्यों से निवृत्त होकर नदी में डुबकी लगाकर बाहर निकल रहे थे । मुझे देखते ही वह प्रसन्न हो गए और अपनी झोपड़ी की ओर चलने का इशारा किया ।

मैं उनकी झोपड़ी की ओर बढ़ गया । स्नान करने के बाद भी संध्या तथा विभिन्न प्रकार की अन्य क्रियाएं संपन्न करने के बाद ही वे झोपड़ी में पहुंचेंगे यह मुझे मालूम था । इसलिए मैं वहां उनका इंतजार करते हुए बैठा था । मसान के एक कोने में उनकी झोपड़ी थी । झोपड़ी में बहुत ज्यादा सामान नहीं था । एक चार पाई थी एक चूल्हा था और कुछ जरूरत की चीजें .....

बस इतना ही .....

निर्लिप्त और निष्पृह होना किसे कहते हैं यह मैंने उन्हीं से सीखा .....

अघोरी श्मशान में रहते हैं .....

क्योंकि वही एकमात्र ऐसा स्थान है जहां पहुंचने के बाद गृहस्थ के मन में भी भले ही कुछ क्षण के लिए ही हो ! वैराग्य का भाव अवश्य जागृत होता है , यानी एक ऐसा स्थान जहां पहुंचने के बाद पूर्ण भोगी भी क्षणिक रूप से योगी का स्वरूप धारण कर लेता है.....

ऐसे श्मशान मे अघोरी रहते हैं अपने आराध्य भगवान शिव अघोरेश्वर महादेव के सानिध्य में !

और वही पाए जाते हैं ....

मेरे अग्रज गुरु भाई डोम बाबा जैसे अद्भुत और विलक्षण अघोरी साधक !

दीन दुनिया से बेखबर !

अपनी ही दुनिया में मस्त !!

असंभव को संभव बना देने की क्षमता से युक्त !!

जिनके संकेत पर प्रकृति भी नृत्य करती है ।

ऐसे डोम बाबा के सानिध्य में मैंने अपनी साधनाओं की शुरुआत की थी, उन्होंने मुझे उंगली पकड़कर साधना के रास्ते पर चलना सिखाया था । मैं उन्हीं के साथ आगे बढ़ता रहा और गुरु कृपा से कई ऐसी साधनाओं को संपन्न कर पाया जोकि अद्भुत थी !

लगभग आधे घंटे के इंतजार के बाद डोम बाबा झोपड़ी में पधारे और जैसा कि सामान्य प्रक्रम था मैंने चरण स्पर्श किया और उन्होंने मुझे गले लगाया और फिर बातचीत का क्रम प्रारंभ हो गया ।

ऐसे ही बातचीत के दौरान ही वह मुझे साधनाओं के गूढ़ रहस्यों से परिचित कराते थे और कई प्रकार गोपनीय और दुर्लभ साधना विधियाँ भी बताते थे । जिसका अनमोल खजाना उनके अंदर भरा पड़ा था .....

इसी प्रकार के गूढ़ रहस्यों को वे एक-एक करके खोलते जा रहे थे और मैं उस ज्ञान के महासागर में डुबकियाँ लगाता हुआ बैठा था ।

समय कैसे गुजरा पता नहीं चला .....

तभी अचानक.....

डोम बाबा मौन हो गए !

प्रेम का सूत्र

ऐसा कई बार होता था कि वह बातचीत करते करते या कोई चीज बताते बताते अचानक मौन हो जाते थे !

कुछ क्षणों तक उसी प्रकार मौन रहने के बाद फिर इस प्रकार से बातचीत चालू कर देते थे जैसे कुछ हुआ ही ना हो !

उस दिन भी ऐसा ही कुछ हो रहा था । मुझे भी इसकी आदत हो चुकी थी ।

पहले मैंने एक दो बार पूछने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने इसके बारे में कुछ भी नहीं बताया इसलिए मैंने पूछना छोड़ दिया था ।

मैं इंतजार कर रहा था कि वह वापस कब सामान्य होंगे और फिर बात को आगे बढ़ाएंगे ।

तभी.....

मैंने अपनी घड़ी देखी और मुझे पता चला कि अरे यह तो रात के बारह बजे का समय हो रहा है .....

यानी हम लोग लगभग चार-पांच घंटे से बैठकर बातचीत कर रहे थे ।

उस प्रवाह में समय का पता ही नहीं चला .....

लगभग 10 मिनट का समय बीत गया होगा !

बाबा की आंखें अभी भी मुँदी हुई थी !

उनके चेहरे से तेज टपक रहा था !

झोपड़ी के अंदर की टिमटिमाती हुई लालटेन की रोशनी में उनके चेहरे का तेज देखने लायक था .....

तभी.....

उन्होंने अपनी आंखें खोली !

उनकी आंखें नम थी.....

यह मेरे लिए एक आश्चर्यजनक घटना थी , क्योंकि उस महामानव को मैंने कभी भी दुखी होते हुए नहीं देखा था ! उनकी आंखों में नमी देखना वास्तव में एक बिल्कुल नई चीज थी ।

वह मुझे देखते रहे और उसके बाद बोले - वह आ रही है !

मुझे कुछ समझ में नहीं आया इसलिए मैंने पूछा - कौन ?

बाबा बोले - विनोदिनी !

यह एक नया नाम था जिसके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था ।

बाबा नाम लेकर चुप हो गए थे और मैं उनके आगे कुछ बोलने का इंतजार कर रहा था ....

वे थोड़ी देर और शांत बैठे रहे....

संभवतः अपने आप को नियंत्रित कर रहे थे और फिर बोले - वत्स अघोरानंद ! जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है प्रेम !

यह सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया !
क्योंकि मेरे लिए भी प्रेम का मतलब सामान्य लोगों के जैसे स्त्री और पुरुष के बीच का शारीरिक संबंध ही था ....
और उससे ऊपर उठने की संभावना वाली उस समय मेरी अवस्था नहीं थी ।
यौवन में कोई वैसे भी उसके अलावा कुछ ज्यादा सोचता भी नहीं है..... यह तो आप भी जानते हैं !

डोम बाबा जैसे अपरिग्रही व्यक्ति के मुख से प्रेम के संबंध में सुनना बिल्कुल वैसा ही था जैसे आग के बीच में एक पानी की बूंद सुरक्षित पडी हुई हो .....
वे आगे बोले - तुझे आश्चर्य हो रहा होगा !
जब गुरुदेव ने मुझसे यह कहा था, तब मुझे भी आश्चर्य हुआ था !
उन्होंने कहा था कि जब हृदय सरोवर में सहज प्रेम का कमल खिलता है ....

तो जीवन मे बसंत आ जाता है.....

हवा मानो गुनगुनाने लगती है !

नदियां चलते हुए सुमधुर संगीत बिखरने लगती है ....

और खिलखिलाहट के हजारों लाखों फूल जैसे हमारे आस पास महकने लग जाते हैं !!

इतना कहकर बाबा कुछ क्षण को मौन हुए फिर बोले - वत्स !

यह एक अकाट्य सत्य है कि जीवन का अर्थ वही समझ सकता है जिसके अंदर प्रेम का जागरण हुआ हो !

प्रेम तो वास्तव मे एक नृत्य है !

महा नृत्य है !! नटराज का .....

महारास है !!! उस लीलाधार कृष्ण का .....

प्रेम तो अपूर्व सफलता है !!!!

परम सिद्धि है !!!!

और ब्रह्म में से पूर्णत: साक्षात्कार करने की प्रक्रिया है.....

मैं आंखें फाड़ कर प्रेम की इस नई परिभाषा को समझने और जानने की कोशिश कर रहा था .....

वह भी उस व्यक्ति के मुंह से जो जीवन के अंतिम छोर को स्पर्श करने वाली जगह ..... श्मशान में..... मानव देह को पंचतत्व में विलीन होने के लिए उसे अग्नि को समर्पित करता है....
जो वैराग्य की भावभूमि पर खड़ा है.....
जो संसार की नजरों में सामान्य भावना वाला है ही नहीं ...
ऐसा व्यक्ति प्रेम के विषय मे बोले तो आश्चर्यचकित होना बेहद स्वाभाविक था ।

प्रेम के विषय में बहुत कम कहा गया है, और खास तौर से अध्यात्म के क्षेत्र में इस विषय पर ज्यादा बातचीत करना भी गलत माना जाता है । दरअसल हमने प्रेम के मूल अर्थ को भुला दिया है और उसे शारीरिक लगाव के रूप में स्वीकार कर लिया है । प्रेम मे शारीरिक संबंध की कोई विशेष अनिवार्यता नहीं होती । जब भी हम प्रेम की बात करते हैं तो हमारे मानस पटल पर राधा कृष्ण का नाम ही आता है। जोकि पति पत्नी नहीं थे और एक दूसरे से काफी दूर थे .....

लेकिन मानसिक रूप से, भावनात्मक रूप से और प्रेम से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए थे ।

जब हम प्रेम की बात करते हैं तो मीरा का नाम आता है .....
जो भगवान कृष्ण के प्रेम में इतनी लीन हो गई कि उसने अपना घर बार राजपाट सब कुछ त्याग दिया और गलियों में निकल पड़ी.....
एक ऐसे प्रेमी के लिए जो शारीरिक रूप से तो कई हजारों वर्ष पहले इस भूमि का त्याग कर चुका था .....
लेकिन फिर भी उसने प्रेम की परिभाषा को एक नए सिरे से गढ़ा, और वर्तमान समय में जब भी प्रेम का नाम लिया जाएगा तो, संभवतः मीरा का नाम भी उस लीलाधर के साथ, उसकी प्रेमिका के रूप में अवश्य जोड़ा जाएगा .....
खैर.....
मैं समझ गया कि जीवन का एक नया रहस्य आज उन के माध्यम से मेरे सामने उजागर होने वाला है और मैं थोड़ी और सावधानी के साथ बैठ गया । तभी उन्होंने

कहा - आधी रात से ज्यादा हो गई है तुझे घर नहीं जाना क्या ?

साथ रहते रहते मुझे थोड़ी बहुत समझ तो आ ही गई थी और मैं साफ-साफ समझ गया कि यह मुझे टरकाने की कोशिश कर रहे हैं .....

और मैं वहां से इतनी आसानी से हिलने वाला तो नहीं था ।

इसलिए मैं बोला - बाबा, अब रात तो हो ही गई है । अब क्या घर जाऊंगा ..... अब सीधे सुबह ही घर जाऊंगा । जब आपने प्रेम के विषय में इतना कुछ कह दिया है तो और भी कुछ बताइए .....

और यह भी तो बताइए कि यह विनोदिनी कौन है ?

बाबा कुछ देर मौन रहे और उसके बाद उन्होंने मेरी आंखों में झांका .....

सामान्य अवस्था में उनको देखकर कुछ भी महसूस नहीं होता ..... लेकिन जब वह इस प्रकार से आंखों में आंखें डाल कर देखते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे एक्सरे की किरणें उनकी आंखों से निकलकर मेरी आंखों में समा रही हो .....

मेरे अंदर के हर सच और झूठ को बड़ी ही सफाई से पकड़ ले रही हो .....

ठीक वैसे ही जैसे एक्सरे की मशीन शरीर के अंदर की कमियों को .....

टूटी हुई हड्डियों को ..... शरीर के बाहर से ही देख लेती है .....

कुछ कुछ वैसी ही थी उनकी नजरें !

बेहद तेज !!

ऐसा प्रतीत होता था जैसे उनकी आंखों से ऊर्जा का प्रवाह निकल रहा हो जो मेरी तरफ बढ़ रहा हो !!!

यह स्थिति कुछ मिनटों तक रही होगी और फिर उनका चेहरा सामान्य हो गया ।

उन्होंने आंखें बंद की शायद यह तय कर रहे हो कि इसे बताना है या नहीं बताना है और फिर कुछ क्षणों के बाद उन्होंने आंखें खोल दी .....

अब उनके चेहरे पर वही हल्की सी मुस्कुराहट थी जो उनकी विशेषता थी ।

डोम बाबा : रहस्यमय जीवन गाथा

यह डोम बाबा के जीवन की कहानी थी । एक ऐसी कहानी जो शायद उनके अलावा बहुत कम लोगों को मालूम होगी .....
और वह उसे खोलने वाले थे ।

श्मशान में लोगों की चिता का दाह संपन्न करने वाले उस व्यक्ति के विषय में जानने लायक इतना कुछ होगा ऐसा मैंने कभी जीवन में नहीं सोचा था ।

डोम बाबा ने बताना प्रारंभ किया - मेरा नाम मनोहर विद्याधर आप्टे था । मेरा जन्म महाबलेश्वर में हुआ था । महाबलेश्वर महाराष्ट्र राज्य का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है जहां पर कई प्राचीन मंदिर भी मौजूद है । पहाड़ों की फैली हुई ऊंची ऊँची चोटियाँ, गहराई देखने पर भय उत्पन्न कर देने वाली विशाल घाटियाँ ! हर तरफ फैली हुई अनंत हरियाली जिनको देखकर ऐसा लगता है, जैसे प्रकृति ने हरे रंग की चादर हर ओर बिछा रखी हो । साल भर सुहावना रहने वाला मौसम और बहती हुई मंद

मंद मनमोहक हवा से ओतप्रोत एक अद्भुत शिव स्थान है..... महाबलेश्वर ।

वही उन हरी-भरी पहाड़ियों के बीच में बना हुआ है, भगवान शिव का एक अद्भुत मंदिर ! जिसके भीतरी भाग में स्थापित है स्वयंभू लिंगम !! जिन्हें महालिंगम कहा जाता है।

स्वयंभू का तात्पर्य होता है, जो अपने आप उत्पन्न या प्रकट हुआ हो । इस प्रकार के शिवलिंग को विशेष प्रभावशाली और साक्षात भगवान शिव का प्रतीक माना जाता है । इस शिवलिंग की विशेषता यह है कि यह शिव लिंग रुद्राक्ष के जैसा दिखाई देता है ।

उन्हीं शिवमय पहाड़ियों पर स्थित एक गांव में मेरा जन्म हुआ था ।

मैं अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था । जो काफी मनौतीयों के बाद विवाह के 21 वर्ष के बाद हुआ था । इस वजह से मेरा बचपन बहुत लाड़ प्यार में गुजरा ।

बाद में मेरे पिता ने मुझे पढ़ने के लिए मुंबई भेजा । वहां मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की । मुझे होम्योपैथी में रुचि

थी इसलिए मैंने होम्योपैथी का डिप्लोमा किया और मुंबई में ही प्रैक्टिस शुरू कर दी ।

डोम बाबा थोड़ा रुके और बोले - तूने कुछ खाया नहीं । तू भूखा होगा । बोल क्या खाएगा ?

मेरे लिए वे बड़े भाई के समान थे । इसलिए मैं निसंकोच उनसे कुछ भी मांग लेता था । मुझे पता था कि वह इतने सिद्ध है कि हवा में कोई भी चीज प्राप्त कर सकते हैं ...

इसलिए मैंने बेझिझक कहा - आलू का पराठा और खोए की जलेबी ।

इतना कहते तक मेरे मुंह में पानी आ चुका था, क्योंकि यह दोनों ही चीजें मेरी पसंदीदा चीजें थी ।

सुनकर बाबा ठठा कर हंस दिए और बोले - ठीक है, मैं इंतजाम करता हूं ।

उन्होंने मुझे आंखें बंद करने के लिए कहा और जैसा कि होता था मंत्रोच्चार की आवाजें आने लगी । कुछ समय के बाद पायल की झंकार सुनाई देने लगी.....

जैसे कोई स्त्री अंदर की ओर आ रही हो.....

फिर कुछ समय के बाद वही आवाज बाहर की ओर जाती हुई भी सुनाई दी .....

फिर शांति छा गई !
बाबा का मंत्र उच्चार बंद हो चुका था और उन्होंने तीन बार ताली बजाई और बोले - बच्चा , अब खोल ले आंखें और खा ले अपनी पसंद की चीज .....

मैंने फटाक से अपनी आँखें खोल दी.....
मेरे सामने एक पत्तल में तीन आलू के पराठे रखे हुए थे और साथ में रखी थी चटनी....
दूसरे पत्तल में मोटे मोटे काले काले खोये के बने हुए जलेबी के चार पीस रखे हुए थे .....
मैंने बाबा की तरफ देखा , क्योंकि उनके सामने कुछ भी नहीं रखा था ।

मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उनकी तरफ देखा तो बोले - अघोरानंद ! तू खा ले.... आज मेरा मन नहीं है ।
फिर क्या था मैं परांठों पर टूट पड़ा और 10 मिनट में पराठे मेरे पेट के अंदर पहुंच चुके थे और साथ ही जा चुके थे खोए के बने हुए शानदार जलेबी के चारों पीस .....
उतने स्वादिष्ट पराठे मैंने फिर कभी जीवन में नहीं खाएं और ना ही वैसी खोवे की जलेबियां .....

उनका स्वाद ही अलग था ।

पेट भर चुका था मैं पत्तलों को लेकर बाहर निकला । उन्हे एक तरफ फेंककर नदी की ओर बढ़ गया ... नदी में पहुंचकर मैंने हाथ मुंह धोया, आंख और सर पर थोड़ा पानी छिड़का ताकि नींद ना आए और फिर वापस झोपड़ी में आ गया ।

झोपड़ी मे आकर फिर बाबा के सामने बैठ गया और उन्होंने अपनी कहानी को आगे बढ़ाया ।

गुरु दर्शन

डोम बाबा बोले - एक दिन जब मैं अपने बिस्तर मे बैठा हुआ था ....

तभी.....

अचानक.....

बैठे-बैठे मेरा ध्यान लगने लगा और मुझे एक गेरुआ वस्त्र धारी साधु के दर्शन हुए !

उन्हें देखते ही मुझे ऐसा लगा .....

जैसे मैं उनको जानता हूं और मेरी आंखों से आंसू बहने लगे । लगभग दस पंद्रह सेकंड तक उनके ध्यान में दर्शन हुए थे और उस दिन पूरे समय मेरी आंखों से आंसू बहते रहे .....

मैं एक अलग ही आनंद की अवस्था में चला गया था ऐसा लग रहा था जैसे मुझे कुछ मिल गया हो .....

क्या मिला यह मुझे नहीं मालूम था.....

लेकिन जैसे कोई मनचाही चीज मिल जाने से ह्रदय में आनंद की अनुभूति पैदा हो जाती है ठीक वैसा ही मेरे साथ हो रहा था और मैं उस अनुभूति के साथ दिनभर मंत्रमुग्ध अवस्था में रहा ...

फिर ऐसा बार-बार होने लगा !

अब मुझे उस सन्यासी के चेहरे का पूरा भान हो गया था !!

एक दिन जब मैं जुहू बीच पर खड़ा था तभी मेरी नजर एक सफेद धोती कुर्ता धारी व्यक्ति के ऊपर पड़ी ..... जो 8-10 लोगों के साथ वहां खड़ा हुआ था । उस व्यक्ति का चेहरा मुझे स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था लेकिन आसपास खड़े हुए लोगों की हरकत और उनकी वेशभूषा से ऐसा लग रहा था कि वह कोई आध्यात्मिक संत है। जैसा कि हमारी परंपरा रही है जहां भी हमें कोई साधु या संत दिखाई देता है तो हम कोशिश करते हैं कि उसका आशीर्वाद ले ले और मैंने भी उसी भावना के वशीभूत होकर उनकी तरफ अपने कदम बढ़ा दिए ।

जब मैं उनके पास पहुंचा तो उनके चेहरे को देखकर मैं अवाक रह गया !

स्तंभित हो गया !

बिल्कुल चित्र लिखित सा हो गया !

उसी अवस्था में मैं उनको देखता हुआ खड़ा रह गया ....

अरे ! यह चेहरा तो साक्षात उसी सन्यासी के जैसे दिख रहा था....

जिसे मैं अपने ध्यान की अवस्था में देखता था .....

मैं आंखें फाड़ फाड़ कर उन्हें देख रहा था.....

बिल्कुल हूबहू वही व्यक्ति !

बिल्कुल हूबहू वही चेहरा !!

सिर्फ वस्त्र के रंग में फर्क था ....

मुझे ध्यान में साधू बाबा भगवे वस्त्र में दिखाई देते थे !

उनका कमर के ऊपर का हिस्सा खुला रहता था !

गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी रहती थी !

सिर पर जटायें भी दिखाई देती थी .....

लेकिन जो संत मेरे सामने खड़े थे , वह सफेद वस्त्र में थे,

उनके चेहरे पर दाढ़ी मूछ नहीं थी ।

बिल्कुल क्लीन शेव !

समानता केवल यही थी कि उस सन्यासी के गले में मोटे मोटे रुद्राक्ष के दानों की माला रहती थी और इनके गले में पतले बारीक रुद्राक्ष के दानों वाली एक माला पड़ी हुई थी जिसके मनके सोने की कैप से ढके हुए थे ।

और तभी....

उनकी नजर मुझ पर पड़ी !

उन्होंने कहा - आ गया बेटा ।

उनके इतना कहते ही न जाने कैसे मेरी आंखों से अश्रु का प्रवाह फूट पड़ा !

मैं सुबक -सुबक कर रोने लगा और उनके चरणों में लिपट गया ।

मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मेरे साथ क्या हो रहा है ....

लेकिन मैं उनके चरणों को पकड़ कर दँडवत लेटा हुआ था और उनके दाहिने पांव का अंगूठा मेरे माथे के बीच वाले भाग को जहां आज्ञा चक्र की उपस्थिति मानी जाती है .....

वहां स्पर्श कर रहा था !

वे उस अंगूठे को बार-बार ऊपर नीचे कर रहे थे ऐसा उन्होंने लगभग तीन बार किया ! तीसरी बार जब उन्होंने अपने पैर के अंगूठे से मेरे माथे को स्पर्श किया तो मैं फिर से ध्यानस्थ अवस्था में चला गया ....

यह थी गुरुदेव से मेरी पहली मुलाक़ात .....

वह लगभग शाम के चार या साढ़े चार बजे का समय रहा होगा जब यह घटना घटित हुई ....

मैं एक अनंत शून्य की अवस्था में चला गया । जैसे किसी समय यात्रा पर निकल गया हूं ....
जैसे समय का प्रवाह मेरे सामने से हो कर गुजर रहा था.....
और मैं अपने कई जन्मों को देख रहा था !
जिनमें अलग-अलग प्रकार के वेशभूषा में मैं मौजूद था !
एक चीज सबमे कॉमन थी और वह थी सन्यास स्वरूप वाली वह गुरुदेव की छवि .....

सबसे अंत में जो छवि मुझे दिखाई दी ..... उसमें गुरुदेव अपने सन्यासी स्वरूप में आगे आगे चल रहे थे और उनके पीछे लंगोट लगाकर मैं चला जा रहा था .....
संभवतः हिमालय की तराई का कोई स्थान था !
जहां चारों तरफ बर्फ ही बर्फ बिखरी हुई थी और उस पर गुरुदेव तीव्र गति से आगे की ओर बढ़ रहे थे और उनके पीछे पीछे मैं लगभग दौड़ता हुआ जा रहा था ....
इतनी ठंड में भी लंगोट पहन कर अपने आपको देखना शरीर में झुनझुनी पैदा कर गया .....

लेकिन मैं उसी प्रकार से उनके साथ आगे की ओर बढ़ता गया और तभी सामने देवाधिदेव महादेव का स्वर्णिम शिखर से मंडित कैलाश पर्वत दिखाई दिया !

सूर्य की किरणें उस अद्भुत दिव्य और चमत्कारिक पर्वत शिखर के ऊपर जैसे स्वर्ण का मुकुट पहना रही थी ठीक वैसे ही स्वर्णिम चमक उस शिखर के ऊपर दिखाई दे रही थी !

वास्तव में अद्भुत है कैलाश पर्वत .....

गुरुदेव ने झुककर प्रणाम किया और मैंने भी उनकी देखा देखी झुककर प्रणाम किया और उसके बाद एक सफेद दिव्य प्रकाश वहां छाने लगा और मैंने अपने आप को उस प्रकाश में लुप्त होते हुए देखा .....

उसके बाद मैं समय की सीमा से शायद बाहर चला गया था और मुझे समय का कुछ पता ही नहीं चला मैं वहीं रेत पर पड़ा रहा .....

विनोदिनी से पहली मुलाक़ात

रात लगभग 8:30 बजे किसी ने मुझे जगाया ....

लेकिन मैं जिस अवस्था में था उस अवस्था में मुझे आंखें खोलने की इच्छा ही नहीं हो रही थी ....

तभी मेरे कानों में एक मीठी सी आवाज गूंजी और चेहरे पर पानी के छींटे पड़े ...

मेरी आंखें खुल गई !

मैंने देखा एक युवती मेरे चेहरे पर पानी के छींटे मार रही थी !

थोड़ी देर में मैं चैतन्य हो गया और उस युवती को धन्यवाद दिया !

उसने पूछा - क्या हो गया तुम जमीन पर क्यों पड़े हुए थे ? ज्यादा दारु पी ली है क्या ?

अब मैं उसे क्या बताता कि मैंने क्या पी है और मेरे साथ क्या हुआ है ! क्योंकि वह तो मुझे भी नहीं पता था कि मेरे साथ क्या हुआ है ।

हां ! लेकिन गुरुदेव के उस स्पर्श ने मुझे आत्मसाक्षात्कार करा दिया था । मैं समझ गया था कि मैं किसी विशेष उद्देश्य से इस पृथ्वी पर पैदा हुआ हूं ...

और उसके लिए मुझे कुछ विशेष प्रयास करने भी होंगे ।

मेरे मौन को उस युवती ने मेरे दारु पीने की सहमति मान लिया । उसे उतारने के लिए पास में ठेले से नींबू पानी ले आई और मुझे पिला दिया ।
ना चाहते हुए भी उसके चेहरे के भाव और आग्रह को देखते हुए मुझे वह पीना पड़ा । उसे पी लेने के बाद मुझे काफी अच्छा भी लगा ...
तब मैंने पहली बार उसकी तरफ देखा .... यूं कहिए गौर से देखा .....

वह हल्के सांवले रंग की लगभग 20 वर्षीय युवती थी, जो शायद वही भेल बेचने का काम करती थी । उसने एक गहरे नीले रंग का ब्लाउज पहना हुआ था । नीचे रंग बिरंगा लहंगा था । पास ही रखा हुआ था उसका भेल का टोकरा । कपड़े काफी घिस चुके थे । जो उसकी आर्थिक स्थिति बयां कर रहे थे ।
जो भी हो उसने बिना किसी पहचान के मेरी सहायता की थी, इसलिए मैं उसका आभारी था ।

मैंने उसको हाथ जोड़कर धन्यवाद दिया और नींबू पानी के पैसे दिए...

जिसे उसने थोड़ी नानुकुर के बाद स्वीकार कर लिया ।

यह थी विनोदिनी से मेरी पहली मुलाक़ात...

समय आगे चलता रहा और उससे महीने दो महीने में एक बार मुलाकात हो जाती थी !

यूं समझ लीजिए कि दोस्ती हो गई थी ।

होमियोपेथिक क्लीनिक

उस समय मेरी आयु करीब 22-23 वर्ष की रही होगी । कुछ समय के बाद जब मेरा क्लीनिक अच्छा चलने लगा, तो मैंने माता-पिता को भी अपने पास बुला लिया ।

महाबलेश्वर के शुद्ध सात्विक वातावरण में रहने वाले मेरे माता-पिता को शायद मुंबई की प्रदूषित हवा रास नहीं आई..... कुछ दिनों के बाद वे बीमार रहने लगे ।

यह भी संभव है कि उम्र अधिक हो जाने की वजह से ऐसा हो ...

लेकिन मुझे ऐसा लगता रहा कि जैसे मैंने उन्हें उनकी जड़ों यानि गाँव से हटाकर शहर में लगा दिया था .... इसलिए वे उसके साथ एडजस्ट नहीं हो पाए .....

बार-बार आने वाली बीमारी के चलते लगभग साल भर बाद वे वापस गांव लौट गए । मैंने भी मना नहीं किया क्योंकि उनको स्वस्थ और सुरक्षित देखना मेरा भी मनोभाव था ।

जब वह चले गए तो मैं वापस अकेला हो गया । तीन चार महीने मे एक बार हफ्ते भर के लिए मैं उनसे मिलने चला जाता था ।

इधर मेरा होम्योपैथी क्लीनिक भी अब काफी अच्छा सेट हो गया था । लोगों का मुझ पर विश्वास भी जमने लगा था ।

होम्योपैथी चिकित्सा की एक ऐसी विधा है जिसमें मीठी गोलियों में दवा बनाकर दी जाती है । अधिकांश लोग इसके ऊपर विश्वास नहीं करते हैं ।
हां ! बच्चों को यह बहुत पसंद आती है क्योंकि उन्हें कड़वी दवाइयां नहीं खानी पड़ती ।

डा हैनिमैन द्वारा प्रवर्तित होमियोपैथी का मूल सिद्धांत है - "सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटर" ("Similia Similibus Curentur" or 'let likes be treated by likes' या " सम: समम शमयति ")
इस नियम के अनुसार जिस औषधि की अधिक मात्रा स्वस्थ शरीर में जो विकार पैदा करती है, उसी औषधि की लघु मात्रा वैसे समलक्षण वाले प्राकृतिक लक्षणों को नष्ट भी करती है ।
कच्चे प्याज काटने पर जो लक्षण उभरते हैं जैसे नाक, आँख से पानी निकलना उसी प्रकार के जुकाम या

एलर्जी जैसी स्थिति में होम्योपैथिक औषधि ऐलीयम सीपा (जो प्याज से बनती है) देने से लाभ हो जाता है ।

होम्योपैथि की दवाई अपना असर दिखाने में दो-तीन महीने का समय लेती है । फिर उसका असर दिखना चालू हो जाता है और समस्या का समाधान होने लगता है .....

लेकिन आमतौर पर लोग इतनी देर तक इंतजार नहीं करते !

महीने डेढ़ महीने के बाद ही दवाई लेना बंद कर देते हैं या होम्योपैथी को कोसना चालू कर देते हैं ..... उसके बाद एलोपैथी या फिर आयुर्वेद की ओर बढ़ जाते हैं । होम्योपैथी का सबसे ज्यादा प्रचलन बंगाल और केरल में है ।

महाराष्ट्र इस मामले में बहुत ज्यादा होम्योपैथि के फ़ेवर वाला स्थान नहीं था । उसके बावजूद गुरुदेव की कृपा से मेरी दवाइयां बड़ी जल्दी असर कर जाती थी और लोगों की समस्याओं का समाधान होने लगता था ।

कई ऐसे रोगी जो कई कई सालों से चर्म रोग या वैसे ही समस्याओं से ग्रस्त थे उनको मैंने 6 महीने से साल भर के अंदर पूर्ण स्वस्थ कर दिया था ।

किसी भी चीज की सबसे बढ़िया पब्लिसिटी होती है माउथ पब्लिसिटी अर्थात एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति को दी गई जानकारी । डॉक्टरों के मामले में भी ऐसा ही है हम उसी डॉक्टर के पास जाना पसंद करते हैं जिसके बारे में हमारे किसी पहचान वाले ने अच्छा कहा हो । मेरे पास आने वाले रोगी भी अपने जैसे रोगियों को मेरी तारीफ करते और इस प्रकार से धीरे-धीरे मेरे पास रोगियों की संख्या बढ़ने लगी थी और मेरी प्रेक्टिस अच्छी चलने लगी ।

गणेश भगवान का आगमन

गुरुदेव से मुलाकात के बाद मेरा जीवन बदल चुका था । जहां मेरा क्लीनिक बहुत अच्छे से चल रहा था और रोगी जल्दी ठीक हो रहे थे ... वही सुबह तीन बजे मेरी नींद अपने आप खुल जाती थी और उसके बाद मेरा ध्यान और साधना का क्रम चालू हो जाता जो लगभग 5:30 बजे तक चलता था ।

ध्यान के दौरान मुझे एक बीज मंत्र का गुंजरण लगातार सुनाई देता और गणेश भगवान की एक विचित्र सी काले रंग की आकृति भी दिखाई देती रहती ....

उसी गुंजरण के साथ मैं भी गुंजरण करता रहता ।

जब मैं इस प्रकार से गुंजरण करता तो मूलाधार चक्र वाले स्थान अर्थात गुदा और लिंग के बीच वाले स्थान में सरसराहट सी महसूस होती रहती । कई बार गहरी पीड़ा का आभास भी होता और मेरा ध्यान टूट जाता ।

यह पीड़ा बिल्कुल वैसी ही होती थी जैसे उस स्थान को कोई पकड़ कर निचोड़ रहा हो ....

बेहद पीड़ा दायक अनुभव होता था ।

जब भी इस प्रकार की पीड़ा होती तो कई बार मैं सोचता कि अब ध्यान लगाने के लिए नहीं बैठूंगा....

लेकिन वह जैसे कोई ऑटोमेटिक सिस्टम था ...
सुबह तीन बजे अपने आप मेरी नींद खुल जाती और उसके बाद स्वत: ही मैं ध्यान लगाने के लिए बैठ जाता ।
मैं सोचने लगा कि.....
ऐसा कैसे हो सकता है ?
वह मेरी जिज्ञासा को भाप गए और बोले - दरअसल हम सभी पूर्व जन्म में भी साधक थे !
इस जन्म में हमसे हमारी पहचान छूट गई, जिसके चलते हम अपने आप को गृहस्थ समझने लगते हैं ।
साधना करने से बचने की कोशिश करते हैं....
लेकिन गुरु बराबर नजर बनाए रखता है.....
कभी प्यार से तो कभी क्रोध से.....
साधना के क्षेत्र में निरंतर अग्रसर करता रहता है ।
वही मेरे साथ हो रहा था ।
गुरु जी से मुलाकात को लगभग छह महीने का समय हो चुका था .....
जब मुझे समय मिलता है मैं जुहू बीच अवश्य जाता इस उम्मीद में कि हो सकता है गुरुदेव से फिर मुलाकात हो जाए.....

लेकिन मुलाकात नहीं हुई ।

एक दिन बातचीत के प्रक्रम में विनोदिनी से मैंने उस दिन की घटना का जिक्र किया, जब मेरे गुरुदेव से मुलाकात हुई थी और उसके पहले आने वाले सपनों के बारे में भी मैंने उसे बताया । यह सब सुनकर वह आश्चर्य में पड़ गई .....

उसे लगा कि मैं कोई कहानी बना रहा हूं लेकिन मेरे हाव भाव देखकर उसे पता चल गया कि मैं सच कह रहा था ।

विनोदिनी बोली - ओहो ! तो तू जोगी है ..... वाह !

उस दिन से वह मुझे जोगी बुलाने लगी ....

हम हाथ पकड़ कर उसी प्रकार जुहू बीच पर बैठे रहते । कई बार घंटो बीत जाते और हम यूं ही गप्पें मारते बैठे रहते.....

वह मुझे अपने हाथ से भेल बना कर खिलाती .... और मैं उसे कुल्फी खिलाता !

यह हमारा एक दूसरे को दोस्ती या प्रेम जो भी था वह जताने का तरीका था....

मेरी ध्यान की प्रक्रिया भी नियमित रूप से जारी थी ...
इस दौरान एक खास बात यह हुई कि अब ध्यान में गुरु जी के दर्शन नहीं होते थे । उनके स्थान पर अब एक विचित्र किस्म के गणेश भगवान के दर्शन होते थे ।
जिस प्रकार के गणेश भगवान के मुझे दर्शन होते थे उनके मस्तक पर भगवान शिव के समान ही चन्द्रमा विराजमान थे ।
वे गणपती चार भुजाओं एवं तीन नेत्रों से युक्त थे.....
उनके शरीर का वर्ण रक्त के समान गाढ़ा लाल था.....
वे स्वयं विशालकाय थे और वैसे ही विशालकाय कमल पर विराजमान थे .....
उनके दाहिने हाथों में अङ्कुश एवं मोदक से भरा हुआ पात्र था .....
जिसे वे अपनी सूंड से उठाकर खा रहे थे ....
उनके बायें हाथों में एक रस्सी जैसा पाश था एवं लगभग चार फीट लंबा उनका टूटा हुआ दाँत पकड़ा हुआ था ।
इस प्रकार के गणपति के विषय में मैंने कभी नहीं सुना था इसलिए मैंने डोम बाबा से पूछा - यह कैसे गणपति हैं बाबा ।

वे बोले - यह गणेश भगवान का तांत्रिक स्वरूप है जिसे उन्मत्त गणपति या उच्छीष्ट गणपति भी कहा जाता है ।
इतना बता कर वह मौन हो गए !
जब किसी विषय को वे खोलना नहीं चाहते थे तो शांत हो जाते थे !
ऐसी स्थिति में मैं भी समझ जाता था कि वह इस विषय पर ज्यादा नहीं बोलना चाहते तो मैं भी विषय को बदल देता और बातचीत आगे चलती रहती ।

मैंने पूछा - बाबा फिर क्या हुआ ?
डोम बाबा बोले - मेरी नित्य साधना का क्रम चल रहा था.....
वह गणेश पूजन के लगभग तीन दिन पहले की बात थी ....
यह बात तो आप लोग भी जानते होंगे कि गणेश पूजा महाराष्ट्र में बहुत ही व्यापक पैमाने पर मनाई जाती है ।
वहां लगभग हर घर में गणेश बिठाने का प्रचलन है ।
मेरे यहां भी हर वर्ष गणपति स्थापना होती थी ।

मेरी मां चाहती थी कि गणेश पूजन के समय गांव में उनके साथ रहूँ तो मैंने जाने का विचार बना लिया था .....

मैं महाबलेश्वर पहुंच गया .....

गणेश भगवान के बैठने में भी समय था तो मैंने सोचा कि आसपास घूम लेता हूं ।

घूमते घूमते मैं पंच गंगा मंदिर जा पहुंचा !

यह एक प्रसिद्ध मंदिर है । यहाँ पांच नदियों का झरना है: कोयना, वैना, सावित्री, गायित्री और पवित्र कृष्णा नदी। पंचगंगा मंदिर कृष्णा, कोयना, गायत्री, सावित्री, वैना, सरस्वती,और भागीरथी इन सात नदियों का उद्गम स्थल माना जाता है ।

इनमें से सात में से पहली पांच नदियों का प्रवाह हमेशा बारह महीने रहता है।

इसकी सबसे विचित्र बात यह है कि सरस्वती नदी का प्रवाह प्रत्येक 60 वर्षों में ही दर्शन देता है। अनुमान है कि वर्ष 2034 में इस नदी का प्रवाह पुनः दर्शन देगा ।

इसी प्रकार भागीरथी नदी का प्रवाह प्रत्येक 12 वर्षों में दर्शन देता है। यह वर्ष 2016 मे दिखा था और अब

2028 मे पुनः दिखेगा । यह मंदिर लगभग चार से पाँच हजार वर्ष पुराना माना जाता है ।

वह सन्यासी

मैं उसी मंदिर के प्रांगण में खड़ा हुआ था .....
तभी मैंने देखा कि एक लगभग पाँच फुट लंबा और दुबले पतले शरीर का स्वामी एक सन्यासी एक भीगी हुई धोती पहनकर सीढ़ियों से उतर रहा था । उसके दाहिने हाथ में एक दंड था जिस का ऊपर का हिस्सा सांप के फन की तरह था और दंड पूरा ऐंठा हुआ था.....
ठीक वैसा ही जैसे सांप का शरीर उसके चलते समय ऐंठा हुआ दिखाई देता है ।

अधिकांश सन्यासी अपने हाथ में दंड रखते हैं और उनमें से कुछ लोगों के दंड बहुत ही विचित्र प्रकार के होते हैं ।

बांस के पेड़ में कई बार इस प्रकार के विचित्र आकार के बांस भी प्राप्त हो जाते हैं जिनसे इस प्रकार के दंड बनाए जाते हैं । इन्हें भैरव मंत्र जैसे विशेष मंत्रों से अभिमंत्रित भी किया जाता है और यह दंड चमत्कारिक भी होते हैं । कई तांत्रिक भूत प्रेत बाधा इनके स्पर्श मात्र से ही दूर कर देते हैं ...

सन्यासी सीढ़ियां उतरकर मेरे सामने आया और आगे निकल गया ।

मैं उसे आश्चर्य और कौतूहल की भावना के साथ देख रहा था । उसकी वेशभूषा और उसका दंड दोनों ही मुझे न जाने क्यों आकर्षित कर रहे थे ।
लगभग पंद्रह फीट आगे निकल जाने के बाद उसने पीछे मुड़कर मेरी तरफ देखा !
उसकी आंखों में जैसे एक लपक सी थी ....
कुछ ऐसा जो मुझे अपनी ओर खींच रहा था !
जब उसकी आंखें मुझसे टकराई तो मैं उसकी ओर अपने आप खिंचता चला गया.....
मैं उसके पीछे पीछे चल पड़ा ।
मुझे पता नहीं था कि वह सन्यासी कौन है ?
वह कहां जा रहा है ?
लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि मुझे उसके पीछे पीछे चलना है ।
वह आगे बढ़ता जा रहा था और उसके पीछे पीछे मैं भी चलता जा रहा था ।

इस प्रकार से हम लोग लगभग 2 घंटे तक चलते रहे । एक छोटी पहाड़ी के बाद घना जंगल था और हम उस जंगल में घुस चुके थे ।

एक पगडंडी जैसी बनी हुई थी ! जिससे पता चलता था कि वहां शायद लोगों का आना जाना रहता होगा । इसके अलावा बड़े बड़े पेड़ों के बीच से गुजरते समय ऐसा प्रतीत होता था, जैसे हम किसी सुनसान जंगल में प्रवेश कर रहे हैं ।

सागौन के पेड़ अपने बड़े-बड़े पत्तों के साथ जंगल की शोभा बढ़ा रहे थे ।

लगभग सारे पेड़ 20 से 30 फीट ऊंचे थे । उनके बीच से सूरज की रोशनी हल्की सी छन छन कर नीचे आ रही थी .....

उस समय दोपहर का वक्त रहा होगा ।

सूरज ठीक सर के ऊपर था, लेकिन उसकी रोशनी का कुछ हिस्सा ही जंगल के अंदर प्रवेश कर पा रहा था । इससे आप उसके घनेपन का अंदाजा लगा सकते हैं ।

गुरुदेव से पुनः भेंट और अघोर दीक्षा

जंगल के अंदर करीब एक किलोमीटर चलने के बाद पानी की आवाज आने लगी.....

ऐसा लग रहा था जैसे कोई पानी का झरना पहाड़ से नीचे की ओर बह रहा हो .....

थोड़ा और आगे बढ़ने पर एक छोटा सा जलप्रपात दिखाई दिया ...

उस जलप्रपात के बगल में एक बड़े से पत्थर पर विराजमान थे गुरुदेव अखिलेश्वरानंद जी।

भगवा वस्त्र के स्थान पर उनके कमर में बाघ का चर्म बंधा हुआ था !

हाथ और गले में रुद्राक्ष की मालायेँ थी और उनके दाहिने हाथ में हड्डियों से बनी हुई एक माला थी जिससे वह मंत्र जाप कर रहे थे ।

वहां पहुंचने के बाद वह सन्यासी बाई ओर बढ़ गया और मुझे वहीं रुकने का इशारा किया ।

मैं वहीं खड़ा रहा .....

गुरुदेव के सामने हाथ जोड़े हुए....

उनकी आंखें बंद थी और वे ध्यानस्थ मुद्रा में मंत्र जाप में लीन थे । मैं उन्हें देखता हुआ मंत्रमुग्ध सा खड़ा था । मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मुझे क्या करना है ? मैं उनकी मनोहर छवि को अपने नेत्रों के माध्यम से अपने हृदय में उतारने की कोशिश कर रहा था । मुझे अपने और गुरुदेव के अलावा वहां किसी भी चीज का भान नहीं हो रहा था ....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी गहन शून्य में अपने गुरु के चरणों में बैठा हुआ हूं ।

लगभग पंद्रह मिनट तक मैं वैसे ही खड़ा रहा !

उसके बाद उन्होंने अपनी आंखें खोली और मेरी ओर देखा .....

उनकी आंखों से जैसे करुणा का सागर बह रहा था !

उन आंखों को देखकर मेरी आंखें अपने आप छलछला गई और मैंने आगे बढ़ कर उनके चरणों को पकड़ लिया और अपने आंसुओं से उनके चरणों का अभिषेक करने लगा .....

उनके चरणों का प्रक्षालन करने लगा !

वे मेरे सिर पर हाथ फेरते रहे और थोड़ी समय के बाद जब मैं शांत हुआ तो उन्होंने कहा - बेटा ! पिछले जन्म

में तुमने अनेक साधनाएं संपन्न की थी और मेरे साथ वर्षों तक रहे थे ....

अब समय आ गया है कि मैं तुम्हें अघोर दीक्षा प्रदान कर दूँ।

मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। दीक्षा मंत्र आदि के विषय में चुना अवश्य था, लेकिन अघोर दीक्षा और विशेष रूप से अघोर के विषय में मुझे भी जनसामान्य के जैसे ही जानकारी थी ....

अघोरी बड़े क्रोधी होते हैं !

नंगे घूमते हैं !!

गाली गलौज करते हैं !!!

दारु पीते रहते हैं !!!!

और चिलम के नशे में डूबे रहते हैं।

इसलिए जैसे ही उन्होंने अघोर दीक्षा की बात की.....

मेरे मन में यह सारे विचार एक साथ किसी झंझावात की तरह आए और मैं मन ही मन घबरा गया।

वे मेरे ऊहापोह को समझ गए और मुस्कुराए !

उन्होंने अपने दाहिने हाथ के अंगूठे का स्पर्श मेरे माथे पर कर दिया।

जैसे ही उनका अंगूठा मेरे माथे पर लगा मैं वहीं बैठे बैठे ध्यानस्थ हो गया .....

मेरे सामने घूमने लगा मेरा पिछला जीवन.....

एक सुरम्य घाटी .....

और उसके बीच में बैठा हुआ मैं ....

गुरुदेव के चरणों में .....

इस दृश्य में हम दोनों ही गेरुआ वस्त्र धारण किए हुए थे .....

वह मुझे किसी मंत्र का उच्चारण समझा रहे थे और मैं उसे दोहराने की कोशिश कर रहा था । उनके हाथ में एक लंबा डंडा था और हर गलती पर उस डंडे की मार मुझे मिलती थी .....

फिर दृश्य आगे बढा .....

मैं उसी स्थान पर अकेला बैठ साधना कर रहा था !

यह दृश्य जितना अद्भुत था उतना ही विचित्र भी था .....

क्योंकि इस दृश्य में मेरे सामने एक काले रंग की आकृति धीरे-धीरे स्पष्ट होती जा रही थी.....

मैं मंत्र जाप संपन्न कर रहा था !

मेरे मंत्र जाप की ध्वनि काफी ऊंचे स्वर में निकल रही थी और मैं क्रोध मुद्रा में बैठा हुआ था ।

यह मुद्रा तब प्रयोग की जाती है जब किसी उग्र साधना को करने की जरूरत होती है.....
या किसी विद्या को वशीभूत करने के लिए किसी ऐसे तांत्रिक मंत्र का प्रयोग किया जाता है जिसके साथ इस मुद्रा को प्रदर्शित करना होता है ।
कई साधना ऐसी होती हैं जिनमें मुद्रा प्रदर्शन आवश्यक होता है ! मुद्राएं हाथ की उंगलियों के द्वारा दिखाई जाती है । एक मुद्रा जो हम सभी जानते हैं वह प्रणाम की मुद्रा जिसमें हम अपने पांचों उंगलियों को दूसरे हाथ की पांचों उंगलियों के साथ जोड़कर रखते हैं ।
एक और मुद्रा है जिसे हम सभी जानते हैं वह है वर या अभय मुद्रा !
यह मुद्रा हाथ उठाकर दिखाई जाती है जिसमें हथेली सामने की ओर दिखाई देती रहती है ....
जैसा हम आशीर्वाद देते समय किसी के सर पर रखते हैं ।

मुद्राओं के प्रदर्शन से संबंधित शक्तियां ज्यादा सहजता से साधक के सामने प्रत्यक्ष हो जाती हैं या उसकी अभीष्ट सिद्धि कर देती हैं !

यह सारी बातें मुझे गुरुदेव ने बाद में बताइ ।

मुझे सिर्फ यही समझ में आया कि मैं मुट्ठी बांधकर वीरासन में बैठा हुआ था और मेरा मंत्र जाप जारी था .....

बाबा भैरवनाथ

थोड़ा सा समय और बीता और वह काली आकृति धीरे-धीरे स्पष्ट हो गई ....

वह साक्षात !

परम वंदनीय भगवान शिव के लीलाधर स्वरूप भगवान भैरवनाथ थे.....

जैसा की आप लोगों ने भी देखा होगा कि भगवान शिव ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे रहते हैं ।

वे क्रिया योगी है ....

क्रिया योगी का मतलब होता है कि ऐसा व्यक्तित्व जो अपने संकल्प या चिंतन मात्र से किसी भी घटना को अंजाम दे सकता है ।

वह जिन कार्यों को संपन्न करना चाहते हैं उनको संपन्न करने का उत्तरदायित्व भैरव का होता है । एक तरह से आप उन्हें भगवान शिव का वर्किंग हैंड समझ सकते हैं । जो भी भगवान शिव को कराना होता है वह भैरव के माध्यम से ही कराते हैं ।

इसी बात से आप उनका महत्व समझ सकते हैं ।

जो आकृति मुझे दिख रही थी उनकी लंबाई मुश्किल से साढ़े तीन या चार फीट की रही होगी ।

बेहद बलिष्ठ शरीर के स्वामी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई बॉडीबिल्डर खड़ा हो !

साथ में था काले रंग का एक कुत्ता !!

जो बेहद हट्टाकट्टा था ।

उनके हाथ में एक पात्र था जो शायद कपाल का बना हुआ था ....

उनके नेत्र बड़े बड़े थे ....

ऐसा लग रहा था जैसे उस में से खून निकल रहा हो !

वे रक्त जैसे लाल और चमकदार थे !

उन्हें देखते ही शरीर में भय का आभास होता था !

सिर में लंबी लंबी जटाएँ झूल रही थी !

जो उनके पांव के टखनों तक पहुंच रही थी !!

वे पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में थे ।

उन्हें देखते ही मुझे बड़े जोर का झटका लगा !

ऐसा लगा कि जैसे शरीर के नीचे के भाग से कोई बिजली सी सनसनाती हुई मेरुदंड में जा रही हो.....

लगभग दो तीन सेकंड तक वह स्थिति रही ....

और तभी.....

गुरुदेव ने मेरे माथे से अपना हाथ हटा लिया ...
मैं वापस सामान्य हो गया ।
उस दृश्य को देखने के बाद मुझे समझ में आ गया कि मैं गुरुदेव का शिष्य हूं, और वे जो भी करेंगे उचित ही करेंगे ।
यह विचार मन में आते ही गुरुदेव ने कहा - जा .... नहा कर आ जा ।
मैं झरने में जाकर नहा कर आ गया ।
मुझे सामने बैठकर उन्होने भैरव ध्यान प्रारम्भ किया ...
जो सन्यासी मुझे वहां लाया था वह और उसके जैसे लगभग 20-25 और सन्यासी तथा सन्यासिने वहां अचानक से प्रकट हो गई और हम दोनों को गोल घेर कर खड़े हो गए ।
संभवत: वे सारे के सारे गुरुदेव के शिष्य शिक्षाएं थे और इस पूजन को देखने के लिए या इसमें सम्मिलित होने के लिए वहां उपस्थित हुए थे ।
गुरुदेव का सिंह गर्जना जैसा स्वर गूंजने लगा ....

वं वं वं वायुवेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं ।
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपं ॥

चं चं चं चालयन्तं चल चल चलितं चालितं भूत चक्रं ।
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं नमामि ॥

.....

ध्यान का उच्चारण होते होते हवाएं तेज चलने
लगी .....

चारों तरफ के पेड़ अपने स्थान पर हिलने लगे ।
पत्तों की तेजी से सरसराने की आवाजें बढ़ने लगी और
साथ ही आने लगी.....
सियारों के चीखने की आवाजें .....

आसमान मे न जाने कहाँ से काले बादल आ गए और
सूर्य भगवान को अपनी ओट मे ले लिया .....
जो थोड़ी रोशनी पेड़ों के बीच से छनकर आ रही थी.....
वह भी और कम हो गई .....

गुरुदेव उस पत्थर से उतर कर नीचे खड़े हो गए और हाथ
जोड़कर खड़े हो गए ।

तभी .....
जोरों की आवाज हुई ...

ऐसा लगा जैसे ऊंचाई से कोई सामने उस पत्थर के ऊपर कूदा हो ।
वह पत्थर करीब करीब 10 फीट लंबा 4 फीट चौड़ा और 2 फीट ऊंचा रहा होगा ....
इतना बड़ा पत्थर ....
अपने स्थान पर कम से कम 6 इंच नीचे धंस गया होगा ।
आप उस शक्ति की शायद कल्पना कर सकते होंगे ।

सामने खड़े थे साक्षात भैरवनाथ .....
किसी अग्नि पुंज की तरह !

गुरुदेव हाथ जोड़कर खड़े थे !
उनके देखा देखी हम सब ने भी हाथ जोड़ा !!
लगभग 1 या 2 सेकंड के लिए वह स्थिति रही होगी और उसके बाद वे लुप्त हो गए.....

इसके बाद गुरुदेव ने पूजन का क्रम आगे बढ़ाया ...
विभिन्न देवी देवताओं की पूजा करने के बाद उन्होंने उसी सन्यासी को इशारा किया !
उसने मुझे निर्वस्त्र कर दिया ।

इतने सारे लोगों के बीच में बिना कपड़ों के खड़े रहना थोड़ा अजीब सा लग रहा था ....

लेकिन ...

शायद पूर्व जन्म के संस्कारों की वजह से....

या गुरुदेव की तेजस्विता की वजह से....

ना तो मैं इनकार कर पाया और ना ही संकोच कर पाया .....

उसके बाद उस सन्यासी ने मेरे ऊपर तीन कलश जल डाल दिया और पूरे शरीर पर भस्म लगा दिया .....

अवश्य वह चिता भस्म ही रही होगी !

भस्म का लेप होते ही शरीर में जैसे आग सी लगने लगी ....

ऐसा लगा जैसे किसी ने पूरे शरीर पर मिर्ची लगा दी हो .....

जलन के मारे बुरा हाल हो गया .....

लगभग पाँच मिनट तक यही स्थिति रही होगी उसके बाद धीरे धीरे जलन शांत होने लगी । लेकिन मेरी हालत खराब हो चुकी थी.....

मुझे उसी पत्थर के ऊपर लिटा दिया गया और मेरे माथे पर सिंदूर का गोल निशान बनाया गया और मेरे शरीर के

विभिन्न अंगों पर अलग-अलग प्रकार के निशान बनाये गए ।

संभवत वे अलग-अलग प्रकार के यंत्र थे ...

उसके बाद लगभग 4 से 5 घंटे का पूजन चला ....

यह सब होते होते शाम ढल चुकी थी ।

मेरा पूरा शरीर ताप से जल रहा था !

ऐसा लग रहा था जैसे अंदर ही अंदर आग जल रही हो !!

गुदा मार्ग के पास जो पीड़ा होती थी वह पहले से ज्यादा हो रही थी .....

अब उसके साथ-साथ नाभी क्षेत्र में भी खिंचाव महसूस हो रहा था !

पूजन के अंत में गुरुदेव ने मेरे नाभि भाग में अपने अंगूठे का स्पर्श किया और उसके बाद मैं बेहोश हो गया.....

फिर क्या हुआ मुझे पता नहीं चला .....

घर वापसी

जब मुझे होश आया तो मैं गाँव मे अपने घर के सामने लगे हुए बरगद के पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर लेटा हुआ था ।

उस समय रात के लगभग 7:30 बजे का समय रहा होगा । मेरी मां मुझे खाना खाने के लिए बुला रही थी । यानि मैं वहां काफी देर से लेटा हुआ था ।

मुझे यह समझ में नहीं आया कि मैं वहां कैसे जा पहुंचा ?

मैं तो जंगल मे था ....

खैर ...

गुरुदेव की लीला वे ही जाने.....

भोजन आदि संपन्न होने के बाद मैं जाकर अपने बिस्तर पर सो गया ।

जो प्रक्रिया मेरे साथ संपन्न हुई थी उसके बाद शरीर बुरी तरह से टूट चुका था !

मैं गहरी निद्रा में चला गया ....

जैसे-जैसे नींद गहरी हुई ....

मुझे लाल रंग के गणपति के दर्शन होने लगे .....

जिनका स्वरूप अति विकराल था ।
उनकी ऊंचाई कम से कम 10 फीट की रही होगी और वो पत्थर की बनी हुई एक चौकी पर बैठे हुए थे और उनकी गोद मे उनकी शक्ति भी विराजमान थी ।

मैंने पूछा - बाबा ! लेकिन गणेश भगवान को तो लक्ष्मी के साथ रखा जाता है, फिर यह जो स्वरूप बता रहे हैं ... इस प्रकार का स्वरूप भी कहीं मंदिरों में दिखाई नहीं देता ....
यह गणेश भगवान का कौन सा स्वरूप है ।

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा - बेटा ! गणेश भगवान की वर्तमान पूजा शैली का प्रारम्भ स्वतन्त्रता संग्राम के दौर में हुआ था । यह पूजा जन सामान्य को एकत्रित करने के लिए प्रारंभ की गई थी । इसलिए उसमें साधनात्मक जटिलताओं को और उग्र स्वरूपों को शामिल नहीं किया गया था , बल्कि गणेश भगवान के सबसे सौम्य स्वरूप को स्वीकार किया गया, ताकि हर कोई उनका पूजन अर्चन संपन्न कर सकें ।
जैसे अन्य सभी देवी देवताओं के तांत्रिक स्वरूप हैं , उसी प्रकार से गणेश भगवान का भी तांत्रिक स्वरूप है ।

उसे उच्छिष्ट गणपति कहा गया है !
उनका यह स्वरूप अत्यंत ही प्रचंड और शक्तिशाली स्वरुप है । इस रूप में वे पूर्ण रौद्र भाव से अपनी शक्ति के साथ श्मशान में विराजमान होते हैं ।
यह मेरे लिए बिल्कुल नई जानकारी थी ।
मैं आंखें फाड़ कर आश्चर्य के साथ उनकी ओर देख रहा था।

वह मेरे भाव को समझ गए और बोले - बेटा तंत्र के क्षेत्र में बहुत कुछ रहस्यमय है और इन्हीं रहस्यों को जानने की यात्रा ही तंत्र साधना है .....
जिसके द्वारा हम उन अद्भुत और अद्वितीय शक्तियों के सानिध्य को प्राप्त करने मे सक्षम हो सकते हैं .....
जो अनेक गोपनीय आवरण में छुपे हुए हैं !
वैसे ही एक देवता है उच्छिष्ट गणपति ।

इनकी साधना और उनका मंत्र दोनों गोपनीय होता है, जिसे गुरु से प्राप्त करना चाहिए । गुरु के द्वारा जब मंत्र प्राप्त होता है तो उसमें गुरु के द्वारा की गई साधनाओं का बल भी शामिल होता है ... जिसकी वजह से मंत्र का प्रभाव बढ़ जाता है ।

गुरु से मंत्र प्राप्त करने का विधान इसीलिए साधना के क्षेत्र में रखा गया है !

हां ! इसके लिए यह जरूरी है कि गुरु ने स्वयं साधना की हुई हो !!

किसी का पुत्र हो जाने से या किसी गुरु परंपरा का उत्तराधिकारी हो जाने मात्र से गुरु के द्वारा दिए गए मंत्र में ऐसी प्रबलता नहीं आ सकती ।

यह शक्ति उसमे तभी आती है जब गुरु ने स्वयं उन मंत्रों को साधा हो..... अर्थात स्वयं उसका जप अनुष्ठान किया हो । या फिर कम से एक महाविद्या सिद्ध की हो ....

किताबों में लिखे हुए मंत्र को पढ़कर जाप किया जा सकता है, लेकिन उसमें ऊर्जा कम होती है । ठीक इसके विपरीत जब हम मंत्र किसी सिद्ध गुरु से प्राप्त करते हैं, तो वहीं मंत्र उस गुरु की साधनात्मक उर्जा से ओतप्रोत होने की वजह से जल्दी फल प्रदान करते हैं ।

इतना कहकर बाबा ने पास पड़े लोटे से पानी पिया और आगे बोले - वह गणेश भगवान का स्वरूप मुझे 10-15 सेकंड तक दिखाई देता रहा .....

उसके बाद लुप्त हो गया !

उस दृश्य के लुप्त होते ही मुझे अपने मूलाधार वाले स्थान पर स्पंदन का आभास होने लगा !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वहां कुछ धड़क रहा हो !

लगभग 10 या 15 मिनट तक वैसी ही स्थिति रही उसके बाद मैं फिर सो गया ।

उच्छिष्ट गणपति का रहस्य

ब्रह्म मुहूर्त में लगभग 4:30 बजे का समय रहा होगा जब मेरे कमरे में सफेद रंग का प्रकाश फैल गया । श्वेत प्रकाश के बीच में साक्षात गुरुदेव का बिम्ब खड़ा हुआ था .....

मैंने दंडवत प्रणाम किया ।

गुरुदेव ने आशीर्वाद देने के बाद कहा - बेटा ! साधना का प्रथम चरण पूरा हो चुका है । अब तुम्हें अगले चरण की ओर बढ़ना है । इसके निर्देश तुम्हें जल्द ही मिलेंगे । आज महाबलेश्वर मंदिर चले जाना ।

इतना कहकर उनकी आकृति लुप्त हो गई ।

स्नान तथा नित्य कर्मों से संसद में होने के बाद सुबह का नाश्ता करके मैं महाबलेश्वर मंदिर की ओर निकल पड़ा । महाबलेश्वर मंदिर मे स्वयंभू लिंगम हैं जिन्हें महालिंगम भी कहा जाता है। भगवान शिव का शिवलिंग रुद्राक्ष के जैसा लगता है।

महाबलेश्वर मंदिर में अत्यंत प्राचीन त्रिशूल, रुद्राक्ष, डमरू भी मौजूद हैं। महाबलेश्वर मंदिर में महादेव के वाहन नंदी और कालभैरव की मुर्तियां भी मौजूद है।

मैं भैरव मूर्ति के पास खड़ा हुआ था तभी अचानक न जाने कहां से एक सन्यासी प्रकट हुआ ।

वह सन्यासी लगभग 25 से 30 वर्ष की आयु के बीच का रहा होगा ।

लगभग सवा 6 फुट का कद !

बलिष्ठ शरीर !

घुटे हुए सिर का स्वामी वह सन्यासी अपने गले में नीले और लाल रंग की मणियों की माला पहने हुआ था !

उसके कलाइयों में रुद्राक्ष के बने हुए कड़े थे ।

रुद्राक्ष का ही कुंडल उसके कानों में भी पड़ा हुआ था ।

उसके माथे पर काले रंग का त्रिशूल बना हुआ था ।

उसके अचानक से इस प्रकार प्रकट होने से मैं हड़बड़ा कर थोड़ा सा पीछे हट गया.....

मुझे इस प्रकार से हड्बड़ाता देखकर वह खिल खिलाकर हंस पड़ा ....

उसकी हंसी बेहद सम्मोहक और मासूम सी थी !

जो उसके विशालकाय शरीर के साथ मेल नहीं खा रही थी ....
लेकिन उसकी हंसी सुनकर मुझे सामान्य होने में आसानी हुई ।

उसने कहा - गुरुदेव ने मुझे भेजा है । आओ तुम्हें तुम्हारी अमानत सौंप दूँ ।
उसने आगे बढ़कर मेरा हाथ थाम लिया और लगभग खींचता हुआ एक और ले चला । मैं नहीं जाना चाहता था , लेकिन उसकी ताकत और उसकी पकड़ दोनों ही इतने प्रचंड थे कि मैं विवशतावश उसके साथ चल पड़ा ।
वह मुझे मंदिर के एक दीवार के पीछे ले गया और मेरी आंखें अपनी हथेली से ढक दी ।
उसके बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हवा में उड़ रहा हूं । लगभग दो-तीन मिनट के बाद उसने मेरी आंखें छोड़ दी । जब मैंने आंखें खोली तो मैं एक गुफा में खड़ा हुआ था । उस गुफा के अंदर तीन सन्यासी जो लगभग उसी की आयु के थे बैठे हुए थे ।

तीनों के सामने एक एक चौकी जैसी लगी हुई थी और उसमें ताड़ के पत्तों से बने हुए ग्रंथ रखे हुए थे । जिनको देखकर वे एक नोटबुक में लिखते जा रहे थे । संभवत: उस की कॉपी बना रहे होंगे ।

यह सब देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया कि गुरुदेव एक साथ कितने अलग-अलग प्रकार के कार्य कर रहे हैं । वे पांडुलिपिया जो उस चौकी पर रखी हुई थी उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे वे कई सौ साल पुरानी होंगी । उसमें लिखे हुए अक्षर काफी धुंधले हो चुके थे ....

मुझे लेकर जाने वाले उस सन्यासी का नाम था अमृतानंद ।

अमृतानंद ने बताया - हमारे अनेक तांत्रिक ग्रंथ अंग्रेजों द्वारा नष्ट कर दिए गए और उससे पहले कई ग्रंथ मुस्लिम आक्रांताओं के द्वारा भी नष्ट किए गए । लेकिन श्रुति परंपरा से बहुत सारा ज्ञान बचा रह गया । जिसे उस समय के तांत्रिक गुरुओं ने ताड़ पत्रों में सुरक्षित करके रख लिया था । उनमें से कई ताड़ पत्र से बने हुए ग्रंथ काफी जर्जर अवस्था में हो चुके हैं । उन सभी को गुरुदेव ने इकट्ठा किया है और हम जैसे कुछ शिष्यों को

उन ग्रंथों की पुनः प्रतिष्ठा का काम सौंपा है । हम उसे नोटबुक पर लिख रहे हैं और आने वाले समय में इन्हे ग्रंथ का आकार देखकर सुरक्षित कर लिया जाएगा ।

यह सुनकर मुझे गुरुदेव और उन सभी पर गर्व भी हुआ । अमृतानन्द आगे बोले - इन ग्रंथों को सुरक्षित करने के साथ-साथ इनमें लिखी हुई साधनाओं को अलग-अलग शिष्यों को कराने का भी विधान गुरुदेव के द्वारा निर्धारित किया गया है । इसके लिए योग्य शिष्यों को ढूंढ कर इन ग्रंथों में लिखी हुई साधना ओं का विवरण उन्हें प्रदान किया जाता है ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए वे किसी जीवित ग्रंथ की तरह काम कर सकें और इस दुर्लभ ज्ञान को आगे की पीढ़ी तक पहुंचा सके ।

मैंने देखा कि उनमें से एक युवक के सामने रखे हुए ग्रंथ के पन्ने पूरे नहीं थे । उनमें से कुछ पन्नों का हिस्सा फटा हुआ दिखाई दे रहा था । वह उसमें से देखकर लिखने की कोशिश कर रहा था । दो-तीन लाइनें लिखने के बाद वह आंखें बंद कर लेता था जैसे ध्यान करने की कोशिश कर रहा हो और उसके बाद पुनः आगे की लाइन लिखने लग जाता था । बंद आंखों के बावजूद

वह ऐसा कैसे कर लेता है इस बात को मैं आश्चर्य से देख रहा था । अमृतानंद ने मुझे बताया - यह पद्मानन्द है ! इस ग्रंथ में से कुछ पंक्तियां ताड़ पत्र के खराब होने की वजह से दिख नहीं रही है उन लाइनों को जानने के लिए वह गुरुदेव से ध्यान के माध्यम से संपर्क करता है और उसे समझ कर लिख रहा है ।

मेरे मन में यह भाव उठा कि यह कैसे संभव है ? अमृतानन्द मेरे भावों को समझ गए और कहा - हमारे साधना जगत मे दूरश्रवण और दूरदर्शन जैसी सिद्धियां प्राचीन काल से ही विद्यमान रही हैं । इन्ही सिद्धियों के माध्यम से महाभारत काल में जो युद्ध हुआ था, उसका वर्णन संजय ने अंधे महाराज धृतराष्ट्र को उनके राज महल में बैठकर सुनाया था ।

आपने भी पढ़ा या देखा होगा कि महाभारत में वर्णन आता है कि संजय जो स्वयं युद्ध में भाग नहीं ले रहा था और ना ही युद्ध भूमि में था, वह अपनी दिव्य शक्तियों के माध्यम से युद्ध को देखकर, उसका पूरा विवरण महाराज धृतराष्ट्र को बताता था ।

मैं इन सब चीजों को सुनकर अपने सनातन धर्म और उसकी श्रेष्ठता को प्रणाम करता हुआ वहां खड़ा था .....।

तभी अमृतानंद ने कहा - चलो ! अब मैं तुझे आगे लिए चलता हूं ।

वहां से अंदर की ओर एक विशालकाय मंदिर बना हुआ था । उस मंदिर में लगभग 2000 खंबे रहे होंगे जो एक ही सीध में रहे होंगे, यानी एक तरफ की लाइन में लगभग 1000 । वे सारे लगभग एक ही आकार के दिखाई दे रहे थे । वह एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक जुड़ा हुआ था । उसमें से लगभग तीन चार सौ के आसपास खंबे बीच में खुले आसमान के नीचे थे .... बाकी के खंभे दोनों पहाड़ों के अंदर में थे ।

जो खंबे खुले आसमान के नीचे थे ...उनके ऊपर पत्थरों से बनी हुई छत मौजूद थी ।

सभी खंबे लगभग एक ऊंचाई के थे और उनकी ऊंचाई लगभग 11 फुट के आसपास रही होगी । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह किसी मशीन के माध्यम से बनाए गए हो । वे एक ही आकार के और एक ही पत्थर से बने हुए थे ।

हर खंबे में ऊपर तथा नीचे की हुई शिल्पकला एक दूसरे से मिलती-जुलती थी । बीच की मूर्तियों के डिजाइन अलग-अलग थे ।

पहली पहाड़ी के अंदर बने खंबों मे देवी देवताओं की मूर्तियाँ थी । खुले स्थान के खंबों मे कई यंत्र और चक्र बने हुए थे ।

पहाड़ी के अंदर जो खंभे थे उसमें युगल मुद्रा में मूर्तियां विराजमान थी .....

ठीक वैसे जैसे खजुराहो के मंदिर में है ।

वह मूर्तियाँ इतनी बढ़िया बनी हुई थी कि ऐसा लगता था जैसे अभी बोल पड़ेगी .....

जिस शिल्पकार ने भी उसे बनाया होगा, मैं मन ही मन उसे प्रणाम करता हुआ आगे बढ़ने लगा !

हर मूर्ति अपने आप में अद्वितीय थी , ऐसा प्रतीत होता था जैसे अभी वे उन खंबों से निकलकर जीवन धारण कर लेंगे ।

संभवत: वे उस गुप्त और रहस्यमय जगह पर स्थित होने की वजह से सुरक्षित रह गई होंगी, क्योंकि जब मुस्लिम आक्रांताओं ने हमारे देश पर आक्रमण किया था, तो

उन्होंने हमारे मंदिरों में बनी हुई असंख्य मूर्तियों को तोड़ दिया था ।

आज भी अगर आप देखे तो कई सुंदर-सुंदर अप्सराओं की मूर्तियां ऐसी है, जिसके हाथ टूटे हुए हैं, या पैर टूटे हुए हैं । यह वास्तव मे दुर्भाग्य है कि एक धर्म दूसरे धर्म के ऊपर इस प्रकार आक्रमण करके उसे समाप्त करने की कोशिश करता है ।

उन जाहिल आक्रान्ताओं के इस दुर्व्यवहार की वजह से हमारे प्राचीन विरासत को बहुत गंभीर नुकसान पहुंचा है । कई मंदिर है जहां की मूर्तियां खंडित है । कई शिव मंदिर जिसमें सोमनाथ का शिव मंदिर भी शामिल है जहां के विग्रह को खंडित किया गया है । अनेक प्रतिमाएं आज भी खंडित अवस्था में आपको स्थान स्थान पर मिल जाएगी ।

उस पहाड़ी के अंदर जो मूर्तियां थी, वह पूरी तरह से अनछुई थी और उनमें किसी प्रकार की तोड़फोड़ नहीं हुई थी । उनको देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वह कम से कम कई सौ वर्ष पुरानी तो रही होगी, लेकिन उनकी खूबसूरती ऐसी थी, जैसे उनको अभी तराश कर पॉलिश कर के रखा गया हो । काले पत्थर के ऊपर

बनी हुई मूर्तियां .... वास्तव में अद्भुत थी । उन खंबों को पार कर लेने के बाद फिर से एक विशाल हाल सामने आया ।

वहां कई लोग मुझे दिखाई दिए जो अलग-अलग प्रकार की गतिविधियों में लगे हुए थे । कुछ लोग पुराने ताड़ पत्रों में से सूचना एकत्रित कर रहे थे तो वहीं कुछ लोग किताबों को सहेज कर एक तरफ जमा कर रहे थे । कई चौकियां रखी हुई थी और उन चौकियों पर भी बहुत सारे लोग बैठे हुए थे और अपने अपने कार्य कर रहे थे । अधिकांश के सामने या तो कोई ग्रंथ था या फिर कोई कॉपी रखी हुई थी या ताड़ पत्र था या भोजपत्र था । कुल मिलाकर वह पूरा तंत्र संग्रहालय था । कुछ लोग ताम्रपत्र यानि तांबे के बने हुए पत्र पर लिखी हुई चीजों को अपने पास रखी हुई नोटबुक में उतार रहे थे । कुछ सोने तथा चांदी के बने हुए पत्रों पर लिखी हुई चीजों और यंत्रों को कॉपी में उतारने की कोशिश कर रहे थे । यह वास्तव में अद्भुत था ....

मैं मन ही मन अभिभूत हो रहा था कि हमारी शाश्वत सत्ताएं कितनी सहजता से चीजों को वापस पुनर्स्थापित

कर लेती है और उन्हें उनके मूल स्वरूप में पहुंचा देती है....

शायद यही कारण रहा होगा कि तंत्र शास्त्र वैदिक काल से आज तक निरंतर चला आ रहा है और अपनी पूर्णता के साथ विद्यमान है ।

यह अलग बात है कि वर्तमान समय मे लोगों की पहुंच इन साधनाओं तक कम हो गई है, क्योंकि सहनशील, संघर्षशील और परिश्रमी लोगों की कमी हो गई है ।

लोग आसानी से झटपट समाधान प्राप्त कर लेना चाहते हैं ।

यह स्थिति वास्तव में पीड़ादायक है .....

लेकिन वास्तविक है.....

यही स्थिति तथाकथित गुरुओं की भी है ..... अधिकांश ने स्वयं कोई साधना नहीं की है लेकिन ज्ञान पूरी महाकाल संहिता का बाँट देते हैं ।

मैं स्वयं इस बात का साक्षी हूं ....

मैंने ऐसे गुरु देखे हैं..... जो सारे वेदों को कंठस्थ कर चुके थे !

जिनके मुख में साक्षात सरस्वती बसती थी !

जिनके मुख से मंत्र के उच्चारण को शुद्धता का प्रमाण माना जाता था .....
लेकिन उनके उत्तराधिकारी आयोग्य लोग आए....

कुछ गुरुओं के पुत्र भी वैसे ही अयोग्य निकले ....
उनका उच्चारण सुनने के बाद ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह उस परंपरा को समाप्त करने के लिए ही पैदा हुए हैं .....
कई गुरु ऐसे हैं, जिनको पूजन कराना नहीं आता और वह पूजन कराने के लिए अपने साथ एक असिस्टेंट रखते हैं .....
अब आप स्वयं सोचे कि जो गुरु स्वयं पूजन करना नहीं जानता वह दूसरों को पूजन क्या कराएगा ?

परिवारवाद की वजह से कई बार ऐसा होता है कि गुरु के पुत्र को गुरु मान लिया जाता है, या गुरु परंपरा में गुरु के द्वारा किसी चहेते शिष्य को या अपने पुत्र को गुरु बना दिया जाता है ।

यह परिवारवाद वास्तव में राजनीति की तरह ही अध्यात्म के क्षेत्र में भी एक बहुत बड़ा बड़ी समस्या है ।

जिसके चलते वास्तविक आध्यात्मिक धीरे-धीरे लोगों से दूर होता चला जाता है । इन परंपराओं से सनातन धर्म को वास्तव में बहुत गहरा नुकसान पहुंचा है ।

परिवारवाद किसी भी क्षेत्र के लिए अच्छा नहीं है । चाहे वह राजनीति हो खेल हो या अध्यात्म जहां भी योग्यता के स्थान पर परिवारवाद को महत्त्व दिया जाने लगता है, वह क्षेत्र पिछड़ने लग जाता है । उदाहरण के लिए आप भारत की एक बड़ी राजनीतिक पार्टी को भी देख सकते हैं जो परिवारवाद की वजह से आज लगभग समाप्ति के कगार पर पहुंच चुकी है, ऐसी स्थिति कुछ क्षेत्रीय दलों की भी है जिनमें अयोग्य संतानों को पद सौंपने की वजह से या संतानों के आपसी झगड़ों की वजह से वे रसातल की ओर जा रही है .

परिवारवाद निरंकुशता और अयोग्यता को बढ़ावा देता है जो धीरे-धीरे समाप्ति का कारक बनता है !
जो भी हो .....
ऐसा होता है.....
और ऐसा क्यों होता है ?
इसका रहस्य तो महामाया ही जाने.

हम आगे बढ़ते हैं.....

उस गलियारे को पार करके हम आगे बढ़ते चले गए । लगभग 400 मीटर चलने के बाद एक बंद पत्थर की दीवार सामने आ गई । जिसके सामने के चौकोर आकृति के बने हुए एक पत्थर पर अमृतानंद ने मुझे अपने साथ खड़ा कर लिया । उसने दीवार पर लगी हुई एक मूर्ति को दाईं तरफ खिसकाया उसके दाएं तरफ सरकते ही जिस पत्थर पर हम लोग खड़े थे, वह किसी लिफ्ट की तरह नीचे की तरफ जाने लगी ।
लगभग 10-15 फीट नीचे जाने के बाद वह पत्थर रुक गया । जहां पर वह पत्थर रुका उसके दाहिनी तरफ एक बड़ा सा गलियारा बना हुआ था । हम उस पत्थर से उतरकर उस गलियारे में आगे बढ़ते चले गए । पीछे से गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी तो मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो वह पत्थर का प्लेटफार्म किसी लिफ्ट की तरह ऊपर की तरफ जा रहा था ।

प्रकृति के और तंत्र के जो रहस्य मेरे सामने खुल रहे थे ...वह वास्तव में अद्भुत थे ।

मैं सोच रहा था कि उस जमाने में इस प्रकार की लिफ्ट बनाने की तकनीक उन्होंने कैसे ईजाद की होगी ।

लगभग 15 या 20 मीटर आगे जाने के बाद हम दोनों दाहिनी ओर मुड़ गए । दाहिनी और मुड़ने के बाद करीब करीब 15 सीढ़ियां हम नीचे उतरे ..... और हम जा पहुंचे एक वैसे ही बड़े से हॉलनुमा गुफा में....

वह हाल किसी अज्ञात वस्तु से निकलने वाले प्रकाश की वजह से हल्के लाल रंग से प्रकाशित था....

बिलकुल वैसा ही जैसा नाइट लैंप का प्रकाश होता है ।

वह हल्का लाल रंग का प्रकाश कहां से आ रहा है यह देखने की मैंने कोशिश की लेकिन मुझे कहीं भी दिखाई नहीं दिया .....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह दीवालों से प्रतिबिंबित हो कर आ रही हो ।

वह पूरी की पूरी गुफा लाल रंग के पत्थरों से बनी हुई थी जो कुछ कुछ मूंगा पत्थर के जैसे दिखाई दे रहे थे ।

उस प्रकार के पत्थरों को मैंने अपने जीवन में कभी फिर नहीं देखा ...

खासतौर से किसी गुफा के अंदर तो कभी नहीं !

उस गुफा के ठीक बीच में एक चौकी रखी हुई थी जिसे आप प्लेटफार्म भी कह सकते हैं ।

वह प्लेटफार्म करीब 15 फुट चौड़ा और 20 फीट लंबा रहा होगा ।

उस प्लेटफार्म के ऊपर एक सिंहासन था !

सिंहासन सामान्य सिंहासन नहीं था.....

बल्कि सोने से बना हुआ सिंहासन जैसा लग रहा था .... और उसमें रत्न जड़े हुए थे ।

वह रत्न भी छोटे नहीं थे, बल्कि टेनिस बॉल जैसे बड़े बड़े थे ।

वे रत्न थे ..... या कांच के थे.... यह तो मुझे नहीं मालूम लेकिन वह उसी लाल प्रकाश से चमक रहे थे....

उस सिंहासन के ऊपर विराजमान थी लाल रंग की गणेश भगवान की मूर्ति !

जो स्वयं मूंगे के पत्थर की बनी हुई दिखाई दे रही थी .....

वह मूर्ति लगभग 8 फुट ऊंची थी और उस सिंहासन के ऊपर बैठी हुई मुद्रा में थी । वह मूर्ति पूर्णत: निर्वस्त्र

थी और उस विग्रह की बाई जंघा पर उनकी शक्ति विराजमान थी ।

ऐसा विग्रह मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था ।

मैंने अमृतानंद की ओर देखा तो वह दंडवत मुद्रा में जमीन पर लेटा हुआ था.....

उसके देखा देखी मैं भी दंडवत प्रणाम करने के लिए जमीन पर लेट गया .....

हमारे यहां जो साष्टांग दंडवत प्रणाम करने की परंपरा है, उसका तात्पर्य यह होता है कि मैं अपने संपूर्ण शरीर को आपके श्री चरणों में समर्पित करता हूं और आप मुझ पर कृपा करके मुझे अपनी शरण में ले ले .....

गणेश स्तोत्र का उच्चारण करने के बाद वह खड़ा हुआ और उसके साथ मैं भी उठ खड़ा हुआ ।

खड़े होने के बाद उसने बताया कि यह उच्छिष्ठ गणपति की प्रतिमा है !

यह पूर्ण तांत्रिक प्रतिमा है और यह दुर्लभ है.....

मैं उस प्रतिमा को गौर से देख रहा था !

उस प्रतिमा की आंखें बिल्कुल जीवित प्रतीत होती थी !

उनके माथे पर श्वेद बिंदु दिखाई दे रहे थे अर्थात पसीने की बूंदें दिखाई दे रही थी .....

यह देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया और गौर से देखने लगा .....

अमृतानंद ने बताया - यह मूर्ति वास्तव में श्वेद छोड़ती है ! इसके माथे पर जो पसीने की बूंदे देख रहे हो यह पोंछ देने के बाद फिर से माथे पर प्रकट हो जाती है । इस प्रकार के कई गोपनीय रहस्य मूर्ति में छुपे हुए हैं । तुम्हें भगवान गणेश के इसी स्वरूप की साधना करनी है ।

इसकी साधना का पहला चरण तुम्हें यहां संपन्न कराया जाएगा और आगे की साधना तुम्हें अपने स्थान पर जाकर करनी है ।

यह सुनकर मैं चमत्कृत होता हुआ वहीं खड़ा हुआ उनके दर्शन करता रहा ।

अमृतानंद मुझे वही खड़ा रहने को कह कर एक दिशा में चला गया ।

मैं उस मूर्ति को निहार रहा था !

मैं उसको अपने मन में उतारने की कोशिश करने लगा !

मैंने अपनी आंखें बंद करके ध्यान लगाने की कोशिश की .....

जैसे ही मैंने आखें बंद की .....

मुझे अपनी बगल मे हाथी के जोर से चिंघाड़ने की आवाज सुनाई दी !

मैंने हड़बड़ा कर आंखें खोल दी !

सामने देखा तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उस मूर्ति की सूंड अपने स्थान से थोड़ा दूसरी दिशा में हट गयी है !!

मैंने और गौर से देखने की कोशिश की .....

लेकिन मूर्ति में कोई हलचल नहीं हुई.....

मैं उसी प्रकार उसको देखता हुआ खड़ा था ! लेकिन उसमें किसी प्रकार की हलचल नहीं हुई तो मुझे लगा कि संभवतः मेरे मन का भ्रम रहा होगा .....

तीन-चार मिनट के बाद फिर से आंखें बंद करने की कोशिश की !

जैसे ही मैंने आंखें बंद की ....

दोबारा से हाथी की चिंघाड़ सुनाई दी और मेरी आंखें झटके से खुल गई .....

इस बार फिर से मुझे सूंड की स्थिति दूसरी दिखाई दी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे सूंड अपने स्थान से इधर-उधर हो रही हो !!

यह देखकर मैंने सोचा कि हो सकता है भगवान गणेश मेरे साथ चुहल बाजी कर रहे हो .....
इसलिए मैंने आंखें बंद करने का विचार छोड़ दिया और उनको देखता हुआ हाथ जोड़कर खड़ा हो गया !
उन्हें देखते देखते मेरे मन में न जाने कैसे भावनाओं का ज्वार उमड़ने लगा और मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी ।
उसी प्रकार मैं कुछ समय तक खड़ा रहा ....
थोड़ी देर बाद अमृतानंद वापस आया !

मेरी स्थिति देखकर वह समझ गया और उसने पानी लाकर मुझे पिलाया.....
पानी पीने के बाद मेरी स्थिति थोड़ी सामान्य हुई और मैं बेहतर महसूस करने लगा ।
अमृतानंद के हाथ में लगभग 100 पेज की कॉपी थी । उसने शुरू के पेज को खोल कर दिखाया और उसमें लिखे हुए मंत्र का जाप करने के लिए कहा !

उस मंत्र का मैंने लगभग एक डेढ़ घंटे तक जाप किया ....

जब मैं आँखें खोलकर मंत्र जाप करता था तो सब सामान्य दिखाई देता था .....

लेकिन जैसे ही आंख बंद करता था तब मुझे चिंघाड़ की आवाज सुनाई देती थी और अपने आंख खोल लेता .....

जैसे ही आंख खोलता था मुझे सामने रखी हुई मूर्ति की मुद्रा में कोई न कोई परिवर्तन अवश्य दिखाई देता था .....

जैसे कि वह मूर्ति जीवित हो और वह मुद्रा में परिवर्तन कर रही हो .....

इसी प्रकार से लगभग डेढ़ घंटे का समय बीत गया !

मंत्र जाप जारी था .....

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है ?

क्यों हो रहा है ?

लगभग 2 घंटे के मंत्र जाप के बाद मन में इस प्रकार के विचार आना बंद हो गया । धीरे-धीरे मेरा मस्तिष्क

शांत होता जा रहा था । मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं एकदम हल्का हो गया और अंतरिक्ष में उड़ रहा हूं .....

बिना किसी गुरुत्वाकर्षण के.....

रुई के फाहे की तरह.....

जो हवा में हर तरफ घूम घूम कर उड़ता रहता है.....

ठीक वैसा ही अपने आपको महसूस कर रहा था । वह मनः स्थिति वास्तव में अद्भुत थी !

ऐसा लग रहा था जैसे मैं वहां से कभी ना लौटूँ !

तभी ....

दोनों आँखों की भौंह के बीच वाली जगह मुझे स्पंदन महसूस होने लगा .....

मेरा ध्यान उधर चला गया ।

मैंने अपने आज्ञा चक्र वाले स्थान में.....

एक प्रकाश का पुंज !

जो एक मटर के दाने के बराबर था ...

वह दिखाई देने लगा !

वह प्रकाश कुंज गुलाबी रंग का था ....

उसमें से प्रकाश निकल रहा था .....

वह भी गुलाबी रंग का प्रकाश जो चारों तरफ फैल रहा था !

वह किसी सूर्य की भांति प्रतीत हो रहा था, जिसमें से गुलाबी रंग की रश्मियां संपूर्ण ब्रह्मांड में फैल रही थी!

मैं धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था !

जैसे जैसे मैं उसके करीब पहुंचते जा रहा था उसका आकार बड़ा होते जा रहा था !

वह अनंत आकाश में स्थित था !

उसके चारों ओर ग्रह नक्षत्र दिखाई दे रहे थे ..... जैसे जैसे मैं उसके करीब जा रहा था .... ग्रह नक्षत्र मेरी नजरों से दूर होते जा रहे थे .... और वह पिंड जो मेरे सामने दिखाई दे रहा था उसका आकार धीरे धीरे बढ़ता जा रहा था !

जैसे जैसे मैं उसकी ओर बढ़ रहा था .....

मुझे ऊष्मा का अनुभव होने की बजाय शीतलता का अनुभव हो रहा था !

ऐसा लग रहा था मैं किसी ठंडी जगह की ओर बढ़ रहा हूं ....

उसके अंदर से निकलने वाली गुलाबी किरणें शांत और शीतल थी !

मैं आगे की ओर बढ़ता रहा और तभी वह गुलाबी रंग का प्रकाश भगवान गणेश के रूप में परिवर्तित हो गया !

वह स्वरूप ठीक वैसा ही था जैसा उस चौकी पर बैठे हुए भगवान श्री गणेश का था ।

मैं उन्हें देखकर भावविभोर होता हुआ बैठा था !!!

तभी.....

मुझे एक जोर की चिंघाड़ की आवाज फिर से सुनाई दी और मेरा ध्यान टूट गया ।

साधना विधि

मैं वापस सामान्य स्थिति में आ गया और जैसे ही मैंने अपनी आंखें खोली ....

अपने सामने अमृतानंद को खड़े हुए देखा !

वह मुझे देख कर मुस्कुरा रहा था !

मैंने अपनी आंखें खोली और शांत अवस्था में बैठ गया और उसकी ओर देखने लगा ....

उसकी मुस्कुराहट बेहद आकर्षक थी !

किसी मासूम बच्चे की तरह....

सुकून पहुंचाने वाली.....

आश्वस्त करने वाली ।

उसने पूछा - दर्शन हो गए ?

मैंने झिझकते हुए कहा - हां !

अमृतानन्द ने कहा - इस कॉपी में कुछ विधियां लिखी हुई है , उसके अनुसार तुमको आगे का पूजन और साधना करनी है । अभी जो मंत्र मैंने तुम्हें बताया था वह महागणपती का एक विशेष मंत्र है । इसके बाद इस कॉपी मे भगवान गणेश के 32 मंत्र हैं जो भगवान गणेश के 32 रूपों का प्रतीक है । वे इस प्रकार हैं

श्री बाल गणपति - छः भुजाओं और लाल रंग का शरीर

श्री तरुण गणपति - आठ भुजाओं वाला रक्तवर्ण शरीर

श्री भक्त गणपति - चार भुजाओं वाला सफेद रंग का शरीर

श्री वीर गणपति - दस भुजाओं वाला रक्तवर्ण शरीर

श्री शक्ति गणपति - चार भुजाओं वाला सिंदूरी रंग का शरीर

श्री द्विज गणपति - चार भुजाधारी शुभ्रवर्ण शरीर

श्री सिद्धि गणपति - छः भुजाधारी पिंगल वर्ण शरीर

श्री विघ्न गणपति - दस भुजाधारी सुनहरी शरीर

श्री उच्छिष्ठ गणपति - चार भुजाधारी नीले रंग का शरीर

श्री हेरंब गणपति - आठ भुजाधारी गौर वर्ण शरीर

श्री उद्ध गणपति - छः भुजाधारी कनक यानि सोने के रंग का शरीर

श्री क्षिप्र गणपति - छः भुजाधारी रक्तवर्ण शरीर

श्री लक्ष्मी गणपति - आठ भुजाधारी गौर वर्ण शरीर

श्री विजय गणपति - चार भुजाधारी रक्त वर्ण शरीर

श्री महागणपति - आठ भुजाधारी रक्त वर्ण शरीर

श्री नृत्त गणपति - छः भुजाधारी रक्त वर्ण शरीर

श्री एकाक्षर गणपति - चार भुजाधारी रक्तवर्ण शरीर

श्री हरिद्रा गणपति - छः भुजाधारी पीले रंग का शरीर

श्री त्र्यैक्ष गणपति - तीन नेत्रों वाले चार भुजाधारी, सुनहरा शरीर

श्री वर गणपति - छः भुजाधारी रक्तवर्ण शरीर

श्री ढुण्डि गणपति - चार भुजाधारी रक्तवर्णी शरीर

श्री क्षिप्र प्रसाद गणपति - त्रिनेत्र धारी, छः भुजाधारी रक्ववर्णी शरीर ,

श्री ऋण मोचन गणपति - चार भुजाधारी लालवस्त्र धारी

श्री एकदंत गणपति - छः भुजाधारी श्याम वर्ण शरीर

श्री सृष्टि गणपति - चार भुजाधारी, मूषक पर सवार रक्तवर्णी शरीर

श्री द्विमुख गणपति - पीले वर्ण के चार भुजाधारी और दो मुख वाले

श्री उद्दण्ड गणपति – कुमुदनी अमृतपात्र बारहभुजाधारी रक्तवर्णी शरीर वाले।

श्री दुर्गा गणपति - आठ भुजाधारी रक्तवर्णी ।

श्री त्रिमुख गणपति - तीन मुख वाले, छः भुजाधारी, रक्तवर्ण शरीरधारी

श्री योग गणपति - योगमुद्रा में विराजित, नीले वस्त्र पहने, चार भुजाधारी
श्री सिंह गणपति - श्वेतवर्णी आठभुजाधारी, सिंह के मुख और हाथी की सूंड वाले
श्री संकष्ट हरण गणपति - चारभुजाधारी, रक्तवर्णी शरीर, हीराजड़ित मुकूट पहने।

ये गणेश भगवान के 32 विशिष्ट स्वरूप हैं इनमे से हर एक का तांत्रिक मंत्र इस कॉपी मे लिखा हुआ है, जो अत्यंत प्राचीन पाण्डुलिपि वक्रतुंड शक्ति सूत्र से लिया गया है ।
तुम्हें तीन तीन दिन के लिए एक एक मंत्र का जाप करना है । रात के ग्यारह से लेकर दो बजे तक तुम्हें रोज तीन घंटे मंत्र जाप करना है !
इस प्रकार से तुम्हें कुल 96 दिन मंत्र जाप करना होगा !
जब इन 32 स्वरूपों की साधना पूर्ण हो जाएगी तब तुम्हें बहत्तरवें पेज पर जो विधि लिखी हुई है उसके अनुसार अगले चार दिन तक तुमको साधना संपन्न करनी है ।
उसके बाद आगे का मार्ग तुम्हें फिर से बता दिया जाएगा ।

इतना कह कर अमृतानन्द ने अपने पीछे चलने का इशारा किया ।

मैं उस स्थान को छोड़ कर जाना नहीं चाहता था लेकिन वापस आना भी विवशता थी । उसके बाद अमृतानंद मुझे एक कक्ष में ले गया और उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं चला ।

जब मेरी आंखें खुली तो मैं अपने घर के सामने वाले चबूतरे पर पड़ा हुआ था ।

गणेश भगवान की पूजा अर्चना तथा सब कुछ संपन्न करने के बाद मैं वापस मुंबई लौट गया ।

क्लीनिक का काम फिर से सामान्य गति से चलने लगा .... मैं उस कॉपी के बारे मे लगभग भूल गया ।

वह एक पूर्णिमा की तिथि थी जब मुझे उस ग्रंथ की याद आई जिससे मैं अपने साथ लेकर गया था ।

जिसके अनुसार मुझे साधना करनी थी ।

मैंने उसे बाहर निकाला और पढना चालू किया !

उस ग्रंथ के अंदर 32 प्रकार के गणपति मंत्र साधना विधि लिखी हुई थी और अनेक मुद्राओं तथा गोपनीय क्रियाओं के विषय मे भी लिखा हुआ था ।
उस कॉपी मे दिए गए निर्देशों के अनुसार मैंने साधना प्रारंभ कर दी ।
मुझे रोज रात्री मे 3 घंटे तक जाप करना था ....
जो रात को ग्यारह बजे से प्रारंभ करता था और रात के दो बजे जाप समाप्त होता था ।
मेरा क्लीनिक सुबह दस बजे खुलता था इसलिए मैं साधना पूर्ण हो जाने के बाद वहीं सुबह आठ बजे तक सो जाता था ...
इस प्रकार से मेरी नींद भी पूरी हो जाती थी । तीन-तीन दिनों का वह क्रम चलता रहा .....

कुछ विशेष घटना घटित हुए बिना ही बहत्तर दिन की साधना पूर्ण हो गई तब तक मेरे द्वारा भगवान गणेश के 24 स्वरूपों की साधना पूर्ण हो चुकी थी । भगवान गणेश के 25 वें स्वरूप श्री सृष्टि गणपति की साधना प्रारम्भ करनी थी , जिनको उस कॉपी मे चार भुजाधारी,

मूषक पर सवार और रक्तवर्णी शरीर धारी स्वरूप का बताया गया था ।

वह खुशबू

मैं उस रात्रि भी अपनी मंत्र साधना में लगा हुआ था.....

समय धीरे धीरे आगे बढ़ता जा रहा था !

वह तिहत्तरवीं रात थी ।

जाप शुरू होने के बाद लगभग आधा घंटा हुआ होगा जब कक्ष में एक अजीब सी खुशबू जो अष्टगंध की खुशबू से मिलती थी वह आने लगी .....

इसके अलावा कुछ भी अनुभव नहीं हुआ ...

लेकिन उस दिन के बाद मैं जहां भी बैठता मुझे वही अष्टगंध की खुशबू महसूस होती रहती थी .....

ऐसा लगभग चार-पांच दिन तक चलता रहा !

वह खुशबू केवल मुझे महसूस होती थी !

मेरे आसपास के किसी भी व्यक्ति को वह खुशबू महसूस नहीं होती थी.....

यह मुझे ऐसे पता चला कि मैंने उस गहरी खुशबू को महसूस करते हुए क्लीनिक मे आने वाले पेशेंट को पूछा कि क्या तुम्हें कोई खुशबू महसूस हो रही है ?

उसने साफ इंकार कर दिया ।

ऐसा मैंने 8-10 पेशेंट को पूछा ....

लेकिन किसी को भी उस खुशबू का एहसास नहीं हो रहा था ....

अठहत्तरवीं रात को फिर से गहरी खुशबू आई और उसके बाद वह खुशबू अचानक गायब हो गई ।

लगभग दो ढाई घंटे के मंत्र जाप के बाद मुझे अचानक से हाथी के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी ।

यह आवाज वैसी ही थी जैसी मुझे मंदिर में सुनाई दी थी ।

एक क्षण के लिए मैं सोच में पड़ गया कि इस महानगर के बीच में हाथी कहां से आ गया ?

जब ऐसा दो-तीन बार हुआ तो मुझे आभास हुआ कि प्रभु लीला कर रहे हैं !

मैं फिर से सजग होकर मंत्र जाप करने के लिए बैठ गया ।

वह रात उसी प्रकार हथियों की चिंघाड़ के बीच गुजरी ....

हर बार मुझे ऐसा प्रतीत होता जैसे हाथी बिलकुल मेरे बगल मे खड़े होकर चींघाड़ रहा है .....

वह आवाज कभी दाहिनी तरफ से आती थी तो कभी बाएं तरफ से आती थी.....

वह रात भी ऐसे ही गुजर गई ।

उसके अगले दिन मैंने क्लीनिक खोला ।
क्लीनिक खोलने के साथ ही एक पेशेंट महात्रे आ गया । महात्रे पुराना पेशेंट था । जो दो साल से मेरे पास आ रहा था ।
होम्योपैथिक की दवाओं में मरीज की हिस्ट्री का बड़ा महत्त्व होता है । इसलिए अधिकांश होम्योपैथिक डॉक्टर अपने पेशेंट से उसके परिवार उसकी नींद , उसकी चिंताएं आदि के विषय में चर्चा करते हैं ।
इसलिए आप पाएंगे कि होम्योपैथिक डॉक्टर के साथ मरीज अपने आपको ज्यादा जुड़ा हुआ महसूस करते हैं । कई बार तो ऐसा होता है कि वह डॉक्टर के करीबी मित्र या पारिवारिक सदस्य के जैसे हो जाते हैं ।

महात्रे और मेरे संबंध वैसे ही थे । वह आकर कुर्सी पर बैठ गया और उसने लंबी गहरी सांस खींचनी शुरु कर दी.....
पहले तो मुझे लगा कि उसे कोई तकलीफ होगी .....
लेकिन उसके चेहरे से ऐसा लग रहा था जैसे कि उसे कोई तकलीफ नहीं है, बल्कि वो खुश है ।

यह एक आश्चर्यजनक बात थी, क्योंकि अगर सांस की तकलीफ होगी तो आदमी की सांस रुकने से उसे बेचैनी और घबराहट के साथ-साथ तकलीफ का एहसास भी होगा ....

लेकिन महात्रे तो मुस्कुरा रहा था ....

मैंने उससे पूछा- क्या हुआ ?

वह बोला - डॉक्टर साहब आपने अगरबत्ती बड़ी जोरदार लगाई हुई है ।

मैं आश्चर्यचकित सा उसकी ओर देख रहा था .....

वह उसकी तारीफ किए जा रहा था .....

मैं समझ गया कि यह वही खुशबू है जो मुझे पिछले दिनों महसूस हो रही थी ...

और अब वह शायद मुझे नहीं बल्कि दूसरे लोगों को महसूस हो रही है ।

उस दिन आने वाले लगभग सारे पेशेंट ने मुझसे अगरबत्ती की तारीफ की । मैंने उस तारीफ को दिल से स्वीकार किया ।

आने वाले पाँच दिनों तक ऐसी ही स्थिति रही.....

जहां भी मैं बैठता, लोग मुझसे मेरे परफ्यूम की तारीफ करते और उसके बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते ....

लेकिन....

मेरे पास बताने के लिए कुछ नहीं था.... तो मैं गोलमोल जवाब देकर उन्हें संतुष्ट करने की कोशिश करता ....

अगरबत्ती और पर्फ्यूम मिलने की ऐसी जगह बताता जहां वे आसानी से ना पहुंच पाए ।

एक दो लोगों ने मुझे उस की बोतल दिखाने की मांग भी की ....

लेकिन मेरे पास बोतल था ही नहीं तो मैं क्या दिखाता ? इसलिए उनको टरका दिया ।

इसी प्रकार से समय गुजरता चला गया और धीरे-धीरे 88 दिन पूरे हो गए ।

अमृतानंद ने मुझे लाल रंग के मूँगे से बना हुआ गणपति का एक छोटा सा विग्रह भी प्रदान किया था । जिसके सामने बैठकर मैं मंत्र जाप करता था । 88 दिन का मंत्र जाप मेरा पूर्ण हो चुका था और यह मंत्र जाप बिना किसी विशेष परेशानी के निकला था । इसलिए मुझे

ऐसा लग रहा था कि बाकी के बचे हुए दिन भी आसानी से निकल जाएंगे .....

लेकिन ऐसा नहीं हुआ.....

आप अगर किसी कमरे में बैठे हुए हो और आप संवेदनशील हो तो आपको किसी के कमरे में आने का आभास तब भी हो जाएगा जब आप आंख बंद करके बैठे हैं...

इस प्रकार का आभास महिलाओं को बेहद आसानी से हो जाता है ....
अगर वह आंख बंद करके बैठी हुई हो और आप उसके पास पहुंच जाएं....
तो वह तुरंत महसूस कर लेगी कि कोई उसके पास पहुंच गया है .....
वह तो इतनी संवेदनशील होती हैं कि अगर कोई पुरुष किसी स्त्री को कुछ समय तक लगातार देखते रहे तो उसका आभास उसे हो जाता है और वह उसे पलट कर जरूर देखती है.....
यह संभवत: उनके अन्तर्मन की चैतन्यता या छठी इंद्री के कारण आभास होता होगा ।
मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वहां मुझे कोई भी दिखाई नहीं दिया ....
कमरे में मैंने चारों तरफ नजर दौड़ाई ....

लेकिन वहां कोई नहीं था ....

लेकिन.....

किसी अज्ञात उपस्थिति का आभास मुझे होता रहा !

वह पूरी रात उसी प्रकार की स्थिति रही .....

अगली यानि नब्बे वीं रात को जब मैं जाप करने के लिए बैठा तो मुझे वह मूर्ति पहले से बडी दिखाई दी ....

वह मूर्ति लगभग दो इंच लंबी रही होगी ...

वह मूर्ति अब लगभग चार इंच लंबी दिखाई दे रही थी.....

यानी लगभग दो गुना लंबी दिखाई दे रही थी ।

इतना फर्क नजर का धोखा नहीं हो सकता था .....

इसलिए मैंने अपनी आंखों को दोबारा से मसल के देखा.....

मुझे स्पष्ट दिखाई दिया कि वह मूर्ति लगभग दो गुनी ऊंची हो चुकी थी .....

मेरा मंत्र जप प्रारंभ हुआ !

फिर से उसी अज्ञात उपस्थिति का आभास मुझे होने लगा.....

आज की उपस्थिति ज्यादा प्रबलता के साथ महसूस हो रही थी ।

ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरे आस-पास गुजर रहा हो.....

जैसे आप के आस पास से जब कोई व्यक्ति गुजरता है तो आपको एक हल्का सा आभास होता है ....

ठीक वैसा ही आभास मुझे महसूस होता रहता ....

लगभग एक घंटे गुजर जाने के बाद मुझे अपने शरीर पर किसी के स्पर्श का अहसास होने लगा । वह स्पर्श सामान्य स्पर्श नहीं था....

बल्कि थोड़ा खुरदुरा सा स्पर्श था ....

मैं उस स्पर्श को महसूस करके अपने स्थान पर थरथरा जाता था .....

पीछे मुड़कर देखने से कुछ दिखाई नहीं देता था....

लेकिन हर दस पंद्रह मिनट में एक बार मुझे अपने पीठ पर या कंधों पर उस स्पर्श का एहसास होता था ...

यह एहसास बिल्कुल वैसा ही था जैसे जब आप भीड़ में चल रहे होते हैं तो आजू-बाजू से चलने वाले किसी व्यक्ति के शरीर से आपका कंधा बाजू या कोई और

आज की उपस्थिति ज्यादा प्रबलता के साथ महसूस हो रही थी ।

ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरे आस-पास गुजर रहा हो.....

जैसे आप के आस पास से जब कोई व्यक्ति गुजरता है तो आपको एक हल्का सा आभास होता है ....

ठीक वैसा ही आभास मुझे महसूस होता रहता ....

लगभग एक घंटे गुजर जाने के बाद मुझे अपने शरीर पर किसी के स्पर्श का अहसास होने लगा । वह स्पर्श सामान्य स्पर्श नहीं था....

बल्कि थोड़ा खुरदुरा सा स्पर्श था ....

मैं उस स्पर्श को महसूस करके अपने स्थान पर थरथरा जाता था .....

पीछे मुड़कर देखने से कुछ दिखाई नहीं देता था....

लेकिन हर दस पंद्रह मिनट में एक बार मुझे अपने पीठ पर या कंधों पर उस स्पर्श का एहसास होता था ...

यह एहसास बिल्कुल वैसा ही था जैसे जब आप भीड़ में चल रहे होते हैं तो आजू-बाजू से चलने वाले किसी व्यक्ति के शरीर से आपका कंधा बाजू या कोई और

हिस्सा टकराता है और आपको उसका स्पर्श महसूस होता है ...
फर्क सिर्फ इतना था कि यह किसी मानव के स्पर्श जैसा नहीं था बल्कि बहुत खुरदुरा सा और भारी स्पर्श था ।
इसी प्रकार से पूरी रात गुजर गई....

अगले दिन जब मैं मंत्र जाप करने के लिए बैठा तो मैंने मूर्ति की तरफ देखा तो वह अपने वास्तविक आकार में आ चुकी थी ।
मैं आँखें बंद कर जाप कर रहा था । थोड़ी देर में कमरे में कुछ सरसराहट की आवाज आने लगी । मैंने फिर से आंखें खोल कर देखा तो एक छोटा सा चूहा....
लगभग उस मूर्ति के आकार का....
गणेश भगवान के विग्रह के बिल्कुल बगल में आकर बैठ गया और मेरी और टुकुर-टुकुर देखने लगा ।
उसकी छोटी छोटी आंखें खुली हुई थी और वे किसी कैमरे की तरह मुझे देख रही थी ।

मैं कुछ देर तक उन आंखों में देखता रहा और मंत्र जाप भूल गया । कुछ समय के बाद मुझे होश आया और मैंने जाप शुरु कर दिया ।

मेरा जाप चलता रहा और वह उसी प्रकार से गणेश भगवान के बगल मे बैठा रहा ।
जाप करते करते मेरी आंखें बंद हो गई और आंखें बंद करके मैं मंत्र जाप करता रहा .....
जब मैं ने आंखें खोली तो वह चूहा वहां से गायब हो चुका था.....
उसके साथ ही गायब था गणेश भगवान के सामने रखा हुआ बूंदी का लड्डू ....
अजीब बात यह थी कि वह चूहा जो मुश्किल से 2 इंच का था ! उसने लगभग अपने ही आकार के उस पूरे लड्डू को वहां से गायब कर दिया था जो कि स्वाभाविक रूप से स्वीकार करने के योग्य नहीं था !

मुझे समझ में नहीं आया ... कि क्या इतना छोटा सा चूहा इतने बड़े लड्डू को गायब कर सकता है ?
लेकिन वह दृश्य मैं अपने सामने देख रहा था । नेवेद्य यानि प्रसाद रखने वाला पात्र खाली था..... और चूहा वहां से गायब था !!

थोड़ी देर मे फिर से मैंने मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया और अपने जाप में लगा रहा ।

वह रात के लगभग एक बजे का समय रहा होगा जब मुझे फिर से कमरे में सरसराहट की आवाज आने लगी यानी कि वह चूहा दोबारा से प्रकट हो गया था ...
जब मैंने आंख खोल कर देखा तो वह उसी प्रकार से गणेश भगवान के विग्रह की बगल में मेरी ओर देखता हुआ बैठा था ...
मैं भी उसे देखता हुआ मंत्र जाप कर रहा था !
थोड़ी देर के बाद वह लड्डू रखने वाले पात्र मे चढ़ गया और उछल कूद मचाने लगा ....
उसकी हरकतों से ऐसा लग रहा था कि वह और लड्डू खाना चाहता है । गणेश भगवान का वाहन होने के नाते मैंने सोचा कि हो सकता है उसे और लड्डू खाने की इच्छा हो....
मैंने पास रखे हुए मिठाई के डब्बे से एक और लड्डू उठाकर उस पात्र में रख दिया ।
जैसे ही मैंने लड्डू उस पात्र में रखा..... वह गणेश भगवान के बगल में जाकर उसी प्रकार मुझे देखता हुआ बैठ गया ।

जब काफी देर तक उसने कोई हरकत नहीं की तो मैं ने धीरे से अपनी आंखें बंद कर ली और पुनः मंत्र जाप में लीन हो गया.....

लगभग 5 मिनट के बाद मैंने फिर से आंखें खोली तो वह चूहा और लड्डू दोनों गायब थे !

एक ही घटना दो बार नहीं हो सकती थी !

यह मन का भ्रम भी नहीं हो सकता था !!

मुझे समझ में आ गया कि यह वास्तव में हो रहा है!!!

अबकी बार मैंने उसे पता लगाने का निश्चय कर लिया और उसके आने का इंतजार करते हुए मंत्र जाप करने लगा .....

लगभग चार पांच मिनट का समय और गुजरा होगा जब वह चूहा दोबारा से प्रकट हो गया और फिर से उसी प्रकार से बर्तन में उधम मचाने लगा ।

मैं उसकी भावना को समझ गया और फिर से डब्बे के अंदर से एक लड्डू निकालकर उस पात्र में रख दिया ....

तब तक वह चूहा वापस गणेश भगवान के बाजू में जाकर बैठ चुका था और अपनी छोटी-छोटी आंखों से मुझे देख रहा था ।

वह उसी प्रकार से बैठकर मुझे टुकुर-टुकुर ताक रहा था.....

इस बार मैंने थोड़ी चालाकी दिखाने की कोशिश की और अपनी आंखों को बंद करने जैसा दिखाया और उसके बीच में झिर्री बनाए रखा ताकि उसे देख सकूँ ।

लेकिन वह मुझसे चालाक निकला ....

जब तक मैंने झिर्री बनाकर उसको देखने की कोशिश की तब तक वह उसी तरह बैठा रहा !

बिल्कुल नहीं हिला ।

उसकी इस हरकत से मुझे पता चल गया कि वह जानता है कि मैं उसे देख रहा हूं.....

इसलिए वह कोई हरकत नहीं कर रहा है !

यह देख कर मैंने अपनी आंखें बंद कर ली और मुश्किल से चार या पाँच सेकंड बाद अपनी आंखें खोल ली .....

लेकिन तब तक वह लड्डू और वह चूहा दोनों फिर से गायब हो चुके थे ।

उस रात ऐसा 4 बार हुआ और उस डब्बे में रखे हुए बाकी के चारों लड्डू वह ले गया !!!

आखिरी चरण और श्वेतार्क गणपति

अब आखरी के चार दिनों की साधना संपन्न करनी थी.....

जिसके लिए मैंने आवश्यक सामग्री की व्यवस्था कर ली थी ।

इसमें जो सबसे जरूरी वस्तु थी वह थी आक का बना हुआ गणपति का विग्रह । जिसे श्वेतार्क गणपति भी कहते हैं अर्थात एक ऐसा विग्रह जो सफेद आक के पौधे की जड़ों में बनता है । यह प्राकृतिक रूप से बनता है और उस पौधे की जड़ को खोदकर निकालने पर उसमें भगवान गणेश के जैसी आकृति प्रतीत होती है ..... यदि ऐसा ना मिले तो उसकी जड़ को भगवान गणेश के स्वरूप में छीलकर बनाया भी जा सकता है । लेकिन अगर प्राकृतिक रूप से ऐसा मिले तो उसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है ।

उसके विषय मे दो पेज मे जानकारी तथा प्रयोग दिये हुए थे .....

श्वेतार्क को मंदार, आक, अर्क,आकडा और अकौआ भी कहते हैं। यह पौधा जहरीला होता है इस के पौधे

से सफेद दूध निकलता है । इसके पत्ते बरगद के पत्तों समान मोटे होते हैं। इसका फूल सफेद छोटा छत्तादार होता है।

आयुर्वेद संहिताओं में इसकी गणना उपविषों में की गई है। यदि इसका सेवन अधिक मात्रा में कर लिया जाये तो, मनुष्य की मृत्यु हो सकती है । इसके विपरीत यदि आक का सेवन उचित मात्रा में, चतुर वैद्य की निगरानी में किया जाये तो अनेक रोगों में इससे बड़ा उपकार होता है । औषधी में केवल सफ़ेद आक का ही उपयोग करना चाहिए । आक का हर भाग उपयोगी माना गया है।

आक के कुछ वर्ष पुराने वृक्ष की कुछ जड़ें लगभग गणेश जी की आकृति में आ जाती हैं । उसे रवि पुष्य के दिन निकालकर उसे स्थापित करना था । जिसकी विधि भी विस्तार से लिखी हुई थी .... तदनुसार मैंने एक सफ़ेद आक के पौधे को शनिवार के दिन आमंत्रित किया ।

आयुर्वेद और तंत्र साधना के अनुसार पौधा भी एक जीवित जागृत वस्तु है । उसमें से कोई भी चीज लेने के पहले उसकी अनुमति प्राप्त करने के लिए और

से सफेद दूध निकलता है । इसके पत्ते बरगद के पत्तों समान मोटे होते हैं। इसका फूल सफेद छोटा छत्तादार होता है।

आयुर्वेद संहिताओं में इसकी गणना उपविषों में की गई है। यदि इसका सेवन अधिक मात्रा में कर लिया जाये तो, मनुष्य की मृत्यु हो सकती है । इसके विपरीत यदि आक का सेवन उचित मात्रा में, चतुर वैद्य की निगरानी में किया जाये तो अनेक रोगों में इससे बड़ा उपकार होता है । औषधी में केवल सफ़ेद आक का ही उपयोग करना चाहिए । आक का हर भाग उपयोगी माना गया है।

आक के कुछ वर्ष पुराने वृक्ष की कुछ जड़ें लगभग गणेश जी की आकृति में आ जाती हैं । उसे रवि पुष्य के दिन निकालकर उसे स्थापित करना था । जिसकी विधि भी विस्तार से लिखी हुई थी .... तदनुसार मैंने एक सफ़ेद आक के पौधे को शनिवार के दिन आमंत्रित किया ।

आयुर्वेद और तंत्र साधना के अनुसार पौधा भी एक जीवित जागृत वस्तु है । उसमें से कोई भी चीज लेने के पहले उसकी अनुमति प्राप्त करने के लिए और

अपने घर में लाने के लिए उसे आमंत्रण दिया जाता है । चावल और कुमकुम से उसका पूजन किया जाता है । उसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में उसे निकालने की प्रक्रिया संपन्न की जाती है ।

मैंने कॉपी में दिए हुए विधान के अनुसार सफेद आक की जड़ को आमंत्रित किया और रवि पुष्य के अवसर पर उसे निकाल लिया ।

उस पौधे की जड़ काफी लंबी थी और उसमें लगभग छह इंच के आकार का भगवान गणेश का एक स्वरूप बना हुआ था, जिसे मैंने उस मुंगे से बने हुए गणपति के विग्रह के साथ में स्थापित कर दिया और साधना का अंतिम चरण प्रारंभ किया .....

यह चरण पहले की तुलना में थोड़ा जटिल और कठिन था, क्योंकि यह केवल 4 दिन की साधना थी और इसमें साधना का समय एक प्रहर से लेकर चार प्रहर तक बढ़ाना था, अर्थात 3 घंटे से लेकर 12 घंटे तक यह साधना चलने वाली थी । पहले दिन 3 घंटे, दूसरे दिन 6 घंटे, तीसरे दिन 9 घंटे और आखरी दिन 12 घंटे मंत्र जाप करना था ।

साधना में जो सबसे प्रमुख शर्त थी वह यह थी कि आसन पर बैठ जाने के बाद किसी भी परिस्थिति में नहीं उठना है ।

पहले दिन 3 घंटे का समय था !

जो थोड़ी तकलीफ के साथ निकल गया क्योंकि लगभग उतने समय तो मैं रोज बैठता ही था .....

लेकिन अगले दिन जब 6 घंटे बैठना था तब पैर में भयानक पीड़ा होने लगी । ऐसा लग रहा था कि उठ कर भाग जाऊं .....

लेकिन नियमानुसार उठना संभव नहीं था ....

और जब 6 घंटे का जाप पूर्ण हो गया ....

तो.....

मेरा पैर लगभग सुन्न हो चुका था जिसे मैं हिलाने में भी सक्षम नहीं था .....

लगभग दस पंद्रह मिनट के बाद पैर सामान्य हुआ और फिर मैं सो गया ।

दूसरे दिन सात बजे के आसपास मैं बैठ गया.....

मंत्र जप प्रारंभ हो गया !

वह लगभग रात के दस बजे का समय रहा होगा जब मुझे अपने कमरे में गुलाबी रंग का प्रकाश बिखरता हुआ महसूस होने लगा .....

वह प्रकाश सामने रखे हुए उसी मूंगे के बने हुए विग्रह से निकल रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह किसी अज्ञात प्रकाश की वजह से चमक रहा हो !

उस की चमक बढ़ती जा रही थी !

लगभग एक घंटे तक वैसी स्थिति रही और उसके बाद धीरे-धीरे उस प्रकाश की मात्रा घटने लगी..... और साथ ही उस विग्रह का आकार भी छोटा होने लगा.....

घटते घटते वह मुश्किल से आधा इंच का रह गया ।

अभी भी वह उसी प्रकार दिव्य प्रकाश से चमक रहा था । लगभग ग्यारह बजे के आसपास भगवान गणेश का चमकता हुआ वह नन्हा सा विग्रह अपने स्थान से ऊपर उठने लगा .....

मैं यह दृश्य देखकर अवाक रह गया और कुछ देर के लिए जाप करना भूल गया ....

फिर थोड़ा तटस्थ हुआ और मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया ।

वह विग्रह अब काफी छोटा हो चुका था और हवा में लटक रहा था !

कुछ देर के बाद ....

धीरे-धीरे वह मेरी ओर बढ़ने लगा और धीरे धीरे मेरे नाभि क्षेत्र के पास आ गया !

उसकी शीतलता को मैं महसूस कर सकता था.....

क्योंकि वह गुलाबी प्रकाश बेहद सौम्य और ठंडा था !

जैसे ही वह विग्रह मेरे नाभि के पास आया....

मुझे नाभि के पास कोई चीज के घूमने का आभास होने लगा !

ऐसा लग रहा था जैसे मेरा नाभि चक्र घूम रहा हो .....

यह अत्यंत विचित्र सा अनुभव था !

जो मेरे साथ हो रहा था !

यह अनुभव शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता .....

नाभि चक्र के घूमने के साथ मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा.....

जैसे मेरा शरीर हल्का हो रहा हो !

मैं अपने आसन से ऊपर उठने लगा ....

अब वह गणपति विग्रह मेरे नाभि के पास था और मैं अपने आसन से लगभग एक फुट ऊपर उठ चुका था ।

यह एक अत्यंत विचित्र अनुभव था जो मेरे साथ कभी नहीं हुआ था ।
बाद में तो इस प्रकार के अनुभव कई बार हुए .....
लेकिन पहली बार होने की वजह से मैं थोड़ा आश्चर्यचकित था .....
थोड़ा भयभीत ..... और न जाने कैसा कैसा महसूस कर रहा था .....

मैंने पूछा - बाबा !
यह जमीन से इस प्रकार से साधक के ऊपर हवा में उठ जाने का क्या मतलब है ।

उन्होंने बताया - मनुष्य पंच तत्वों से बना हुआ है , भूमि, जल, आकाश, अग्नि और वायु । भूमि तत्व की वजह से हमारा शरीर ठोस होता है और जमीन से टिका हुआ रहता है । देवी शक्तियां त्रिगुणात्मक होती हैं और भूमि तत्व से विहीन होती है, इसलिए उन पर गुरुत्वाकर्षण का प्रवाह नहीं पड़ता और वह जमीन से ऊपर चलती है ....
जिस प्रकार से रेडियो के सिग्नल सर्वत्र बिखरे रहते हैं ....

लेकिन उसकी आवाज हम तभी सुन सकते हैं जब हमारे पास उस सिग्नल को पकड़ने लायक रेडियो हो ।
वैसे ही देवी शक्तियां भी ब्रह्मांड में विराजमान हैं ..... वे सदैव हमारे आस पास विचरण करती रहती हैं ....
उन्हें महसूस आप भी तभी कर सकते हैं जब आप उस फ्रीक्वेंसि या उस स्तर तक पहुंच सके....
अर्थात भूमि तत्व का लोप कर देने से आपका शरीर इस योग्य हो जाता है, कि वह दिव्य शक्तियों के साथ संपर्कित हो सके और उन्हें देख सके .....
यह एक प्रकार से हमारे शरीर का ट्रांसफॉरमेशन कहा जा सकता है.....
जिसके द्वारा हम अपने शरीर को इस योग्य बना लेते हैं कि हम उन अद्वितीय अद्भुत शक्तियों के दर्शन कर सकें जो स्वयं भूमि तत्व से विहीन हैं ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

डोम बाबा आगे बोले - तो मैं हवा में उठा हुआ था और वह विग्रह ठीक मेरे नाभि के सामने हवा में ही स्थित था । उसमें से प्रकाश की किरणें निकलकर मेरी ओर आ रही थी और चारों तरफ बिखर भी रहीं थी .....

कुछ देर के बाद वह बिग्रह धीरे-धीरे मेरे चारों तरफ घूमने लगा ...

यह कुछ कुछ ऐसा था..... जैसे हम परमाणु के अंदर इलेक्ट्रॉन के घूमने को देखते हैं ....

बिल्कुल उसी तरह जैसे वे नाभिक के चारो तरफ घूमते रहते हैं....

उसी प्रकार से वह विग्रह मेरे चारों तरफ गोल गोल घूम रहा था !

ऐसी स्थिति लगभग 5 मिनट तक रही होगी .....

उसके बाद अचानक वह विग्रह और छोटा हो गया .....

मुश्किल से एक तिल के आकार का !

वह अभी भी उसी प्रकार घूम रहा था.....

फर्क सिर्फ इतना था कि उसे देख पाना संभव नहीं था ....

केवल उस गुलाबी प्रकाश के घूमने को देखकर समझ में आता था कि वह प्रकाश वलय उसी के द्वारा छोड़ा जा रहा है ।

वह मेरे चारों तरफ तीव्र गति से घूमने लगा !

अचानक .....

वह विग्रह किसी गोली की तरह उस स्थान पर जाकर टकराया ..... जहां पर मूलाधार की स्थिति कही जाती है !

मुझे ऐसा लगा जैसे वह उस स्थान को चीरकर अंदर घुस गया ।

मैं दिगंबर अवस्था में बैठा हुआ था क्योंकि यह चारों दिन की साधना दिगंबर अवस्था मे हीं करनी थी ।

जैसे ही वह विग्रह मूलाधार वाले स्थान पर प्रवेश कर गया ....

मुझे असहनीय पीड़ा होने लगी !

और मै धम्म से जमीन पर जाकर टिक गया !

ऐसा लगा जैसे मैं ऊपर से नीचे गिर पड़ा हूं !!

मेरे शरीर मे जहां पर वह विग्रह प्रवेश किया था .... उस स्थान पर....

ठीक वैसे ही पीड़ा हो रही थी जैसे चाकू से चीरा लगाने पर होती है !

मुझे वहां से रक्त निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था !

मंत्र जाप अभी भी जारी था.....

दर्द की वजह से कभी-कभी मैं परेशान हो जाता फिर अपने आप को संभालने की कोशिश करता और फिर मंत्र जाप प्रारंभ कर देता ....

पीड़ा बढ़ती जा रही थी !

तभी मैंने देखा कि....

मेरे पाँवों के पास से खून की धारा बह रही है.....

अर्थात मूलाधार में वास्तव में वह विग्रह प्रवेश कर गया था और वहां चोट लगी थी ....

जिसमें से रक्त का प्रवाह हो रहा था .....

कुछ देर में यह स्थिति हो गई कि मैं चारों तरफ से बहते हुए खून के प्रवाह के बीच में बैठा हुआ था .....

मेरे चारों ओर एक बड़ा सा खून का धब्बा बन चुका था !

जिस के बीचो बीच में बैठा हुआ था !

वह प्रवाह उसी प्रकार से धीरे-धीरे करके लगभग एक डेढ़ घंटे तक चलता रहा ।

मेरे शरीर से कम से कम आधा एक लीटर खून बाहर निकल गया होगा ऐसा मुझे लग रहा था ...

मेरे चारों तरफ लगभग एक एक फुट के आसपास गोल घेरा बन गया था जो कि रक्त का था !

मैंने समय देखा लगभग दस मिनट का जाप बचा हुआ था !

मैं फिर से अपनी बची हुई शक्ति को लगाकर जाप में लग गया ....

रक्त बाहर निकल जाने की वजह से कमजोरी लग रही थी ... लेकिन मैं सप्रयास अपना मंत्र जाप जारी रखे हुए था !

जाप करते करते ही मैं कब अपने आसन पर लुढ़क गया ....

मुझे पता नहीं चला.....

नींद में चला गया था या बेहोश हो गया था...

इसका मुझे एहसास भी नहीं हुआ ....

लेकिन.....

स्वप्न में मुझे उसी गणपति विग्रह के दर्शन हुए जो अमृतानंद के साथ गुफा में हुए थे ....

वह आकृति देख कर मन को अत्यंत आनंद की अनुभूति हुई !

गुलाबी रंग के भगवान गणेश की आकृति प्रसन्न मुद्रा में खड़ी हुई थी और उनका हाथ अभय मुद्रा में उठा हुआ था ....

उनके नेत्रों से करुणा की वर्षा हो रही थी ....
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे मंद मंद मुस्कुराते हुए अपनी कृपा दृष्टि मुझ पर डाल रहे हो !
वह दृश्य कुछ क्षणों तक मानस पटल पर रहा जिसे देख लेने के बाद ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि सब कुछ प्राप्त हो गया हो .....
हृदय आनंद से भर गया था !
मैं भाव शून्य स्थिति में आ गया ...
उसके बाद सब कुछ शांत हो गया ।

उस दिन छुट्टी थी और सुबह ग्यारह बजे तक मैं वहीं पड़ा रहा । ग्यारह बजे जब रोशनदान से तेज धूप अंदर आने लगी तब मुझे उसकी गर्मी का एहसास हुआ और मैं उठ कर बैठ गया ....
मैंने देखा कि मेरे चारों तरफ रक्त जम गया था !
मैंने हाथ लगा कर देखा तो मूलाधार वाले स्थान से रक्त का प्रवाह बंद हो चुका था ।
हां !
वहां पर रक्त जमा हुआ जरूर था ....
यह सब देख कर मैं सोच में पड़ गया ।

लेकिन जब भगवान गणेश के श्री विग्रह के दर्शन का ध्यान आया तो मन फिर से प्रफुल्लित हो गया । कपड़ा और पानी लेकर मैंने फर्श पोछा लगाकर साफ किया ...

खून जम चुका था इसलिए उसे घिस घिस कर निकालना पड़ा और इसमें लगभग आधा घंटे का समय लग गया ।

यह सब कर लेने के बाद मुझे लगा कि जो घटना घटित हुई वह वास्तविक थी या नहीं ....

कोई और चीज मेरे शरीर में चुभने की वजह से खून निकल गया हो या खूनी बवासीर जैसा कुछ तो नहीं है ?

यह सोच कर मैंने अपने पूजन स्थान की ओर देखा तो.....

वहां पर मुंगे से बने हुए गणपति का विग्रह मौजूद नहीं था .....

केवल सफेद आक से बना हुआ गणपति का विग्रह वहां पर मौजूद था ।

यह देखकर मुझे समझ में आ गया कि वह गणपति विग्रह मेरे अंदर समाहित हो गया है ।

ये एक अत्यंत ही विचित्र घटना थी !

जैसे ही मैं उठा और उस अलार्म को बंद करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया , चिंघाड़ने की आवाज अपने आप बंद हो गई और उसमें से करर जैसी आवाज जो पहले आती थी वह आने लगी ।

पांच बजे उठकर मैंने स्नान आदि संपन्न किया और तैयार होकर साधना करने के लिए बैठने पर विचार करने लगा ...

जैसे ही मैं उठा और उस अलार्म को बंद करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया , चिंघाड़ने की आवाज अपने आप बंद हो गई और उसमें से करर जैसी आवाज जो पहले आती थी वह आने लगी ।

पांच बजे उठकर मैंने स्नान आदि संपन्न किया और तैयार होकर साधना करने के लिए बैठने पर विचार करने लगा ...

कुंडलिनी रहस्य : शिवोऽहम शंकरोऽहम

मैंने किसी प्रकार का भोजन नहीं किया था और पानी भी नहीं पिया था क्योंकि ज्यादा पानी की मात्रा से पेशाब आने की संभावना रहती और भोजन कर लेने से शौच की आवश्यकता महसूस होती । दोनों ही स्थितियां बारह घंटे तक आसन में बैठने के विपरीत होती और उनकी वजह से उठ कर भागना पड़ता ....

मैं वैसे ही न्यूनतम भोजन पर चल रहा था .... इसकी वजह से मेरा शरीर भी लगभग आधा रह गया था....

लेकिन ऊर्जा 4 गुनी हो चुकी थी । मैं हमेशा प्रसन्न और ऊर्जित अवस्था में रहता था जो कि वास्तव में आश्चर्यजनक स्थिति थी....

लेकिन ऐसा हो रहा था ।

मैंने पूछा - यह कैसे संभव है कि भोजन कम हो जाने के बाद भी ऊर्जा बढ़ जाये ।

बाबा बोले - यह कुंडलिनी जागरण और प्राणमय कोश के माध्यम से संभव है । देखो अघोरानंद , कुंडली के दो चक्र सभी मनुष्यों में जागृत होते हैं । इन्हें आप आंशिक रूप से जागृत भी कह सकते हैं । जो भी चीज हम खाते

हैं उसे पचाकर बाहर निकालने का प्रक्रम हमारा शरीर संपन्न करता है । यह प्रक्रिया मूलाधार चक्र के अधीन है ।

सभी भोजन कर लेते हैं और उसे मल के रूप में परिवर्तित कर लेते हैं, जो की जीवित रहने के लिए आवश्यक है ।

अगर आप भोजन करें और आपका शरीर भोजन में से मिनरल्स और प्रोटीन विटामिन आदि नहीं निकाल पाए .... तो धीरे-धीरे आपका शरीर कमजोर होता जाएगा और समाप्त हो जाएगा ।

उसी प्रकार से अगर भोजन को ग्रहण कर लेने के बाद उसका मल बाहर ना निकल पाए तो वह पेट के अंदर पड़े पड़े सड जाएगा और आप को समाप्त कर देगा ।

यह दोनों ही स्थितियां प्राणघातक है ....

लेकिन....

हमारे शरीर में ऐसा नहीं होता है ।

यदि साधनात्मक भाषा में कहें तो जो भी अन्न हम ग्रहण करते हैं वह हमारे शरीर के लिए आवश्यक होता है , क्योंकि हर मनुष्य अन्नमय कोष में रहता है .... अर्थात उसको जीवन जीने के लिए अन्न ग्रहण करने

की आवश्यकता है । यह भोजन जब पेट में जाता है तो उसके अंदर में से सार तत्वों को शरीर खींच लेता है । उस सार तत्व को शरीर को प्रदान करता है ।
इसे अगर वैज्ञानिक भाषा में कहें तो भोजन में से जो न्यूट्रीएंट ग्लूकोज आदि निकलता है... वह रक्त के माध्यम से शरीर की विभिन्न कोशिकाओं में पहुंचता है और इससे कोशिकाएं जिंदा रहती है और विभिन्न क्रियाएं करती हैं ।

रक्त में इसके साथ में प्राण तत्व अर्थात ऑक्सीजन भी पहुंचता है जो ऊर्जा बनाने के लिए आवश्यक होता है जिससे हमारी कोशिकाएं और हमारा शरीर चलता है ।
आपने स्वयं देखा होगा कि कुछ दुबले पतले लोग रहते हैं उनमे प्राण की प्रधानता होती है, वे ज्यादा चपल रहते हैं अर्थात ऊर्जावान रहते हैं ...
इसके विपरीत जो लोग मोटे तगड़े होते हैं अर्थात जिनमें अन्न की प्रधानता होती है वह थोड़े ढीले ढाले और आलसी होते हैं ।
जिसके अंदर प्राण तत्व ज्यादा रहता है या प्राणशक्ति ज्यादा रहती है वह ज्यादा ऊर्जावान रहते हैं ।

बात मेरी समझ मे आ गयी ...

वर्तमान समय मे इसका एक उदाहरण आप बाबा रामदेव के रूप में देख सकते हैं । वे न्यूनतम आहार पर रह रहे हैं । उसके बावजूद युवाओं से भी ज्यादा तेजी से विभिन्न प्रकार के प्राणायाम तथा आसन कर पाते हैं और रोज टीवी पर दिखाते रहते हैं । यह उनके अंदर की असीमित ऊर्जा का प्रमाण है । जो उनकी प्राण शक्ति की प्रबलता की वजह से दिखाई देती है ।

मैंने डोम बाबा से पूछा - बाबा ! वह गणेश जी का विग्रह मूलाधार मे क्यों प्रवेश कर गया ?

क्या आपका कुंडलिनी जागरण हो रहा था ?

बाबा ने कहा - हाँ ! यह कुंडलिनी जागरण की प्रक्रिया थी..... हमारे शरीर में मूलाधार की स्थिति गुदा भाग और जननांग के बीच में मानी जाती है । हमारे शरीर में कुंडलिनी शक्ति होती है जो मूलाधार में स्थित मानी जाती है और ऊर्जावान होकर हमें पूर्णता प्रदान करती है । इसमें कई चक्रों की स्थिति बताई गई है और इसका प्रारंभ स्थल मूलाधार में है ।

ऐसा माना जाता है कि मूलाधार वाले स्थान पर किसी सर्प की तरह कुंडलिनी शक्ति सुसुप्त अवस्था में पड़ी रहती है ।

मंत्र जाप योग साधना प्राणायाम तथा इसी प्रकार के अन्य क्रियाओं के माध्यम से वह कुंडलिनी शक्ति जागृत होने लगती है ।

यह कुछ कुछ वैसा ही है जैसे पिटारे के अंदर बैठा हुआ सर्प सँपेरे के द्वारा की जाने वाली प्रक्रियाओं से उठ खड़ा होता है ।

जैसे-जैसे यह कुंडलिनी शक्ति शरीर में ऊपर उठती जाती है वैसे वैसे वह व्यक्ति या साधक विशेष क्षमताओं का स्वामी होता जाता है । यह शक्ति मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा चक्र और आगे बढ़ कर सहस्त्रार तक पहुंचती है तो उसे पूर्ण सिद्ध पुरुष माना जाता है । ऐसी स्थिति में आने के बाद साधक यह उद्घोष करता है कि

शिवोऽहम शंकरोऽहम

अर्थात में ही शिव हूं और मैं ही शंकर हूं ।

यह एक ऐसी स्थिति होती है जहां पर साधक और साध्य में कोई भेद नहीं रह जाता और दोनों एक समान हो जाते हैं ।
ऐसी स्थिति दुर्लभ है !
लाखों में किसी एक साधक को ऐसी स्थिति प्राप्त होती है ।

कुंडलिनी के संपूर्ण जागरण से पहले भी कई विशेष प्रकार की घटनाएं होती है....

डोम बाबा आगे बोले - हमारे शरीर में दो चक्र जागृत होते हैं जिसमें से मूलाधार के विषय में मैंने तुमको बताया ।
दूसरा चक्र होता है स्वाधिष्ठान जो हमारे जननेंद्रिय के पास स्थित होता है । यह वह चक्र होता है जो हमें अपने जैसी एक संतान की उत्पत्ति करने में सक्षम बनाता है ..... अर्थात प्रजनन की क्रिया के योग्य बनाता है ।
सामान्यतः सभी मनुष्यों में अपने जैसी एक और संतान को उत्पन्न करने की क्षमता मौजूद रहती है यह स्वाधिष्ठान चक्र के जाग्रत होने की वजह से होता है ।

यह दोनों चक्र कमर के नीचे के हिस्से में होते हैं और आध्यात्मिक भाषा में कमर के नीचे के हिस्से को अधोगति वाला मार्ग माना जाता है जिसमें हम अपनी उर्जा को नीचे की ओर या बाहर निकाल देते हैं और उससे हमारा आध्यात्मिक विकास नहीं होता है ...

जो चक्र हमारे कमर के ऊपर हैं.....
वह हमें आध्यात्मिक यात्रा में ऊपर की ओर बढ़ाते हैं ।
इसमें पहला चक्र है मणिपुर चक्र जो नाभि में माना जाता है । यह शरीर में अमृत तत्व उत्पन्न करता है अर्थात उसे जीवित रहने की क्षमता प्रदान करता है । जब शिशु गर्भस्थ होता है तो नाभि के माध्यम से ही उसके शरीर में अमृत तत्व अर्थात जीवन को आगे बनाए रखने और विकसित करने के लिए आवश्यक तत्व पहुंचता है । उसी की सहायता से वह विकसित होकर एक स्वस्थ बच्चे के रूप में बाहर निकलता है ।
इसके बाद अनाहत चक्र है । जो हृदय पक्ष को खोलता है । जिसे हृदय कमल भी कहा जाता है और वहीं पर देवी शक्तियों की स्थापना होती है ।

इसके बाद कुंडलिनी आगे बढ़ते हुए विशुद्ध चक्र पर पहुंचती है । जब कुंडली इस चक्र पर पहुंचती है तो वह साधक बहुत अच्छी भाषा में अपने विचारों को व्यक्त कर पाता है और विभिन्न विषयों पर बोलने में सक्षम हो जाता है । इस चक्र में पहुंचने पर विभिन्न प्रकार की जानकारियों का अपने आप साधक में समावेश हो जाता है । वह जिस विषय पर बोलना चाहे बोल लेता है ।

इसके बाद आज्ञा चक्र आता है ...

जहां पहुंचने के बाद उसके अंदर शिवत्व आना प्रारंभ हो जाता है और वह प्रभावशाली और विराट व्यक्तित्व का स्वामी बनने लगता है ।

दरअसल हमारे शरीर मे तीन प्रमुख नाड़ियाँ मानी गयी हैं ।

इडा

पिंगला

सुषुम्ना

सर्पाकार चलने वाली यह तीनों नाडिया जिन स्थानों पर आपस में मिलती है उसे ही हम चक्र कहते हैं ....

इस कुंडलिनी यात्रा का अंतिम चक्र सहस्त्रार है ....

जहां पहुंचने के बाद व्यक्ति को पूर्ण कहा जाता है .....

मैंने पूछा - यह क्रिया पूर्ण होने मे कितना समय लग जाता है ? क्या इसे स्त्री पुरुष कोई भी जागृत कर सकता है ?

बाबा बोले - कुंडलिनी जागरण का प्रयास कोई भी स्त्री या पुरुष कर सकता है, लेकिन कुंडली जागृत करने के लिए कई वर्ष लग सकते हैं, और कई जन्म भी लग सकते हैं । एक जन्म मे कुंडलिनी जितनी जागृत हो जाती है उसके आगे की यात्रा अगले जन्म मे सम्पन्न होती है ।

यह साधक की क्षमता और उसके गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान के ऊपर निर्भर करता है कि वह कितने समय में साधनात्मक रूप से इन चक्रों को पार कर के ऊपर निकल पाता है । इसका कोई फिक्स समय नहीं है । यह पूर्णत: साधक की मेहनत और क्षमता पर ही निर्भर करता है ।

मैंने पूछा - क्या इसका कोई अन्य उपाय नहीं है ?

बाबा बोले - कई प्रक्रियाओं के माध्यम से कुंडलिनी जागरण संभव है । सबसे विचित्र प्रक्रिया तिब्बत के

मंदिर जिन्हे गोम्पा भी कहा जाता है वहाँ कुछ विशेष लामाओं के द्वारा संपन्न की जाती है...

उन तिब्बती गोम्पाओं में जो लामा रहते हैं वह अपने शिष्यों को एक विशेष प्रक्रिया के द्वारा कुंडलिनी जागरण में आगे बढ़ा देते हैं । इसके लिए वे दोनों भौंह के बीच में अर्थात आज्ञा चक्र वाले स्थान पर एक सोने की पतली कील को अंदर घुसा देते हैं और यह प्रक्रिया विशेष तांत्रिक प्रयोगों के माध्यम से की जाती है ।
इसमे भयंकर पीड़ा होती है । इस प्रक्रिया मे कुछ हफ्तों का समय लगता है और इस प्रक्रिया के पूर्ण होते ही उस साधक का आज्ञा चक्र जागृत हो जाता है ।
इसी प्रकार से एक और प्रक्रिया संपन्न की जाती है जिसके तहत ब्रह्मरंध्र अर्थात वह जगह जहां पर छोटे बच्चों का सिर धड़कता हुआ प्रतीत होता है ...
उस स्थान पर कुछ विशेष मंत्रों और तांत्रिक प्रक्रियाओं के द्वारा इसी प्रकार से सोने की कील को डाल दिया जाता है । जिसके कारण उसका पूर्ण कुंडलिनी जागरण संपन्न हो जाता है और वह सिद्ध पुरुष बन जाता है ।
इस प्रकार की प्रक्रिया संपन्न होने पर आज्ञा चक्र वाले

स्थानों पर या ब्रह्मरंध्र में एक घूमड सा निकल जाता है अर्थात वह स्थान फूल जाता है । जो समय गुजरने के साथ सामान्य होता जाता है, लेकिन जब भी साधना संपन्न की जाती है, कोई उच्च कोटि की क्रिया संपन्न की जाती है तो वह स्थान फिर से उसी प्रकार दिखाई देने लगता है ।

यह सारी प्रक्रियाएं अत्यंत उच्च कोटि के साधकों और गुरुओं के द्वारा संपन्न की जाती है । उनमे से कई तो सैकड़ों वर्षों की आयु प्राप्त योगी हैं । जिन्होंने काल पर विजय प्राप्त कर ली है । इसके लिए कई वर्षों की तपस्या लगती है । यह सामान्य साधकों के बस की बात नहीं है ।
यह प्रक्रिया केवल तिब्बत के उन रहस्यमय गोम्पाओं में ही संपन्न की जा सकती है, क्योंकि वहां का मौसम और वहां की भौगोलिक स्थिति तथा वहाँ की तांत्रिक ऊर्जा इस प्रकार की क्रियाओं को करने की क्षमता और परिस्थितियां दोनों प्रदान करता है ।

मेरे मन मे विचार आया - इतनी अद्भुत शक्तियों के स्वामी होने के बावजूद चीन ने तिब्बत पर कब्जा कैसे कर लिया ।

बाबा हंस पड़े !
जैसे उन्होंने मेरे मन को पढ़ लिया और बोले - जिन गोंपाओं की मैं बात कर रहा हूं वहां पर जाना सामान्य मानव के लिए संभव नहीं है, क्योंकि उसको तो वह दिखाई ही नहीं देते । हमारी आंखें तीन ही आयाम देख सकती हैं अर्थात लंबाई चौड़ाई और गहराई ।
हमने कई उपकरण बनाया है जो अन्य आयामों को देख सकती है, उदाहरण के लिए एक्सरे की मशीन के द्वारा शरीर के अंदर तक देख सकते हैं । जो कि सामान्यत: हमारी आंखों के द्वारा संभव नहीं है । ऐसा ही सोनोग्राफी की मशीन के द्वारा गर्भस्थ शिशु की हलचल देखना भी संभव है । आजकल इन मशीनों के कई प्रकार के आधुनिकतम स्वरूप आ गए हैं जो सारे शरीर को अंदर से खंगाल कर एक एक चीज बता देते हैं .... इसे भी हम एक नया आयाम समझ सकते हैं ।

हम रात में नहीं देख सकते, लेकिन कुछ ऐसे नाइट विजन कैमरा मौजूद हैं जिनके द्वारा रात में देखा जा सकता है ।
इसे भी हम दृष्टि का एक नया आयाम कह सकते हैं ।
कई प्रकार की विशेष तकनीक से बने हुए राडार हैं जो अंधेरे में या कई सौ किलोमीटर की दूरी से भी उड़ते हुए जहाज को या राकेट को देख सकते हैं ।

कई ऐसे रेडार भी हैं जो अनंत ब्रह्मांड की गहराइयों में छुपे हुए दूरस्थ ग्रहों को या अकाश गंगाओं को देखने या उसकी फोटो खींचने में सक्षम है ।
इसे भी हम एक अलग आयाम कह सकते हैं ।

इस ब्रह्मांड में कई प्रकार के आयाम है और इसी प्रकार के एक अन्य आयाम में वे गोम्पा स्थित है । जहां पर पहुंचने के लिए उच्च कोटि का साधक होना जरूरी है । चीन की सेना तो वहां कभी पहुंच ही नहीं सकती । वह किसी भी रडार या वैज्ञानिक उपकरण के द्वारा खोजे जाने की स्थिति में नहीं है ।
वह केवल मानसिक शक्तियों से देखी जा सकती हैं ।

वह गोम्पा आज भी विद्यमान है और उसमें अद्भूत योगी तथा साधक मौजूद है । जो श्रेष्ठ साधक होते हैं, उनको वह आज भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से मार्गदर्शन प्रदान करते हैं । उनको साधनात्मक रुप से आगे बढ़ाने में सहयोग करते रहते हैं ।

यह सब सुनकर मैं आश्चर्यचकित था !!!

सौन्दर्य का तांडव

शाम को मैं साधना करने के लिए बैठ गया !
बैठते ही साथ मूलाधार के जिस स्थान पर उस विग्रह का प्रवेश हुआ था, वहां स्पंदन प्रारंभ हो गया । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वहां से कोई चीज ऊपर उठने की कोशिश कर रही हो । लगभग दो-तीन घंटे तक ऐसा ही चलता रहा । रात के लगभग नौ या साढ़े नौ बजे के आसपास मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे वहां से कोई चीज धीरे-धीरे रीड की हड्डी में ऊपर की तरफ उठती जा रही है .....
वह उठती हुई मेरे गर्दन के पास तक पहुंच जाती थी ....
उसके बाद फिर एक लहर नीचे से उठती थी और उसी प्रकार से गर्दन के पीछे तक पहुंच जाती थी .....
ऐसा लगभग एक डेढ़ घंटे तक होता रहा !
वह किसी विद्युत ऊर्जा के जैसी अनुभूति थी !
एक झटके जैसा लगता था और ऊपर की ओर सरसराहट के बढ़ने जैसा आभास होता था ।
धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता गया ।

रात के साढ़े ग्यारह बजे का समय रहा होगा वह अनुभव तीव्र होता चला गया.....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह छोटा वाला विग्रह रीड की हड्डी के अंदर ऊपर नीचे चल रहा है.....

ऐसा मुझे स्पष्ट आभास हो रहा था कि वहां कोई चीज ऊपर नीचे हो रही है ।

यह स्थिति रात के बारह बजे तक रही होगी । उसके बाद में ध्यानस्थ अवस्था में चला गया.....

फिर मुझे समय का बोध नहीं रहा !

जब बोध आया तो उस समय सुबह के चार बज रहे थे । जब मैं ने आंखें खोली तो कमरे में अष्टगंध की खुशबू फैली हुई थी ....

बेहद मादक !

बेहद आकर्षक और मन मोहने वाली खुशबू ....

मेरे सामने खड़ी थी..... एक अनन्य सुंदरी !

जिसका हर अंग सौंदर्य के मापदंडों पर खरा उतरने वाला था...

सुंदर सुडौल पाँव !

कदली स्तंभ के समान दिखने वाली जंघाएं !

विस्तृत नितंब क्षेत्र !!

पतली कमर !!

उभरे हुए वक्षस्थल !!!

केवल एक झीनी साड़ी में अपने आप को समेटे हुए...

जिसमें से बहुत कुछ दिखाई दे रहा था ।

उसका चेहरा भी उसके शरीर के समान ही अत्यंत सुंदर और आकर्षक था !

गुलाब की पंखुड़ियों के जैसे उसके गुलाबी होंठ थे....

सुतवा नाक के ऊपर दो कमल की पंखुड़ियों के समान नेत्र कमानीदार भौंह के साथ शोभायमान हो रहे थे !

उसे देख कर मैं मंत्र जाप करना भूल गया और एक टक उसकी ओर ताकता रहा.....

उसके जैसी खूबसूरत महिला मैंने आज तक नहीं देखी थी ।

उसकी आयु मुश्किल से 18-20 साल की लग रही थी ।

वह मेरी ओर मादक निगाहों से देख रही थी और उन निगाहों के सम्मोहन में जकड़ा हुआ मैं उसी की आंखों में ताक रहा था ।

तभी...

उसने एक मादक सी अंगड़ाई ली और मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया....

मैं उसके सम्मोहन में इतना जकड़ चुका था कि मुझे उठने की इच्छा होने लगी .....

वह तब तक मुड़ कर दो कदम चल चुकी थी । उसके शरीर के अंगो का हिलना डुलना किसी भी पुरुष को उसके पीछे चलने के लिए विवश करने में सक्षम था ...

और मैं भी कोई अपवाद नहीं था ।

मैं अपने आसन से उठने वाला था कि तभी सामने रखे हुए गणेश भगवान के आक के विग्रह पर मेरी दृष्टि पड़ी ....

वह सफेद रंग का विग्रह बिल्कुल सुर्ख नारंगी रंग का हो चुका था !

ठीक वैसे ही जैसे कोई जलता हुआ अंगारा हो !!

उसे देखते ही मेरे मानस पटल पर साधना के उस कॉपी में लिखी हुई बात याद आ गई कि किसी भी स्थिति में मंत्र जाप पूर्ण किए बिना अपने आसन से नहीं उठना है ..... वरना गंभीर दुष्परिणाम होंगे ....

मुझे एक झटका सा लगा !

मैं अपना विचार त्याग कर उस आसन पर फिर से जमकर बैठ गया ।

दो कदम और आगे बढ़ कर उसने फिर से पलट कर देखा ....

मुझे उसी प्रकार अपने आसन पर बैठा हुआ देखकर उसके चेहरे पर विचित्र से भाव उभरे .....

जैसे उसे इस बात की उम्मीद नहीं थी ।

इसके बाद तो जैसे उसने मन मे ठान लिया हो कि इसे आज नहीं छोडना है ....

उसके बाद सौंदर्य का तांडव उस कमरे मे चालू हो गया ...

वह युवती विभिन्न प्रकार की भाव भंगिमाओं और मुद्राओं के साथ मेरे इर्द-गिर्द घूमती रही....

कभी वह मेरे सामने आकर बैठ जाती.....

तो कभी अपने आंचल को जानबूझकर ढलका देती.....

इस प्रकार की अनेक गतिविधियां चलती रही !

मैं बड़ी मुश्किल से अपने आप को नियंत्रित करता हुआ उस आसन पर बैठा रहा ....

यह सब कुछ आधे घंटे तक चलता रहा !
जब उसे ऐसा लगा कि मैं प्रभावित नहीं हो रहा हूं तो वह बिल्कुल निर्वस्त्र अवस्था में आ गई !
उसके बाद उसने ऐसी ऐसी मुद्राएं दिखाई जो खजुराहो के शिल्प कला को भी मात दे दे ।
सौभाग्य बस यह था कि वह एक निश्चित दूरी पर ही यह सब कर रही थी...
अगर स्पर्श हो जाता तो शायद मैं नियंत्रण नहीं कर पाता ....
मैंने कस कर अपनी आंखें बंद कर ली और मंत्र जाप करता रहा .....
लगभग 10-15 मिनट का समय और बीत गया होगा, जब कमरे में किसी प्रकार की हलचल का आभास बंद हो गया ।
जब कुछ समय गुजरा तो मैंने धीरे से आंख खोलकर देखा तो वह युवती वहां से गायब हो चुकी थी .....
मैंने राहत की सांस ली ....

दिव्य दर्शन

लगभग पाँच बजे के आसपास मेरा कमरा हाथियों की चिंघाड़ से गूंज उठा । ऐसा लग रहा था जैसे हाथियों का पूरा दल मेरे कमरे में घुस आया हो और एक साथ चिंघाड़ रहा हो ...

दस पंद्रह सेकंड तक ऐसा हुआ ....

उसके बाद मेरा कमरा गुलाबी रंग के प्रकाश से जगमगाने लगा ....

सामने प्रत्यक्ष हो चुके थे...

गणों के अधिपति....

गणाध्यक्ष.....

प्रथम पूज्य...

विघ्नकर्ता...

विघ्नहर्ता.....

भगवान श्री गणेश !!!!

उनके साथ विराजमान थी उनकी शक्ति ..... उनकी आंखों में करुणा छलक रही थी और उनका दाहिना हाथ वरद मुद्रा में उठा हुआ था ।

विशालकाय शरीर गुलाबी रंग से जगमगा रहा था !
ठीक वैसी ही आभा उनकी शक्ति के शरीर से भी निकल रही थी !
स्वर्ण के मुकुट से उनका सिर सजा हुआ था और पूरे शरीर में स्वर्ण आभूषण लदे हुए थे .....
अद्भुत अनिर्वचनीय शब्दों से परे का वह दृश्य मेरे सामने था.....
मैं साष्टांग दंडवत मुद्रा में जमीन पर लेट गया !
फिर से वही हाथी की चिंघाड़ सुनाई दी !!
मेरे सिर पर एक कठोर सा स्पर्श महसूस हुआ !
प्रभु ने सिर पर संभवत: अपनी सूंड से स्पर्श किया था ....
जिसे मैं महसूस कर पा रहा था ! उन्होंने उसी सूंड से मुझे पकड़ कर खड़ा कर दिया .....
मैं हाथ जोड़े खड़ा था .....
मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे !
मैं निशब्द था.....
जिस अनुभव से मैं गुजर रहा था ..... वहां पर वाणी भाव सब कुछ स्तंभित हो चुका था !

यह स्थिति एक दो सेकंड तक रही होगी उसके बाद उनका वह दिव्य स्वरुप विलुप्त हो गया ।
वह आक का विग्रह जो सफेद रंग का था वह गुलाबी रंग का हो चुका था .....
वह आज भी मेरे पास है..... वैसा ही गुलाबी ...
फिर उन्होने अपने झोपड़ी के एक खंबे की ओर इशारा किया .....
मैंने उधर देखा तो वहाँ मौजूद था गुलाबी रंग का वह एक जड़ से बना हुआ लगभग गणेश भगवान के स्वरूप वाला विग्रह ...
मैंने उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया ....

इतना कहकर बाबा रुके और उन्होंने लोटे से जल पिया और मेरी ओर देखा ।
मैं सम्मान आश्चर्य और ना जाने किन किन भावों के मिश्रण के साथ उनको देखता हुआ बैठा था .... और अपने भाग्य पर गर्व कर रहा था कि ऐसे अद्भुत साधक का सानिध्य मुझे प्राप्त हो सका है .....

शिव क्षेत्र : वाराणसी और बाबा भेरुंडनाथ

बाबा ने कहा - उसके बाद मेरे व्यक्तित्व मे गज़ब का परिवर्तन आ गया ।

बैठे-बैठे मेरा ध्यान लग जाता था ....

कई प्रकार के चित्र विचित्र दृश्यों के दर्शन होते थे ।

कभी देवी देवता दिखाई देते थे !

कभी अद्भुत अकल्पनीय प्राकृतिक दृश्य दिखाई देते थे !

नदियां समुद्र और पर्वतों के अलावा घने जंगल और कई गुफाएँ भी दिखाई देती थी !!

उनमें मैं अलग-अलग स्वरूपों में अपने आप को पाता था !!!

बाद में मुझे पता चला कि वह मेरे पूर्व जन्मों में किए गए साधना स्थलीयों का आभास था ....

कुछ दिन के बाद स्वप्न में गुरुदेव के दर्शन हुए और निर्देश मिला कि वाराणसी जाना है । मैं वहां से वाराणसी के लिए निकल पड़ा ।

वाराणसी पहुँच कर मैंने एक लॉज मे कमरा ले लिया .....

वाराणसी यानि बनारस यानि काशी भगवान शिव का क्षेत्र है । ऐसा माना जाता है कि काशी में मृत्यु होने या

काशी में अंतिम संस्कार होने से शिव धाम की प्राप्ति हो जाती है ....

जिसे मोक्ष भी कहा जाता है .....

बनारस में मणिकर्णिका घाट है !

जहां पर निरंतर चिताओं का जलना जारी रहता है । एक के बाद एक शव आते रहते हैं ...

चिता निरंतर जलती रहती है !

उसे जीवित जागृत श्मशान कहा जाता है !

मैं मणिकर्णिका घाट की सीढ़ियों पर बैठा हुआ था .....

तभी....

लगभग पच्चीस तीस वर्ष की एक युवती मेरे पास आई । उसने काले रंग के कपड़े पहने हुए थे .... गाउन के जैसा एक वस्त्र जो गले से पांव तक लंबा था ....

वह स्वयं भी गहरे काले रंग की महिला थी !

उसके गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी हुई थी और साथ में कुछ और चित्र विचित्र प्रकार के मनको की माला भी थी ।

वह मेरे बगल में आकर बैठ गई !

मैं उससे थोड़ा दूर खिसक कर बैठ गया ...
इसे देखकर वह मेरी ओर और खिसक कर बैठ गई ...
मेरी झिझक और बढ़ गई और मैं उठ कर खड़ा हो गया.....
जिसे देखकर वह जोर से खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली - इतनी दूर भागोगे तो साधना कैसे करोगे ? यहां साधना करने आए हो या भागने आए हो ।
यह सुनकर मैं आश्चर्य में पड़ गया कि उसे कैसे पता चला कि मैं यहां साधना करने आया हूं ?
मैंने मन ही मन सोचा -- बाबा की लीला बाबा ही जाने ....
मैं उसकी ओर देखता हुआ खड़ा था.....
उसने कहा - तुम्हारी आगे की साधना का समय हो गया है .....
शाम को मैं तुम्हें यहीं पर मिलुंगी ...
ठीक 6:30 बजे यहीं पर पहुंच जाना !
इतना कहकर वो चली गई !
यह थी नंदिनी से मेरी पहली मुलाक़ात .....

मेरे लिए यह सब कुछ एक अजीब से सपने जैसा था .... क्योंकि एक अनजान स्थान पर एक अनजान स्त्री ने आकर मुझे ऐसा कहा था !

बनारस मैं अपने जीवन में कभी नहीं गया था !

पहली बार बनारस आया था !!

वहां पर एक स्त्री मुझसे इस प्रकार की बात कर रही थी और उसे यह मालूम था कि मैं यहां साधना करने आया हूं ...

इस बात से मुझे आश्चर्य हो रहा था ।

मैं आगे होने वाली घटना के विषय में सोचता हुआ लगभग एक घंटे तक वही बैठा रहा !

उसके बाद वापस अपने लॉज में चला गया ....

लॉज में पहुंचने के बाद भोजन करके मैं गहरी नींद में सो गया । लगभग 5:30 बजे के आसपास मेरी नींद खुली और मैं उठकर तैयार हुआ और वापस घाट की ओर निकल गया ।

घाट पहुंचते-पहुंचते मुझे छह बज चुके थे । कई प्रकार के साधू सन्यासियों का आना जाना चल रहा था, लेकिन वह युवती मुझे दिखाई नहीं दे रही थी । ऐसा मेरे

साथ पहली बार हो रहा था इसलिए मुझे लगा कि कहीं उसने मुझे बेवकूफ तो नहीं बना दिया.....

जो भी हो 6:30 बजे तक इंतजार करने का निर्णय लेकर मैं वही सीढ़ियों पर बैठा रहा ....

टाइम पास करने के लिए चाय से बढ़िया विकल्प कोई दूसरा नहीं होता है ...

मैं चाय की चुस्की लेता हुआ बैठा था ...

तभी अचानक मेरे बगल में वह प्रकट हो गई और बोली - मेरी चाय कहां है ?

मैंने तुरंत उसके लिए भी चाय ली ।

चाय खत्म होने के बाद वह उठी और मुझे साथ चलने का इशारा कर एक ओर चल पड़ी .....

उसने पीछे मुड़कर एक बार भी नहीं देखा ।

वह ऊपर जाती सीढ़ियों की ओर चल पड़ी मैं झिझकता हुआ खड़ा था कि उसके साथ जाऊं या नहीं जाऊं ....

तब तक वह आखिरी सीढी तक पहुंच चुकी थी, मेरे लिए यह एक अनजान शहर था....

अगर वह मेरी नजरों से ओझल हो जाती तो शायद मैं उसके पीछे नहीं जा पाता .....

उसके लक्षणों से ऐसा नहीं लग रहा था कि वह मेरे लिए रुकने वाली है ...

आखरी सीढी चढ़कर जब वह पार हो गई तो मुझे लगा कि ऐसे में तो वह मुझसे छूट जाएगी !

मैं भागता हुआ सीढ़ियां चढ़ने लगा और उसके पीछे पीछे चल पड़ा ...

बनारस की गलियां ऐसे ही विश्व प्रसिद्ध है । उन्हीं रहस्यमय गलियों से होते हुए वह आगे बढ़ती जा रही थी ...

मैं उसके साथ साथ चल रहा था !

मैंने उससे कई बार पूछने की कोशिश की, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया जिसके बाद मैंने पूछना छोड़ दिया और शांत होकर उसके साथ साथ चलने लगा ।

रास्ते में चलने वाले कई लोगों उसे झुककर प्रणाम कर रहे थे । यह देखकर मुझे लगा कि यह कोई सिद्ध महिला होगी । इससे मेरा अविश्वास थोड़ा सा कम भी हुआ और मैं थोड़ा संतुलित होकर उसके साथ साथ चलने लगा ।

जब हम एक पतली सी गली में गुजर रहे थे तो वह अचानक एक दरवाजे से अंदर घुस गई । मैं कुछ देर

बाहर खड़ा रहा फिर मैं भी अंदर चला गया । जब मैं अंदर गया तो वहां पर कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था । मैंने सारे कमरे देख लिया लेकिन सारे खाली थे । आखरी कमरे के बाद एक सीढी नीचे की तरफ जा रही थी ...

मैंने सोचा कि संभवतः वह नीचे गई होगी.....

मैं सीढ़ियां उतरने लगा ।

वे सीढ़ियां करीब-करीब पचास की संख्या में रही होंगी । पुराने ढंग की बनी हुई वे सीढ़ियां कम से कम दो तल्ले की ऊंचाई की जरूर रही होगी.....

यानी मैं उतना नीचे आ चुका था ।

जहां सीढ़ियां खत्म हुई वह एक तहखाना नुमा कमरा था । कमरे की छत पर सीलन जमी हुई थी जैसा कि आमतौर पर गीली जगहों पर होता है । दीवार पत्थर की बनी हुई थी और उन में नमी स्पष्ट दिखाई दे रही थी ....

डोम बाबा बोले - कमरे के अंदर रोशनी के लिए एक पीले रंग का बल्ब जल रहा था ...

जो शायद 25 वाट का रहा होगा ... क्योंकि उसकी बिल्कुल मरियल सी पीली रोशनी बड़ी मुश्किल से उस कमरे में फैले हुए अंधकार को मिटा पा रही थी.....

उस कमरे में कोई चीज नहीं रखी थी .....
केवल बीचों बीच एक चबूतरा बना हुआ था जो लगभग 10 फुट लंबा और 6 फुट के आसपास चौड़ा था । वहां भी कोई मौजूद नहीं था । देख कर मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि मैंने अपनी आंखों से नंदिनी को उस कमरे के अंदर घुसते हुए देखा था .....
लेकिन वह गायब थी उस तहखाने में बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं था .....
केवल वही सीढ़ियां थी जो उस तहखाने तक आती थी !
मैंने सारी दीवारों को पास जा जाकर देखा लेकिन कहीं भी बाहर निकलने का रास्ता नहीं था ....
उस कमरे में वह कहीं भी मौजूद नहीं थी !
मैं फिर से दुविधा में पड़ गया कि अब क्या होगा ?
पांच दस मिनट तक मैं उसी प्रकार खड़ा रहा .....
उसके बाद मुझे लगा कि शायद वह कहीं और चली गई होगी...
मुझे वापस जाना चाहिए ।
तो मैं सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगा !!!

तभी पीछे से आवाज आई - कहाँ जा रहे हो ?

मेरे पांव काँप रहे थे....
जिस कमरे मे कोई नहीं था उस कमरे से आवाज कैसे आ रही है ?
हैरानी और दहशत के साथ मैंने पीछे मुड़ कर देखा !
उसी चबूतरे पर बैठी थी नंदिनी !!

उसने मुझे वापस बुलाया और मेरे पहुंचने के बाद वह मुझे लेकर एक दीवार की ओर बढ़ गई । जैसे ही वह दीवाल के पास पहुंची .....
वह दीवार सरकने लगी और वहां एक दरवाजा बन गया .....
दरवाजे के आगे गलियारा था जो काफी लंबा दिखाई दे रहा था । वह मुझे लेकर उस गलियारे से आगे बढ़ती गई। कुछ दूर जाने पर फिर सीढ़ियाँ चढ़कर वहां से जब हम बाहर निकले तो हम एक छोटे से आश्रम में पहुंच चुके थे जो गंगा नदी के तट पर था ।
वहां कई झोपड़ियाँ बनी हुई थी और बीच की जगह पर एक काले वस्त्र पहना हुआ तांत्रिक !
जो संभवत: उन सभी का गुरु होगा ...वह बैठा हुआ था और कुछ तांत्रिक क्रियाएं समझा रहा था ।

झुककर नंदिनी ने उसे प्रणाम किया !
उसे देखकर मैंने भी उसे प्रणाम किया !!
वह मुस्कुराया और बोला - आओ डॉक्टर, आओ !
तुम इस चक्कर में कहां पड गए !

उसकी बात सुनकर मुझे लगा कि कुछ गड़बड़ तो नहीं हो गई है ....
कहीं मैं गलत जगह तो नहीं आ गया ।
मेरी दशा देखकर वह खिल खिलाकर हंस पड़ा और बोला - गुरूजी भी पता नहीं कहां-कहां से, कैसे कैसे लोगों को पकड़ लाते हैं, और इन सब की जिम्मेदारी हम को संभालनी पड़ती है ।

इतना कहकर वह मुड़ कर बैठ गया और अपने काम में लग गया । यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने नंदिनी की तरफ देखा !
नंदिनी ने आंख दबाकर इशारा किया कि शांत रहो ।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि यह व्यक्ति नहीं चाहता है कि मैं वहां पर रहूं ।
यह मेरे लिए एक अपमानजनक बात थी !

डॉक्टर का पेशा ऐसा होता है कि उसको हमेशा सम्मान मिलता है । मरीज हमेशा किसी भी डॉक्टर से सम्मानजनक भाषा में ही बात करते हैं, इसलिए डॉक्टर को इसी प्रकार के व्यवहार की उम्मीद हो जाती है..... मुझे भी थी.....

उस तांत्रिक के द्वारा कही गई बात मुझे अपमानजनक लगी लेकिन नंदिनी के इशारे को समझकर मैं शांत हो गया ।

मन ही मन गुस्सा तो आ ही रहा था ....

थोड़ी देर बाद फिर बाबा बोला - गुस्सा आ रहा है क्या डॉक्टर ?

तू मेरा कुछ उखाड़ लेगा क्या ?

गुस्सा किसको दिखा रहा है ?

वह जैसे मुझे गुस्सा दिलाने के भरपूर प्रयास में था । वह चुन चुन कर चोट कर रहा था ....

उसकी बातें सुनकर मेरे अंदर गुस्से की मात्रा बढ़ती जा रही थी , लेकिन वहां तांत्रिक और उसके शिष्यों की संख्या काफी ज्यादा थी ।

ऐसी स्थिति में अनजान जगह पर उससे उलझना ठीक नहीं था । इसलिए मैंने सोचा कि मैं यहां से वापस लौट जाता हूं .....

यह सोचकर जैसे ही मैंने पलट कर चलने की कोशिश की....

तो मुझे पता चला ....

कि वह तांत्रिक क्या चीज है .....

मैं उस स्थान से पीछे मुड़ भी नहीं पाया, क्योंकि मेरे पांव जैसे जमीन पर चिपक गए थे ।

इसे तंत्र की भाषा में स्तंभन कहते हैं । स्तंभन का मतलब होता है रोक देना । कई प्रकार के स्तंभन होते हैं । इसमें से एक गति स्तंभन होता है यह वास्तव में एक ऐसी क्रिया होती है जिससे सामने वाला व्यक्ति अपने स्थान पर चिपक जाता है और वहां से हिल भी नहीं पाता । मैं वैसी ही स्थिति में था ।

एक और स्तंभन होता है जिसे कहते हैं वाक स्तंभन । अर्थात वाक अर्थात बोलने की या जिह्वा की गति को रोक देना ...

इस स्थिति में सामने वाला व्यक्ति वह बात नहीं बोल पाता जो उसे बोलना होता है, बल्कि वह ऐसी बात बोलता है, जो संबंधित व्यक्ति के अनुकूल हो ।

इस प्रकार की सर्वश्रेष्ठ साधना बगलामुखी साधना मानी जाती है जो वाक स्तंभन प्रदान करती है अर्थात दूसरे के शब्दों को रोकने की क्षमता प्रदान करती है ।
यह क्षमता उन लोगों के लिए विशेष लाभदायक है जो वकालत जैसे धंधे में होते हैं या प्रशासनिक कार्यों में रहते हैं । उनको बगलामुखी साधना करनी चाहिए, लेकिन गलत कार्यों के लिए इसका उपयोग करने से गंभीर परिणाम भी आते हैं । सात्विक अर्थात अच्छे कार्यों के लिए इसका उपयोग करने से आप श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त कर सकते हैं ।
तो ..
मैं अपने स्थान पर विवश खडा हुआ था ...
मैं एक सामान्य आदमी था और किसी तांत्रिक से इस प्रकार पाला पहली बार पड रहा था । मुझे पता नहीं था कि मुझे क्या करना चाहिए ...
तभी मानस पटल पर जैसे कुछ कौंधा !

अंदर से एक आवाज आई कि तूने अभी साधना की है, उन मंत्रों का प्रयोग करके देख ।

जैसे ही यह विचार मन में आया मैंने अपने महागणपति के मंत्र का मन ही मन उच्चारण प्रारंभ कर दिया ।
लगभग 20 या 21 बार उच्चारण हुआ होगा और मेरे पांव खुल गए मैं आराम से मुड़ गया और वापस लौटने लगा । इस घटना से मेरा आत्मविश्वास वापस आ गया और मुझे लगने लगा कि मुझे भी कुछ आता है ।
इस प्रकार से मेरे मुक्त होते ही वह तांत्रिक तालियां बजाकर हंसने लगा ।
यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी । कायदे से तो उसे क्रोधित होना चाहिए था कि मैंने उसके बंधन को तोड़ दिया था ।
मैंने पलट कर उसकी तरफ देखा.....
तांत्रिक बोला - अरे ! डॉक्टर तो सीखा पढ़ा हुआ आदमी है, मैं तो इसे नालायक समझ रहा था ! आ जा इधर आ जा ।

मेरा आत्मविश्वास बढ़ चुका था और मुझे लगा कि इस आदमी के साथ रहने से अच्छा है कि मैं यहां से चला जाऊं ।

मैं पीछे मुड़कर चलने लगा !

जैसे ही मैं चलने लगा तो मुझे दस गज दूर वह तांत्रिक बैठा हुआ दिखाई देने लगा ।

मैंने पीछे पलट कर देखा तो वह अपने स्थान पर पहले की तरह बैठा हुआ था !

तो फिर मेरे सामने कौन था ....

अब यह स्थिति थी कि मेरे सामने में भी तांत्रिक था और पीछे भी कुछ दूरी पर तांत्रिक अपने आसन पर बैठा हुआ था ।

यह सब देख कर मुझे समझ में आ गया मैं यहां से नहीं निकल सकता और यह तांत्रिक बहुत ऊंची चीज है .....

तो मैं भी हताश होकर धीरे-धीरे वापस उस की ओर बढ़ने लगा ।

जब मैं उसके पास पहुंचा तो उसने ज़ोर का ठहाका लगाया और कहा - डॉक्टर ! आजा यहां बैठ !

मैं अनमने ढंग से उसके सामने जाकर बैठ गया । नंदिनी भी वहीं बैठी हुई थी । उस तांत्रिक का नाम था भेरुंड नाथ !

उस समय रात के लगभग नौ बजे का समय रहा होगा । आधा घंटा और उस तांत्रिक ने अपने शिष्यों को कुछ बातें सिखाई और उसके बाद वे सभी अपने-अपने झोपडों की ओर चले गए ।

उनके जाने के बाद तांत्रिक अपने स्थान से उठा और हम दोनों को पीछे आने का इशारा करके गंगा नदी के तट की ओर बढ़ गया ।

शव साधना

नदी के पास जाकर वह बिल्कुल शांत अवस्था में खड़ा हो गया और नदी की ओर देखने लगा । कुछ देर तक तो मैं भी उस दिशा में देखने की कोशिश करता रहा, जिस और वह देख रहा था ,लेकिन मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया ।

तब मैंने निराश होकर अपनी नजरें दूसरी ओर फिरा ली , तभी अचानक तांत्रिक के मुंह से एक गर्जना जैसी आवाज निकली - जाओ ! उसे खींच कर लाओ ।

यह आवाज सुनते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी बगल से कोई तेजी से नदी की ओर गया हो । वह किसी हवा के झोंके जैसा लग रहा था ।

उसके कुछ मिनटों के बाद नदी में से कोई चीज किनारे की ओर आ रही थी .....

ऐसा लग रहा था जैसे उसे कोई खींच कर ला रहा हो ।

मैं आश्चर्यचकित था कि यह क्या हो रहा है जबकि नंदिनी शांत अवस्था में खड़ी थी ....

और तांत्रिक को तो खैर पता ही था कि वह क्या कर रहा है ।

कुछ मिनटों के बाद साड़ी मे लिपटा हुआ एक शव नदी के तट पर आ लगा और फिर पानी में से निकल कर वह हमारी तरफ आने लगा ।

ऐसा लग रहा था जैसे कोई उसे खींचता हुआ ला रहा हो ।

कौन खींच कर ला रहा था ?

यह दिखाई नहीं दे रहा था.....

लेकिन शव की एक टांग हवा में उठी हुई थी और वह जमीन पर घिसटता हुआ आ रहा था ।

यह एक विचित्र सी बात थी !

मैंने इस प्रकार की घटना आज तक नहीं देखी थी इसलिए मुझे डर लगना प्रारंभ हो चुका था । मेरे हाथ पैर कांप रहे थे .....

मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं कहां आकर फस गया ।

अंधेरी रात !

अंजान सी जगह !!

एक विचित्र प्रकार का व्यक्ति ,जो वेशभूषा से ही अजीब था ! लेकिन जानता था कि मैं डॉक्टर हूँ .....

उसके साथ में एक अनजान महिला थी ...उसके बारे में कुछ भी नहीं जानता लेकिन वह मेरे बारे मे जानती थी .....

सामने हवा मे लटका हुआ था एक शव का पाँव और न जाने कौन उसे खींच रहा था !!

यह सब देखकर मेरे हाथ पैर कांपने लगे थे ।

मैं उस दिन को कोस रहा था जब मैंने वाराणसी आने का सोचा !

मेरा सोच सोच कर परेशान था कि अब ये लोग क्या करने वाले हैं ?

और यह शव नदी के अंदर से खींचकर बाहर क्यों निकाला है ?

मुझे ना तो शमशान के बारे में पता था ...और ना ही अघोर साधनाओं के विषय मे ।

इसलिए यह सारा अनुभव बिल्कुल नया ! बिल्कुल विचित्र !! और अनजाना था ।

मैं किसी प्रकार अपने आप को संभालता हुआ खड़ा था .... लेकिन अंदर ही अंदर मै पूरा हिल चुका था ।

जिस प्रकार का दृश्य मेरे सामने था वह मेरी कल्पना से परे था ।

उस शव को उस अज्ञात शक्ति ने लाकर उसी स्थान पर रख दिया , जहां पर वह व्यक्ति पहले बैठा हुआ था ।

उसने अपना लबादा उतार फेंक दिया और निर्वस्त्र हो गया ।

उसने नंदिनी को इशारा किया और नंदिनी ने भी पहले अपने वस्त्र निकाले और फिर उस स्त्री के शरीर से सारे वस्त्र उतारकर उसे निर्वस्त्र कर दिया । उसने मेरी तरफ घूरकर देखा और बोल पडा- डॉक्टर, तुझे अलग से बोलना पड़ेगा क्या ?

मैं उसकी बात समझकर तुरंत निर्वस्त्र हो गया ।

उसके बाद उस तांत्रिक ने कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया .....

उन मंत्रों के उच्चारण के साथ-साथ हवा में भारीपन बढ़ता जा रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वहां कोई अदृश्य शक्ति आने वाली हो या आ गई हो ....

थोड़ी देर और मंत्र जाप चलता रहा उसके बाद अजीब अजीब सी आवाजें आनी प्रारंभ हो गई ।

वह आवाज इतनी अजीब थी जो सामान्यतः सुनाई नहीं देती थी.....
लेकिन इतनी आवाजों के बाद भी किसी भी झोपड़ी में से कोई भी बाहर नहीं निकला ।
इससे मुझे लगा कि यह उनके लिए स्वाभाविक बात होगी.....
केवल मुझे डर लग रहा होगा और वास्तव में ऐसा ही था ....
क्योंकि वह श्मशान जागरण की प्रक्रिया थी.....
जिसके तहत इस प्रकार की आवाजें स्वाभाविक रूप से आती ही है और उन सभी को इसकी आदत थी ।
जबकि मैं पहली बार यह सारी आवाज सुन रहा था इसलिए मेरी आत्मा तक कांप रही थी.....
यह था श्मशान साधनाओं से मेरा पहला परिचय !

वह शव बेहद डरावना दिखाई दे रहा था । उसकी आंखें गड्ढों में धंस गई थी । पानी में पड़े रहने की वजह से वह थोड़ी फूल भी गई थी ।
सबसे अजीब चीज थी उसके नाभि क्षेत्र के नीचे बना हुआ एक अजीब सा निशान !

जो किसी घाव की तरह लगता था ।
जो एक अजीब से गोल वृत्त जैसा था और उसमें कुछ कुछ लिखा हुआ था वह भी किसी अजीब सी भाषा में .....
भेरुंडनाथ ने कहा - डॉक्टर ! तू भाग्यशाली है । बड़े विरले लोगों को इस प्रकार का माध्यम प्राप्त होता है ।
मैं मुंह फाड़ कर उनकी तरफ देख रहा था !
क्योंकि मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था ।
भेरुंड नाथ बोले - यह मुंडिका स्त्री है । यह शमशान साधना में सिद्धहस्त होती है । विशेष रूप से मारण प्रयोग करने में इनका कोई सानी नहीं होता । यह इसकी नाभि के नीचे जो निशान देख रहे हो ..... वह इसका प्रमाण है ।
यह ऐसे ही किसी प्रयोग के दौरान मृत्यु को प्राप्त हो गई थी । इसकी आत्मा इसके साथ ही भटक रही है और वह अभी काफी समय तक भटकती रहेगी क्योंकि किसी भी प्रकार के दुष्कर्म का परिणाम भुगतना पड़ता है । अभी श्मशान जागरण की क्रिया के माध्यम से इसके शरीर में श्मशान काली का आह्वान करेंगे ....

तुमको इस क्रिया को सम्पन्न करना है । मैं तुम्हें मंत्र बता रहा हूं जिसका तुमको जाप करना है । उससे पहले सारी बंधन आदि क्रियाएं कर लेना ।
मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं यह सारी क्रिया किस प्रकार से करूंगा और संकोच के कारण से बोल भी नहीं पा रहा था ।

इसके बाद बाबा भेरुंड नाथ ने मेरे सर पर हाथ रखा और अपनी मध्यमा उंगली को मेरे ब्रह्मरंध्र के ऊपर दबा दिया । जैसे ही उनकी उंगली मेरे ब्रह्मरंध्र पर पड़ी मुझे अजीब सी शून्य जैसी स्थिति महसूस होने लगी ।
उसके बाद बाबा भेरुंड नाथ और नंदिनी वहां से चले गए ।
मुझे इस बात का पता नहीं चला क्योंकि मैं एक अजीब सी अवस्था में बैठा हुआ था । उसी अवस्था में मुझे अपने पूर्व जन्म के दर्शन हुए । उसमें मैं निर्वस्त्र अवस्था में एक श्मशान में बैठा हुआ था । मेरे बाल मेरे कंधों तक लंबे थे । उसमें जटाएं बनी हुई थी ।
मेरी बाई तरफ एक बकरा बैठा हुआ था और दाहिनी तरफ शराब की बोतलें और ढेर सारी वनस्पतियाँ रखी हुई थी । सामने में चिता जल रही थी और मैं उसी चिता

में बैठकर आहुतियां दे रहा था । इसी प्रकार के कई दृश्य मेरी आंखों के सामने एक के बाद एक आकर जाने लगे । ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपने पिछले जन्म को देख रहा हूं !

बिल्कुल जीवित जागृत सब कुछ दिखाई दे रहा था !

उन सब को देखने के बाद मुझे यह एहसास हो गया कि मैं यह सारी चीजें पहले कर चुका हूं ।

नंदिनी तभी एक पात्र में भोग द्रव्य और कुछ बोतलें लेकर आई और वहां मेरे पास में रख दिया । मैं उसकी और कातर निगाहों से देख रहा था .....

जैसे आग्रह कर रहा हूं कि रुक जाओ....

लेकिन श्मशान साधनाएं तो अकेले ही करनी पड़ती है !

शायद इसलिए वह मुझे देख कर मुस्कुराई और चली गई ।

अब मैं अकेला बैठा हुआ था और मेरे सामने पड़ा था ..... एक स्त्री का शव !

मुझे संपन्न करनी थी वह साधना, जिसके बारे में मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया था !

केवल बाबा भेरुंड नाथ ने कान में वह मंत्र कहा था
जिसका जाप मुझे करना था ।
वह मंत्र मुश्किल से पांच अक्षर का था !

उसके साथ बाबा भेरुंड नाथ ने दी थी वह खतरनाक
चेतावनी - डॉक्टर, किसी भी हालत में अपना आसन
नहीं छोड़ना !
क्योंकि या तो इस साधना में सफलता मिलती है यह
मृत्यु !
तुम्हारे पास इस साधना को पूर्ण करने के अलावा कोई
दूसरा रास्ता नहीं है .....
चाहे कोई भी बाधा आए !
किसी भी प्रकार का परीक्षण हो !
किसी भी प्रकार की घटना दिखाई दे !
चाहे आसमान जमीन से टकरा जाए !
या जमीन आसमान से जाकर टकरा जाए !!
सूरज नीचे जमीन पर उतर आए !
या चांद तुम्हारे सर से टकरा जाए !!
किसी भी हालत में अपने आसन से मत उठना !!!

यह सब कुछ तुम्हारा परीक्षण होगा । सिर्फ यह याद रखना कि तुम गुरुदेव के शिष्य हो और अपनी संकल्प शक्ति के माध्यम से तुम किसी भी साधना को संपन्न कर सकते हो । तुम जन्मों से साधक रहे हो । पिछले जीवन में तुमने अघोर पंथ की अद्भुत और विचित्र साधनों को संपन्न किया था । वह सारी शक्तियां तुम्हारी आत्मा के अंदर मौजूद है । इसलिए तुम किसी भी प्रकार की साधना को संपन्न करने के योग्य हो ।
यह बात ध्यान में रखना कि अपने गुरु की इज्जत अब तुम्हारे हाथ में है !
ऐसा नहीं होना चाहिए कि कल यह बात आए कि किसी अयोग्य साधक को साधना बता दी गई और उसने डर के मारे वह साधना पूर्ण नहीं की !
वह डरपोक साधक अपने स्थान से भाग खड़ा हुआ जिसकी वजह से आज वह पागल बनकर भटक रहा है .....

इतनी सारी अजीब अजीब बातें सुनकर मैं अंदर ही अंदर भयभीत हो चुका था ।
लेकिन.....

जिस रास्ते पर मैं आगे बढ़ा था, वहां से वापस आने का कोई रास्ता मुझे दिखाई नहीं दे रहा था । मंत्र मुझे मिल चुका था !

शव सामने पड़ा था !!

और साधना मुझे करनी ही थी !!!

मेरे पास कोई विकल्प नहीं था ।

जब हमारे पास विकल्प होता है , तब हम आमतौर पर कठिन रास्ते को छोड़कर सरल रास्ते को चुनने की कोशिश करते हैं ।

लेकिन.....

अगर आपके पास कठिन रास्ता ही एकमात्र विकल्प हो तो आप उस पर चलकर सफल होने का प्रयास अवश्य करेंगे ।

यह कठोर वास्तविकता है ।

श्मशान में प्रवेश करने के लिए तथा साधना करने के लिए भगवती महाकाली की श्मशान काली स्वरूप की साधना करना अनिवार्य होता है ऐसा बाद में उन्होंने मुझे बताया ।

कुछ देर तक संकोच, और भय में बैठे रहने के बाद मैंने सोचा कि इस प्रकार से काम तो चलेगा नहीं .....
तो प्रारंभ किया जाए .....
मैं शव के बगल में जाकर बैठ गया और आंखें बंद करके गुरुदेव को ध्यान किया और गुरु मंत्र का उच्चारण किया । गुरु मंत्र का उच्चारण करते ही मेरे शरीर में एक स्पंदन सा हुआ फिर सब कुछ स्वतः संपन्न होने लगा ।

मेरे मुंह से संस्कृत में .....
विशुद्ध संस्कृत में.....
मंत्रों का उच्चारण होने लगा ।
सबसे पहले मैंने आत्म शोधन आदि आवश्यक क्रियाएं संपन्न की और फिर दिशा बंधन करने के लिए मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया । मंत्र जाप प्रारंभ होते होते मैं सामान्य हो चुका था .....
अपने आसन पर बैठा हुआ था और मंत्र जाप कर रहा था जब भी मेरी नजर सामने पड़े हुए शव पर जाती तो पूरे शरीर में एक सिहरन सी दौड़ जाती थी क्योंकि वह शव देखने में वास्तव में भयानक था !

तभी....

दक्षिण दिशा से जोर जोर से चीखने की आवाज आई ! ऐसा लग रहा था जैसे कोई किसी को बुरी तरह मार रहा हो .....

और उस पीड़ा से वह चीख रहा हो .....

मैंने पलट कर देखा और जो दृश्य सामने दिखाई दे रहा था .... वह कल्पना से परे था !

एक लगभग 8 फुट ऊंचा आदमी खड़ा था, जो काफी हट्टा कट्टा और पहलवान जैसा दिखाई दे रहा था ।

उसके शरीर की तुलना में उसका सिर बेहद छोटा था .....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कुमड़े के ऊपर संतरा रख दिया गया हो .....

उसके साथ एक और युवक खड़ा था जो मुश्किल से 5 फुट ऊंचा होगा और काफी दुबला पतला था । उसका सर उसके शरीर के आकार से काफी बड़ा था .....

यानी कुछ कुछ ऐसा लग रहा था जैसे पहलवान का सिर निकालकर उस दुबले-पतले युवक के ऊपर लगा दिया गया हो ...

और उस दुबले-पतले युवक का सिर निकालकर उस पहलवान के शरीर पर लगा दिया गया हो ....

पहलवान के हाथ में कोड़ा था !
उस कोडे में कांटे लगे हुए थे !
जो बबूल के काँटों के जैसे लग रहे थे ।
उसी कोड़े से वह उस युवक की पिटाई कर रहा था ।
जैसे ही वह कोड़ा उसके ऊपर पड़ता, युवक जोर से चीखता और यह प्रक्रम लगातार चल रहा था ।

इसी प्रकार के कई दृश्य चारों ओर दिखाई दे रहे थे जो बेहद अजीब अजीब से थे ।

मैं अपने आप को संभालता हुआ बैठा था । जाप जारी था .....
लगभग डेढ़ दो घंटे का समय बीत गया होगा जब उस शव के शरीर में हलचल प्रारंभ होने लगी.....

पहले मुझे लगा कि शायद मुझे किसी प्रकार की गलतफहमी हो रही है !
लेकिन....
जब गौर से देखा तो .....
उसका दाहिना हाथ .....
वाकई हिल रहा था !

हिल रहा था,कहने की बजाय थरथरा रहा था कहना ज्यादा उचित होगा ....

ठीक वैसे ही जैसे ठंड लगने पर हमारे हाथ कांपते हैं ।

वैसे ही उसका हाथ थरथरा रहा था !

थोड़ी देर में उसका पूरा शरीर उसी प्रकार से थरथराने लगा !

यह देख कर डर के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे !

मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं वहां से उठकर भाग जाऊं.....

और फिर.....

थोड़ी देर में.....

उस स्त्री का शव उठकर खड़ा हो गया ।

मेरा मंत्र जाप जारी था ।

वह दृश्य बड़ा ही भयानक था !

अंधेरी रात !

पूरी तरह सुनसान !

आसपास से आती हुई अजीब अजीब आवाजें !

और....

अजीब अजीब से डरावने दृश्य ....

इन सबके बीच में एक स्त्री का वीभत्स शव !

निर्वस्त्र !

मेरी तरफ घूर घूर कर देखता हुआ !

लहराता हुआ खड़ा था .....

अगर मैं सच कहूं तो उस समय मेरा गला सूख गया था !

मैं डर के मारे कांप रहा था !

सोच रहा था कि काश किसी तरह यहाँ से बच निकलने का कोई मार्ग मिल जाए लेकिन जैसी परिस्थितियां बन चुकी थी उसके बाद ऐसा कुछ भी संभव नहीं था और यह बात मैं समझ चुका था ।

उस शव के अंदर शक्ति प्रवेश हो चुका था ।

शक्ति का प्रवेश अर्थात परीक्षण का प्रारंभ ।

अघोर परीक्षण !

जो सामान्य परीक्षण नहीं होता !

बल्कि दुनिया का सबसे खतरनाक परीक्षण .....

क्योंकि ....

परीक्षण दुनिया के अंतिम छोर यानी मसान में होना है.....

जहां जीवन समाप्त हो जाता है, वहां पर होने वाला परीक्षण कैसा हो सकता है ?
यह आप भी कल्पना कर सकते हैं।

तभी.....
उसने मेरे बालों को पकड़ा और मेरे गाल पर एक जोर का थप्पड़ मारा । उस थप्पड़ की ताकत आप इसी बात से समझ सकते हैं कि मैं अपने आसन पर लगभग गिर गया ।
उस थप्पड़ की मैंने प्रतीक्षा नहीं की थी !
इसलिए ऐसा हुआ !
लेकिन वह थप्पड़ पड़ने के बाद मै और सजग होकर बैठ गया ....
क्योंकि यह तो शुरुआत थी ।
उसके बाद तो थप्पड़ की बौछार चालू हो गई । कभी दाएं गाल पर .....
तो कभी बाएं गाल पर....
उसका जोरदार थप्पड़ पड़ता रहा .....
और मैं दायें बाए हिलता हुआ वहीं बैठकर मंत्र जाप करता रहा ।

उतनी ऊंचाई से उसने मुझे छोड़ दिया और मैं धम्म से वापस अपने आसन पर आकर बैठ गया .....
मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कूल्हे की हड्डियां जमीन से टकराकर टूट गई हो ....
शरीर के पोर पोर में दर्द हो रहा था .....
लेकिन मैं मंत्र जाप कर रहा था .....

इसके बाद उसने एक भयानक अट्टहास किया !
उसकी आवाज इतनी तेज थी कि ऐसा लग रहा था जैसे कान के पर्दे फट जाएंगे ।
फिर उसने कड़कड़ाती हुई आवाज में कहा - बंद कर यह सब !
वरना.....
मैं तुझे मार डालूंगी !

जैसा बाबा ने मुझे बताया था कि मंत्र जाप बीच मे बंद कर देने से भी मेरी मृत्यु या पागल होना निश्चित था और उस स्थिति से बेहतर होता कि वह मुझे मार ही डालती ....
यह सोच कर मेरा मंत्र जाप जारी था !

तभी .....

उसने मेरी गर्दन पकड़ ली !

और .....

दबाना चालू कर दिया ।

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरे प्राण बाहर निकल जाएंगे ।

मेरे मुंह से आवाज निकलनी बंद हो गई !

क्योंकि गला उसके हाथों में दबा हुआ था ।

उसने गले पर दबाव बढ़ाना चालू कर दिया !

मुझे ऐसा लग रहा था ....

जैसे.....

मेरी आंखें भी बाहर निकल जाएंगी .....

लगभग 10 सेकंड तक यही स्थिति रही होगी और फिर उसने मेरी गर्दन छोड़ दी ।

यह क्रम लगभग 5-10 मिनट तक चलता रहा ।

वह इसी प्रकार मेरी गर्दन को बड़े जोरों से दबाती !

और....

जब मुझे लगता ... कि मेरे प्राण निकलने वाले हैं !

तब....

वह जोर से खिलखिलाती !
और गर्दन को छोड़ देती ।

अंत मे .....
उसने एक जोरदार अट्टहास किया !
उसने क्रोध भरी आवाज मे कहा - लगता है तेरे जीवित रहने का समय समाप्त हो गया है । आज मुझे तेरा भोग लगाना ही पड़ेगा ।

इतना कहकर वह फिर खिलखिला कर हंस पड़ी !
जब वह हँसती ....
तो ऐसा लगता.....
जैसे हड्डियाँ टकरा रही हों ।

उसकी बात सुनकर मेरे मन में विचार आया कि कहीं यह सचमुच मुझे मार तो नहीं डालेगी....

कुछ समय बाद....
वह मेरे सामने आसन लगाकर बैठ गई ।
मैं भी पद्मासन में बैठा था ।
वह भी पद्मासन में बैठी हुई थी ।

वह जोर से खिलखिलाती !
और गर्दन को छोड़ देती ।

अंत मे .....
उसने एक जोरदार अट्टहास किया !
उसने क्रोध भरी आवाज मे कहा - लगता है तेरे जीवित रहने का समय समाप्त हो गया है । आज मुझे तेरा भोग लगाना ही पड़ेगा ।

इतना कहकर वह फिर खिलखिला कर हंस पड़ी !
जब वह हँसती ....
तो ऐसा लगता.....
जैसे हड्डियाँ टकरा रही हों ।

उसकी बात सुनकर मेरे मन में विचार आया कि कहीं यह सचमुच मुझे मार तो नहीं डालेगी....

कुछ समय बाद....
वह मेरे सामने आसन लगाकर बैठ गई ।
मैं भी पद्मासन में बैठा था ।
वह भी पद्मासन में बैठी हुई थी ।

वह मुझे देख कर होठों पर जीभ फेर रही थी !
जैसे मुझे कच्चा चबा जाएगी ।
यह देख मुझे भय लग रहा था ...
मैं आँखें बंद करके जाप करने की कोशिश करता हुआ बैठा था ...
लेकिन जिज्ञाशावश आंखें खुल ही जातीं और उसकी भयावह आँखें मेरी ओर घूरती मिलती ।
लगभग आधे घंटे तक वह उसी मुद्रा मे बैठी रही ।

उसके बाद उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया !
मैंने पास रखे हुए भोग द्रव्य को उसे समर्पित किया जिसे उसने स्वीकार करके ग्रहण कर लिया ।
मैंने मदिरा पात्र भी प्रस्तुत किया जिसे उसने स्वीकार कर उदरस्थ कर लिया ....
आसपास सब कुछ शांत हो चुका था ....
सन्नाटा बिखरा पड़ा था .....
एकदम शांत.....
मुझे लगा कि अब परीक्षण पूरा हो गया लगता है ।
लेकिन .....

उस मदिरा को पीकर उसने एक जोर का झटका सा लिया और फिर से एक जोर का अट्टहास किया ।

इसके बाद.....

वह अचानक उठ कर खड़ी हो गई !

उसका सारा शरीर थरथराने लगा !

वह बड़े जोर-जोर से हिल रही थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसे पकड़कर कोई झिंझोड़ रहा हो !

तभी .....

अचानक.....

न जाने कहां से.....

एक चमचमाता हुआ खडग उसके दाहिने हाथ में प्रकट हो गया !

वह लगभग तीन फुट के करीब लंबा रहा होगा और उसका फाल सामने की तरफ किसी हंसिए की तरह मुड़ा हुआ था ।

यानी लगभग C जैसे शेप का था ।

वह चांदी से बना हुआ प्रतीत होता था !

बिल्कुल वैसे ही सफेद उसकी चमक थी !

उस स्त्री शव के हिलने के साथ वह खुद भी थरथरा रहा था और उसकी वजह से वह ज्यादा ही चमचमाता हुआ प्रतीत होता था ।

थोड़ी देर तक उसी प्रकार थरथराने के बाद अचानक वह खिलखिला कर हंस पड़ी ....

और....

उसके साथ ही....

फिर चारों ओर से भयानक भयानक सी आवाजे आनी चालू हो गई !

जो हवा बिल्कुल शांत थी वह अचानक तेजी से बहने लगी !

बिलकुल वैसे ही ....

जैसे तूफान आते समय हवाएं तेजी से बहती है .....

आस पास खड़े हुए पेड़ अपने स्थान पर लहरा रहे थे.....

उनकी पत्तियों की तेजी से हिलने की आवाज वातावरण की खामोशी को भंग करती हुई प्रतीत हो रही थी .....

उसके साथ ही उस शव ने उस खडग को हाथ में लेकर नृत्य करते हुए मेरे चारों तरफ घूमना प्रारंभ कर दिया ।

यह कुछ कुछ वैसा था....

जैसे किसी प्रिय शिकार को प्राप्त हो जाने पर आनंद व्यक्त किया जाता है !

मुझे ऐसा लग रहा था कि अब यह नृत्य समाप्त होते ही यह खड़ग मेरी गर्दन पर पड़ेगा ....

और यह मेरा शिकार कर लेगी ।

इस प्रकार के कई भाव मेरे मन में उठ रहे थे !

जिन्हें बड़ी मुश्किल से दबाता हुआ मैं मंत्र जाप में तल्लीन था .....

हवा तेज होती जा रही थी और उसके साथ ही पेड़ों का हिलना भी उसी के साथ तीव्र होता जा रहा था ।

पेड़ अपने स्थान पर दाएं बाएं लहराने लगे थे ऐसा लग रहा था जैसे कोई शक्तिशाली व्यक्ति उसे पकड़कर दाएं बाएं हिला रहा हो बड़े-बड़े पेड़ किसी पौधे की तरह लहरा रहे थे और उनके लहराने से आवाज भी आ रही थी ।

तभी अचानक बेमौसम बारिश होने लगी .....

बिजली कड़कने लगी !

ऐसा लग रहा था जैसे वह बिजली बिल्कुल मेरे आस-पास में ही गिर रही हो उसकी भयानक आवाज उसे मेरा पूरा शरीर काँप जाता था ।

तभी एक बिजली अचानक ठीक मेरे चबूतरे के सामने आकर गिरी और पूरा वातावरण प्रकाशित हो गया ऐसा लगा जैसे अचानक वहां आग लग गई हो ....

ऐसा कुछ देर तक चलता रहा फिर अचानक हवा शांत हो गई !
बारिश बंद हो गयी ।
फिर से चारों तरफ सन्नाटा छा गया !!
बिल्कुल गहरी शांति हर तरफ बिखरी हुई थी !
नाचती हुई उस स्त्री का शव आकर मेरे सामने स्थिर खड़ा हो गया ।

मुझे लगा कि अब शायद सब कुछ पूर्ण हो गया होगा ।
फिर अचानक ....
उस शव ने उस खडग को उस प्रकार से लहराना चालू कर दिया जैसे वह मेरे सर को काटने के लिए तैयारी कर रही हो ।

कभी उसका खडग मेरे सर के ऊपर से गुजरता तो
कभी मेरे बाईं तो कभी मेरे दाएं वह खडग लहरा रहा
था .....
मुझे लगा कि मेरा सर अब कटा कि तब कटा ...

लेकिन तभी जो हुआ वह आश्चर्यजनक भी था और
अद्भुत भी !
कुछ ऐसा जो मैं सोच भी नहीं सकता था !

उस शव ने ठीक मेरे सामने खड़े होकर उसी खडग से
खुद अपना सर अपने धड़ से अलग कर दिया ।
अब जो दृश्य सामने दिखाई दे रहा था वह देख पाना मेरे
लिए संभव नहीं था क्योंकि वह दृश्य उतना ही भयानक
था ।

वह शव अपने ही सिर को काट चुका था !
कटे हुए सिर के बालों को उसने अपनी बाईं मुट्ठी में
जकड़ा हुआ था !
वह कटा हुआ मुंड उसके बाएं हाथ से नीचे झूल रहा
था.....

तभी अचानक आसमान से एक जोरदार बिजली ठीक उसके ऊपर आकर गिरी और वह शव धू-धू करके चलने लगा ठीक वैसे ही जैसे किसी पुतले के ऊपर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी गई हो .....

यह दृश्य इतना भयानक था कि उसे देख कर मेरा रहा सहा धैर्य भी जवाब दे गया और मैं अपने आसन पर लुढ़क गया .....

जब मुझे होश आया तो मेरे चेहरे पर पानी की बूंदे गिर रही थी । मैंने मिचमिचाते हुए आंखें खोली तो देखा कि नंदिनी मेरे ऊपर झुकी हुई थी । वह पानी की बूंदे छिड़ककर मुझे जगाने की कोशिश कर रही थी । मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा । मेरे चारों तरफ वहां के रहवासी खड़े हुए थे .....

घेरा लगाकर.....

और....

उनके बीच में मैं निर्वस्त्र अवस्था में पड़ा हुआ था , जो कि बेहद अजीब सी स्थिति थी ।

मुझे होश में आता देखकर उनमें से किसी ने जोर का नारा लगाया

"हर हर महादेव"

जिसके जवाब में सभी ने उसका साथ देते हुए उद्घोष किया

"हर हर महादेव"

उसके बाद उन्होंने मुझे उठाकर बैठा दिया ।

सबसे पहले मैंने अपने आसपास देखा कि उस स्त्री का शव कहां गया ?

लेकिन वहां पर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । ना उसका सिर था .....

और ना ही उसका धड था !

ना ही उसका कोई निशान वहां दिखाई दे रहा था ।

रात को हुई घटनाओं के निशान भी वहां पर नहीं दिख रहे थे .....

ना बिजली गिरने का कोई निशान था ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कुछ भी नहीं हुआ ।

मैं रात की घटनाओं के विषय में सोच कर आश्चर्यचकित हो रहा था कि रात को जो हुआ वह क्या था ?

वास्तव था ?

या स्वप्न था ?

मुझे होश आया देखकर उन लोगों ने मेरे लिए एक बर्तन मे कुछ अजीब से स्वाद वाले द्रव की व्यवस्था की ।

उसे पीने के बाद मुझे अपने शरीर में थोड़ी ताकत का एहसास हुआ ।

सारे लोग वहां से चले गए केवल नंदिनी मेरे पास बैठी रही ।

उसने मुझसे कहा - चलो बाबा ने बुलाया है ।

छिनमस्ता रहस्य

मैं नंदनी के साथ झोपड़ियों के उस समूह के बीच में बने हुए एक झोपड़ी की ओर चल पड़ा ।

जब हम लोगों झोपड़ी के पास पहुंचे तो झोपड़ी के अंदर से मंत्र की ध्वनि आ रही थी....

" कट-कट विकट-विकट चट-चट घोर-महाघोर.....

अघोरेश्वर महादेव के मंत्र का उच्चारण सुनकर मैं अपने शरीर में एक थिरकन सी महसूस कर रहा था.....

क्योंकि वह तांत्रिक बाबा इन मंत्रों का इतनी लयबद्धता से उच्चारण कर रहा था, जिससे ऐसा लग रहा था कि वह कोई गीत हो .....

हम दोनों कक्ष के अंदर पहुंचे !

अंदर पहुंचने पर मैंने देखा कि वह एक त्रिशूल के सामने बैठकर उस मंत्र का उच्चारण कर रहे थे ।

वह त्रिशूल लगभग 3 फुट ऊंचा था और उसका फाल लगभग 1 फुट का था । वह पीतल जैसे किसी धातु का बना था और सोने की तरह चमक रहा था । उस कक्ष में पहुंचते ही मुझे अपने पावों मे और ज्यादा थिरकन होनी महसूस हो गई । नंदिनी मुझे उस कक्ष में छोड़कर बाहर जा चुकी थी । उसके बाद मैंने नाचना प्रारंभ कर दिया

। मुझे याद नहीं कि मैं कब तक नाचता रहा.... लेकिन मैं नाचते-नाचते बुरी तरह से थक गया और जमीन पर लुढ़क गया ।

तब भी उनका वह लयबद्ध मंत्र जाप जारी था । मंत्रों में ध्वनि का विशेष महत्व बताया गया है और उस विशेष ध्वनि के साथ किए गए मंत्रों का उच्चारण असंभव को भी संभव करने में सक्षम होता है ऐसा माना जाता है । कई पुराने गायकों जैसे तानसेन के विषय में यह कहा जाता था कि वे इतना सुंदर संगीत उस ध्वनि के साथ गाने में सक्षम थे जिसके माध्यम से वे वर्षा करवा सकते थे या दीपक जला सकते थे । यह सब विशिष्ट ध्वनि का महत्व है ।

मैं बेहोश पड़ा रहा !

जब मुझे होश आया तो दोपहर ढल चुकी थी और शाम होने वाली थी !

हल्का हल्का अंधेरा चारों तरफ बिखर रहा था !

झोपड़ी में उस समय कोई नहीं था ।

मैं झोपड़ी से निकलकर बाहर आया तो मैंने फिर वही दृश्य देखा ।

तांत्रिक बाबा चबूतरे पर बैठे हुए थे और अपने शिष्यों को कुछ शिक्षा दे रहे थे । मैं धीरे-धीरे उनकी और बढा । मुझे देखकर उन्होंने आंखों से बैठने का इशारा किया । मैं उन सब के पीछे जाकर बैठ गया । वह देवी छिन्नमस्ता के विषय में ज्ञान दे रहे थे ।

उन्होंने बताया - देवी छिन्नमस्ता महाविद्याओं में एक प्रमुख महाविद्या है । जिसे काली कुल का माना जाता है । यह महाविद्या अपने विचित्र स्वरूप के कारण सभी महाविद्याओं से बिल्कुल अलग है । इनकी साधना से किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग का निराकरण हो सकता है । इन्हीं को उग्र स्वरूप में प्रत्यंगिरा के रूप में भी पूजन किया जाता है । इसके बाद उन्होंने उनका स्वरूप वर्णन प्रारंभ कर दिया जो इस प्रकार था ....

प्रत्यालीढपदाम सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्तृकां।
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा।।
नगाबद्धशिरोमणिं, त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां।
रत्यांससक्तमनोभवोपरि दृढा ध्यायेज्जपासन्निभाम्।।

भगवती छिन्नमस्ता देवी प्रत्यालीढपदा हैं, अर्थात् युद्ध के लिये एक चरण आगे और एक पीछे करके वीर मुद्रा में खड़ी हैं । इन्होंने अपने हाथ मे कटा हुआ स्वयं का सिर और खडग धारण किया हुआ है।

भगवती छिन्नमस्ता दिगम्बर अवस्था मे हैं , और अपने कटे हुए गले से निकलती हुई रक्त धारा का पान कर रही हैं। उनके मुखमंडल मे तीन नेत्र सुशोभित हैं और वक्ष स्थल पर मुंड माला सुशोभित हो रहीं हैं ।

इनका आसन रतिक्रीडा में आसक्त रति और कामदेव के ऊपर अवस्थित हैं ।

इनकी देह जवा पुष्प की तरह रक्त वर्णा है। देवी छिन्नमस्ता के दाहिने भाग में गोरे रंग वाली, खुले केशवाली , कैंची और खर्पर धारिणी देवी खड़ी हैं, जिनका नाम वर्णिनी है। देवी की सहयोगिनी यह शक्ति वर्णिनी, देवी के कटे हुए गले से गिरती हुई रक्त की धारा का पान कर रही है।

देवी के बायीं तरफ खडग खप्पर धारिणी काले रंग की दूसरी देवी खड़ी हैं । यह देवी भी भगवती छिन्नमस्ता के कटे हुए गले से गिरती हुई रक्त की धारा का पान कर रही है । उनकी यह सहयोगिनी शक्ति प्रलय काल के

समान सम्पूर्ण जगत् का भक्षण करने में समर्थ हैं। इनको डाकिनी भी कहा जाता है।

अगर इसे सरल भाषा मे कहें तो भगवती छिन्नमस्ता रति और काम के विपरीत आसन वाली अवस्था मे रति की पीठ पर पांव रखकर खड़ी हुई मानी जाती है । उनके हाथ में स्वयं उनका कटा हुआ मुंडा होता है और उनकी गर्दन से रक्त की तीन धाराएं निकलती हैं । जिसमें से एक स्वयं उनके मुख में जाता है और दो धाराएं उनकी दो सहायक शक्तियों के मुख में जाती है ।

यह सुनते ही मुझे एक जोर का झटका लगा !
क्योंकि कल रात को जो दृश्य मुझे दिखाई दिया था उसमें कुछ कुछ ऐसा ही दिखाई दिया था । वह रहस्यमय स्त्री शव अपना ही कटा हुआ सिर अपने ही हाथ में लेकर खड़ी हुई थी, केवल फर्क इतना था कि वहां पर कामदेव रति मौजूद नहीं थे और उनकी दोनों सहायक शक्तियां भी वहां मौजूद नहीं थी ।
जिस स्वरूप का तांत्रिक बाबा वर्णन कर रहे थे कुछ कुछ वैसा ही स्वरूप कल रात को मुझे दिखाई दिया था ...

मैं इसी सोच मे डूबा था !

तभी मेरी नजर उनकी तरफ उठी !

उनकी नजर मुझ से टकराई !

उनके चेहरे पर एक रहस्यमय मुस्कुराहट बिखर गई .....

उसके बाद उन्होंने अपनी आंखों को आश्वासन के ढंग से झपका, जैसे कह रहे हो कि

तू जो सोच रहा है वह सही है.....

कुछ समय तक और वह प्रवचन तथा जिज्ञासा का समाधान चलता रहा । उसके बाद सारे लोग उठकर जाने लगे ।

केवल मैं वहां बच गया !

उन्होंने मुझे अपनी और आने का इशारा किया । मुझसे पूछा - कल का अनुभव कैसा रहा ?

मैंने पूरे विस्तार से उनको कल हुई घटनाओं के विषय में बताया ।

जिसे सुनकर वह खिलखिला कर हंस पड़े और बोले - वाह डॉक्टर ! तूने तो एक ही दिन में तीर मार लिया ।

यह सुनकर मुझे खुशी हुई !

उन्होंने आगे कहा - तू पिछले कई जन्मों से साधक रहा है । कई जन्मों से तूने अघोर साधना संपन्न की है । तुझे उन्हीं साधनाओं को फिर से सिखाने के लिए गुरुदेव ने मेरे पास भेजा है । तू अभी तीन दिन मेरे पास रहेगा और उसके बाद तुझे वापस जाना है । उन साधनाओं को पूर्ण करना है ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

तांत्रिक भेरुंड नाथ आगे बोले - कल तुमने जिस स्वरुप के दर्शन किए थे वह साक्षात भगवती छिन्नमस्ता का स्वरूप था । देवी जगदंबा के या माता पार्वती के या शिव की शक्ति के 10 प्रमुख स्वरूप माने गए हैं और इनको महाविद्या कहा जाता है । इनमें से एक है भगवती छिन्नमस्ता । यह एक अत्यंत उग्र शक्ति है । इस स्वरूप की साधना मैं तुम्हें आज बताऊंगा ।

कल जो स्वरूप तुमने देखा वही उनका दिव्य स्वरुप है । जो स्त्री शव तुमने कल इस साधना के लिए प्रयोग किया था उसके विषय में मैंने तुम को बताया था वह एक मुंडीका स्त्री थी और उसके शरीर में भगवती का आगमन हुआ था ।

भगवती अत्यंत प्रलयंकारी शक्ति हैं, इसीलिए उस शव का विध्वंस हो गया और उसके बाद तुम्हें वह वहां दिखाई नहीं दिया ।

अब मैं तुम्हें भगवती छिन्नमस्ता का मंत्र बता रहा हूं,तुम दिगंबर हो जाओ ।

मैं दिगंबर अवस्था मे आ गया ।
उन्होंने मेरे माथे पर अपना दाहिने हाथ का अंगूठा रख दिया और बड़े जोर से दबाया ।
ऐसा लग रहा था जैसे उनका अंगूठा मेरे माथे के भीतर घुस जाएगा !
कुछ देर में दर्द होने लगा !
लेकिन उन्होंने मुझे नहीं छोड़ा !
मैं उस पीड़ा को सहन करता हुआ बैठा था !
उसके बाद उनका दूसरा हाथ स्वाधिष्ठान वाले स्थान पर पहुंचा और उनका अंगूठा वहां पर स्पर्श करने लगा .....
उन्होंने उसी प्रकार से उस स्थान पर भी दबाब दिया ।
लगभग 5 सेकंड तक वैसी ही स्थिति रही होगी । उसके बाद उन्होंने मुझे घूम कर खड़े हो जाने के लिए कहा ।

जैसे ही मैं घूम कर खड़ा हुआ उन्होंने एक जोर की लात मारी !

यह लात मेरी कमर से थोड़ी सी ऊपर पड़ी !

उस रात के पडते ही मैं लगभग 4 फुट दूर जाकर गिरा ।

इसी से आप उस लात की ताकत का अंदाजा लगा सकते हैं ।

मेरे समझ में नहीं आया कि उन्होंने यह लात क्यों मारी ?

लेकिन जबतक मैं धूल झड़ाता हुआ उठ खड़ा हुआ बाबा अपने स्थान से गायब हो चुके थे !

कहीं दूर से आवाज आई - चबूतरे पर बैठ कर प्रारंभ कर दो ।

चबूतरे पर बैठ कर मैंने उनके दिये हुए छिन्नमस्ता मंत्र का जाप प्रारंभ कर दिया ।

उस समय शाम के सात बजे के आसपास का समय रहा होगा । सभी लोग अपने अपने कक्ष में जा चुके थे । शायद वह भी अपना-अपना मंत्र जाप कर रहे होंगे ।

वहाँ खुले मे मैं अकेला था .....

मैं मंत्र जाप करता रहा !

धीरे धीरे वातावरण का भारीपन बढ़ने लगा !

थोड़ी देर में मुझे वह सारी झोपड़ियां वहां से विलुप्त होती हुई नजर आई ....

उसके स्थान पर दिखाई देने लगी जलती हुई चितायें .....

एक दो नहीं बल्कि सैकड़ों चितायें !

दूर-दूर तक.....

जहां तक नजर जाती थी ....

वहां तक....

चिता ही चिता दिख रही थी !

सारी की सारी जलती हुई !!

उसके बीच में उस चबूतरे पर मै बैठा हुआ था । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि मैं किसी महाशमशान में बैठा हूं !

दूर-दूर तक जहां तक नजर जाती थी ...

वहां तक केवल चिंताएं ही दिखाई दे रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे वह चिताओं का कोई महासागर हो और उनके बीच में मैं बैठा हुआ था ।

उसी अवस्था में बैठे-बैठे मेरा मंत्र जाप चल रहा था , फिर मैंने अपनी आंखें बंद कर ली और मंत्र जाप करने लगा ।

जैसे ही मैंने आंखें बंद की मेरे भ्रूमध्य में भयंकर पीड़ा होने लगी .... उस स्थान पर .... जहां उन्होंने मुझे अंगूठे से दबाया था ।

उस स्थान पर ऐसे पीड़ा हो रही थी जैसे कोई चोट लग गई हो ....

ठीक वैसे ही पीड़ा दूसरी जगह स्वाधिष्ठान वाली यानि मेरी इंद्रियों के ऊपर वाले स्थान पर भी हो रही थी !

दोनों जगह अत्यंत तीव्र पीड़ा हो रही थी !

इतनी तेज कि मुझे ऐसा लग रहा था मैं दर्द के मारे बेहोश हो जाऊंगा !

यह स्थिति दस पंद्रह सेकंड तक रही होगी ।

उसके बाद वह पीड़ा शांत हो गई ।

मेरा मंत्र जाप जारी था.....

कुछ समय के बाद मैंने जब धीरे से आंखें खोली तो इस बार दृश्य बदल चुका था ....

सारी चिंताएं वहां से गायब हो चुकी थी ।

मुझे वह सारे झोपड़िया फिर से दिखाई देने लगी थी ।

मैं आश्चर्यचकित होता हुआ मंत्र जाप में लगा हुआ था । मंत्र जाप धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा और बीच-बीच में इसी प्रकार के विचित्र दृश्य दिखाई देते रहे ।

अचानक.....

जोर से चीखने की आवाज आई !

इस बार जब मैं ने आंखें खोली तो मैं एक सुनसान रेगिस्तान जैसी जगह पर बैठा हुआ था । जहां दूर-दूर तक रेत के मैदान थे और उसके बीच में मैं बैठा हुआ था ।

इन सारे दृश्यों में सिर्फ वह चबूतरा जिस पर बैठा हुआ था वह चबूतरा दृश्य में दिखाई देता था लेकिन आसपास के सारे दृश्य बदल जाते थे । इस प्रकार भगवती की माया चलती रही .....

संभवत: उस समय अर्ध रात्रि का समय रहा होगा जब अचानक घुंघरु की आवाज सुनाई देने लगी । ऐसा प्रतीत हो रहा था.... जैसे कोई नृत्य कर रहा हो।

वह आवाज बेहद मादक लग रही थी ।

मुझे अपने अंदर उत्तेजना का आभास हो रहा था ।

धीरे धीरे जब वह आवाज बढ़ने लगी तो मैंने पुन: अपनी आंखें खोल कर देखा ।

तब तक दृश्य फिर से बदल चुका था ।

वह एक बड़ा सा हाल जैसा कमरा था ।

जिसके अंदर अब वह चबूतरा मौजूद था , जिसमें मै बैठा था ।

हॉल की दीवारों पर आदम कद मूर्तियां लगी हुई थी ।

लगभग 5 से 6 फुट की ऊंचाई वाली.....

वे सारी की सारी मिथुन मुद्रा में थी ....

लगी हुई मूर्तियां संगमरमर या उसके जैसे किसी सफेद पत्थर की बनी हुई थी ...

वे इतनी सुंदर तथा सुगढ़ थी कि ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी इंसान को ही पत्थर में परिवर्तित कर दिया गया हो ।

घुंघरू की आवाज अब भी मुझे सुनाई दे रही थी । कुछ पाँच मिनट तक मैं उन मूर्तियों को देखता हुआ ....

मंत्र जाप करता रहा .....

तभी अचानक ऐसा लगा जैसे कोई मेरे पीछे कूदा हो !

छम की एक आवाज आई !

जब मैंने पीछे पलट कर देखा तो मैं देखता ही रह गया !

अद्भुत सौंदर्य की स्वामिनी एक स्त्री वहां पर खड़ी हुई थी !

गोरा रंग.....जैसे दूध में हल्का सा सिंदूर मिला दिया गया हो !

दिप दिप करती हुई आंखें !

उन्नत वक्ष स्थल !

क्षीण कटि !

हर अंग जैसे सांचे में ढला हुआ था ।

वह नृत्य की मुद्रा में खड़ी हुई थी !

वह तिरछी निगाहों से मुझे देख रही थी ।

मैं तुरंत पलट कर बैठ गया !

आंखें बंद करके मंत्र जाप करने लगा !

मुझे ध्यान आया कि यह गणेश भगवान के मंत्र जाप में आखरी समय जिस प्रकार से परीक्षण हुआ था उसी प्रकार का कुछ मामला लग रहा है !

पीछे मुड़ने की इच्छा तो नहीं थी ... क्योंकि वह इतनी आकर्षक थी कि उसे देखते रहने की इच्छा होती थी ... लेकिन....

साधनाओं में आपको इस प्रकार के आकर्षण से बचना होता है ..... तभी आप आगे बढ़ सकते हैं ।

मैं आगे की तरफ मुड़कर मंत्र जाप करने लगा । थोड़ी देर में एक और धम की आवाज आई । इस बार मैंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा .....

मुझे लगा कि यह कोई दूसरी अप्सरा होगी .....

इसके बाद नृत्य की ध्वनियाँ आने लगी !

थोड़ी देर के बाद एक स्त्री नृत्य करती हुई सामने आ गई !

यह वही स्त्री थी जिसे मैंने देखा था ....

मेरे पीछे भी घुंघरू की आवाज आ रही थी !

मुझे लगा हुआ कोई दूसरी स्त्री होगी जो वहां नृत्य कर रही होगी । थोड़ी देर के बाद वह दूसरी घुंघरू की आवाज भी मेरे सामने की तरफ आने लगी ....

मैंने आँखें खोलीं तो वह कोई स्त्री नहीं थी बल्कि वह था एक पूर्ण यौवनवान पुरुष !

भरी पूरी कद काठी !

कंधों तक बिखरे हुए बाल !

सावला रंग !

तीखे नैन नक्श !

बिल्कुल ऐसे .... जैसे तराश कर बनाए गए हो!

सागर की तरह उमड़ता हुआ वक्षस्थल !

मजबूत बाहें !

सुनहरे रंग का कटिवस्त्र !

गले में सोने की माला !

हाथ में सोने के कंगन !

पांव में सोने के कड़े !!

कुल मिलाकर वह पूर्ण पुरुषत्व का प्रतीक, बिल्कुल किसी मॉडल की तरह लग रहा था ।

ऐसा पुरुष जिसको देखने मात्र से कोई भी स्त्री तुरंत प्रभावित हो जाए और द्रवित हो जाए ।

वह नृत्य की मुद्रा में खड़ा था ,जिसके चारों तरफ वह स्त्री घूम घूम कर नृत्य कर रही थी । नृत्य करते हुए ऐसे आसनों का प्रदर्शन कर रहे थे जो इससे पहले मैंने कहीं भी नहीं देखे थे ।

अचानक न जाने कहां से एक विशाल कमल का पुष्प .....

फर्श के अंदर से प्रकट हो गया.....

उसका आकार लगभग 10 फुट के व्यास का रहा होगा !

बिल्कुल गुलाबी ....गहरे गुलाबी रंग का खिला हुआ कमल !

उसकी पंखुड़ियां चारों तरफ खुली हुई थी !

कुछ समय और बीता और दोनों ने नृत्य करते करते ही अपने वस्त्र उतार फेंके !

उस कमल के बीच में वह पुरुष कूदकर खड़ा हो गया
उसके खड़े होते ही मुझे ऐसा लगा ...
जैसे....
अब आगे कुछ अद्भुत होने वाला है !
मैं आंखें फाड़ कर देख रहा था !
तभी वह युवती भी उस कमल के अंदर कूद गई .....
अब दोनों निर्वस्त्र अवस्था में उस कमल के भीतर एक दूसरे को आलिंगन करते हुए विभिन्न मुद्राओं का प्रदर्शन करते खड़े हुए थे !
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे या तो उन्हें मेरी उपस्थिति का आभास ही नहीं था या वह किसी और आयाम में खड़े थे जहां मेरी उपस्थिति उन्हें प्रतीत नहीं हो रही थी ।
उनके द्वारा जिन मुद्राओं का प्रदर्शन हो रहा था उसे देख कर किसी के भी अंदर वासना का ज्वार उमड़ सकता है और वह असंयमित हो सकता था !
वे दोनों ऐसी ऐसी मुद्राएं दिखा रहे थे जिसे देख कर मेरी उत्तेजना अपने चरम पर थी ....

तभी मैंने देखा कि वह पुरुष उत्तान अवस्था में कमल फूल के बीच में लेट गया !

और उसके बाद विपरीत रति की मुद्रा में वह स्त्री कामक्रीड़ा में रत हो गई .....

तभी....

अचानक.....

एक भयानक अट्टहास की आवाज आई.....

ऐसा लग रहा था ....

जैसे चारों दिशाओं से अट्टहास की आवाज गूंज रही हो.....

ऐसी आवाज सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ !

क्योंकि जिस प्रकार का माहौल बना था वह कामुकता और सौंदर्य का माहौल था !!

वहां इस प्रकार के भयानक अट्टहास की कोई जगह नहीं थी लेकिन वह अट्टहास कुछ-कुछ वैसा ही था !

वातावरण में भारीपन बढ़ रहा था !

लेकिन.....

कमल फूल के बीच में क्रीडा कर रहे उन दोनों के ऊपर किसी प्रकार का असर नहीं पड़ रहा था !

वे निश्चिंत अवस्था में उसी प्रकार अपनी क्रीडा में रत थे .....

ऐसा लगभग दो-तीन मिनट तक चला होगा !

तभी.....

मैंने देखा कि उस विपरीत रति मुद्रा में क्रिया करती हुई स्त्री के पीठ के ऊपर एक छोटा सा गुलाबी रंग का प्रकाश पिंड दिखाई देने लगा.....

जो धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था.....

वह गुलाबी पिंड बड़ा होते-होते लगभग 8 फीट का हो गया !

हवा थम सी गई....

सब कुछ अचानक स्थिर हो गया !

दोनों देवियाँ और क्रीडा करते युगल सब थम गए ।

उस गुलाबी प्रकाश पिंड के अंदर से एक स्त्री का स्वरूप प्रकट होने लगा ।

उस स्त्री आकृति का स्पष्ट होना मैं अपनी आंखों के सामने देख रहा था .....

उसे देखकर थोड़ा भयभीत हो रहा था !

थोड़ा आश्चर्यचकित .....

संभावित घटना के बारे में सोच कर उत्साहित भी था ।

भगवती का आगमन किसी भी साधक के लिए सौभाग्य की बात तक होती है ।

उस प्रकाश पिंड से प्रकट हुई एक अद्वितीय सौंदर्य शालिनी स्त्री !
जिसके सौंदर्य की चमक के सामने सैकड़ों सूर्य का प्रकाश भी कम था !
ऊपर से नीचे तक सांचे में ढला हुआ शरीर !
जैसे हर अंग सौंदर्य का प्रतिमान हो !
वह साक्षात !
उस कमल के बीच विपरीत रता स्त्री के पीठ पर उस गुलाबी रंग के प्रकाश के बीच में प्रकट हो चुकी थी !
उन्हें देखकर मैं अभिभूत होता हुआ बैठा था !
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे संपूर्ण विश्व स्तंभित हो गया हो !
मुश्किल से चार पाँच सेकंड तक वह आकृति उसी प्रकार से दिखाई देती रही और उसके बाद वह आकृति विलुप्त हो गई !
उसके साथ ही वहां पर मौजूद सारे दृश्य गायब हो गए ।
फिर से मुझे झोपड़िया दिखाई देने लगी !

यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे किसी नदी में मस्ती से तैरती हुई मछली को उठाकर रेगिस्तान में फेंक दिया गया हो ।

उस अद्भुत दृश्य का आनंद लेते हुए भगवती महामाया के उस दिव्य स्वरूप को देखता हुआ गदगद भाव से बैठा था....

तभी.....

अचानक.....

वह सब कुछ गायब हो गया .....

फिर से वह घास फूस की झोपड़ीया दिखाई देने लगी थी ।

जो कि मेरे लिए स्वप्न भंग के जैसा था ।

मैंने उनमें से एक झोपड़ी की ओर देखते हुए मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया ....

लगातार उसे ही देखता रहा..

यह अचानक ही हो गया था.....

मैंने ऐसा कुछ विशेष सोच कर नहीं किया था .....

लेकिन मेरी आंखें उसी झोपड़ी के ऊपर वाले डंडे पर टिकी हुई थी और मेरा मंत्र जाप जारी था ।

कुछ 10 या 15 मिनट का मंत्र जाप चला होगा .....

उसके बाद.....

अचानक उस डंडे में आग लग गई .....

जो धीरे-धीरे नीचे की ओर उतरने लगी ।

मुश्किल से 10 सेकंड में नीचे के पुआल में भी आग लगने लगी ।

मैं हड़बड़ा गया !

प्रतिबंध था !

इसलिए अपने आसन से नहीं उठ सकता था..

इसलिए वहीं बैठा हुआ था ।

वह झोपड़ी धीरे-धीरे धू धू करके जलने लगी ।

वहाँ अफरा तफरी मच गई, अंदर के लोग बाहर आ गए । पास के झोंपड़े से भी लोग बाहर निकल आए । सभी दौड़कर पास में नदी से पानी लाकर बाल्टियों से उसके ऊपर डालने लगे .....

कुछ देर मे आग बुझ गई !

लेकिन तब तक वह झोंपड़ी आधी जल चुकी थी !

पानी डालने की वजह से आसपास की झोपड़ियां बच गई थी वरना सारी की सारी जल जाती ।

यह था भगवती छिन्नमस्ता की मंत्र शक्ति का प्रभाव जो मैंने पहली बार देखा था ।

सुबह हुई और मेरा जाप पूर्ण हुआ तब बाबा आए । मैंने उन्हें सारी घटनाएं बताइ और रात के अनुभव बताए ।

उन्होंने मेरे सर पर हाथ फेरा और कहा - तू वास्तव में योग्य साधक है । भगवती इतनी सहजता से किसी पर प्रसन्न नहीं होती जब तक कि उसने कई जन्मो तक उनकी साधना न की हो ।

मैंने उन्हे झोपड़ी को देखकर त्राटक करते हुए मंत्र जाप और उस से लगी हुई आग के बारे में भी बताया

तो उन्होंने बताया कि - मंत्र जाप जैसे जैसे बढ़ता जाता है, उसकी शक्ति बढ़ती जाती है । यदि किसी अच्छे साधक या गुरु के सानिध्य में उस मंत्र को प्राप्त किया है तो उसकी शक्ति पहले से बढ़ी हुई होती है ..... वह उस साधक या गुरु की साधनात्मक शक्ति और ऊर्जा से लिपटी हुई साधक के पास आती है ..... इसलिए ऐसे मंत्र शीघ्र परिणाम देते हैं और ज्यादा प्रभावशाली होते हैं ।

वे आगे बोले - भगवती छिन्नमस्ता अपने आप में अत्यंत विध्वंसक विद्या है । वह जब आंतरिक शरीर में स्थित न्यूनताओं का विध्वंस करती है तो कुंडलिनी शक्ति पूरी तरह जागृत होने लगती है । यह उनका आध्यात्मिक पक्ष है ।

जिसका अनुभव तुम्हें शीघ्र होगा !

अभी तुम्हारे अंदर उनकी विध्वंसक शक्तियां अपने प्रचंड स्वरूप में विद्यमान है । इसलिए कोशिश करना कि किसी के ऊपर गुस्सा ना हो, क्योंकि ऐसी स्थिति में सामने वाले व्यक्ति का गंभीर नुकसान हो सकता है । इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा इतना कहकर वह चले गए ।

मैं अपने स्थान से उठा और जाकर सामने गंगा नदी में स्नान करने के बाद वापस अपनी झोपड़ी में जाकर सो गया ।

थकान की वजह से इतनी गहरी नींद आई कि पता नहीं चला कि कब दिन ढला और कब शाम हो गई ।

शाम के लगभग 6:30 बजे के आसपास का समय रहा होगा .... जब नंदिनी ने मुझे उठाया और बताया कि बाबा मुझे बुला रहे हैं ।
मैं तुरंत उठ कर उसके साथ चला गया ।

उस दिन सारे लोग लाइन से खड़े हुए थे और बाबा कुछ विशेष क्रियाएं संपन्न करवा रहे थे । उनके पास में एक पात्र और एक पानी का लोटा रखा हुआ था । उनके सामने पहुंचकर हर साधक अपनी जीभ बाहर निकालता और वे उंगली से उसकी जीभ पर कुछ लिख देते और उसके बाद अपना हाथ धो लेते । उसके बाद अगला साधक उसके स्थान पर बैठ जाता ।
यह क्रम चल रहा था और सबसे आखरी में मेरा नंबर था । तब तक सारे लोग वहां से जा चुके थे । जैसे ही जीभ में लिखने की वह प्रक्रिया संपन्न होती हर साधक बिल्कुल शांत भाव से सीधा अपनी झोपड़ी में चला जाता था ।
इसके विषय में उन्होंने बताया कि इसे जिह्वा अंकन की क्रिया कहा जाता है । इस प्रक्रिया में गुरु अपने साधनात्मक बल को एकत्र करके संबंधित विद्या का

बीज मंत्र शिष्य की जिह्वा पर लिखता है । साथ ही भगवती सरस्वती का आह्वान करके उनकी स्थापना भी करता है ।

देवी सरस्वती को जिह्वा की या वाणी की अधिष्ठात्री देवी माना गया है । उनके आशीर्वाद और कृपा के बिना किसी भी मंत्र का सही ढंग से उच्चारण संभव संभव नहीं है । उनके कृपा से जब वाणी में शुद्धता और मंत्रों का स्पष्ट उच्चारण होने लगता है तब भगवती की कृपा प्राप्त होती है !

किसी भी देवी या देवता का सानिध्य मिलता है !!

यह मेरे लिए बिल्कुल नई बात थी क्योंकि ऐसा मैंने आज तक नहीं सुना था ।

जब मेरी बारी आई तो मैं भी उनके सामने जाकर बैठ गया और उसके बाद उन्होंने मुझे अपनी आंखों में देखने के लिए कहा । मैं उनकी आंखों में देखने लगा । उनकी आंखें भूरे रंग की थी, लेकिन जब मैंने उनकी आंखों में देखा तो उन आंखों का रंग लगभग गहरा नीला हो चुका था .....

किसी महासागर की तरह.....

और उसके बीच में मुझे भगवती की आकृति दिखाई दे रही थी !

यह मुश्किल से एक सेकेंड के लिए मुझे स्पष्ट हुआ होगा .....

जैसे ही मैंने उसे और गौर से देखने की कोशिश की .....

वह आकृति वहां से विलुप्त हो गई ...

बाबा ने जोर अट्टहास किया !

यह बिल्कुल ऐसा था जैसे किसी बच्चे की हरकत को देखकर बड़े हंसते हैं !!

वे बोले - जितना घूर के देखने की कोशिश करेगा.....

उतना कम दिखेगा.....

सहज रहा कर....

और सरल रहा कर.....

भगवती का सानिध्य उतना ही सहज और सरलता से मिलेगा ।

हमें भले ही अपने देवी-देवताओं के प्रत्यक्ष होने का विश्वास ना हो, लेकिन हर व्यक्ति जो किसी भी स्वरूप में उनकी आराधना करता है, उसको वह देवी शक्तियां अपनी उपस्थिति का आभास अवश्य कराती हैं । इस

आभास को हम जब और गौर से देखने की या और तार्किक रूप से समझने की कोशिश करते हैं, तब तक वह आभास समाप्त हो जाता है । ऐसा लगभग हर साधक के साथ होता है, ऐसी स्थिति में सहजता से उसे स्वीकार करना उस प्रकार के अनुभव को पुनः प्राप्त करने में सहायक होता है ।

इतना कह कर उन्होंने मुझे अपनी जीभ बाहर निकालने के लिए कहा । जब मैंने अपनी जीभ बाहर निकाल ली तो उन्होंने अपनी उंगली से उस पर कुछ लिखा !
क्या लिखा ? यह मुझे पता नहीं चला । लेकिन जीभ पर पड़ने वाले दबाव से यह पता चल रहा था कि कुछ लिखा गया है ।
उसके बाद उन्होंने मुझे कहा - तुम अब आधे घंटे तक किसी से बात नहीं करोगे । जो मंत्र मैंने तुम्हें बताया है अपनी झोपड़ी में जाकर आधा घंटा उसका जाप करो ।
मैं अपनी झोपड़ी में आ गया और उसके बाद में आधे घंटे तक वहीं बैठ कर उस मंत्र का जाप करता रहा ।

आभास को हम जब और गौर से देखने की या और तार्किक रूप से समझने की कोशिश करते हैं, तब तक वह आभास समाप्त हो जाता है । ऐसा लगभग हर साधक के साथ होता है, ऐसी स्थिति में सहजता से उसे स्वीकार करना उस प्रकार के अनुभव को पुनः प्राप्त करने में सहायक होता है ।

इतना कह कर उन्होंने मुझे अपनी जीभ बाहर निकालने के लिए कहा । जब मैंने अपनी जीभ बाहर निकाल ली तो उन्होंने अपनी उंगली से उस पर कुछ लिखा !
क्या लिखा ? यह मुझे पता नहीं चला । लेकिन जीभ पर पड़ने वाले दबाव से यह पता चल रहा था कि कुछ लिखा गया है ।
उसके बाद उन्होंने मुझे कहा - तुम अब आधे घंटे तक किसी से बात नहीं करोगे । जो मंत्र मैंने तुम्हें बताया है अपनी झोपड़ी में जाकर आधा घंटा उसका जाप करो ।
मैं अपनी झोपड़ी में आ गया और उसके बाद में आधे घंटे तक वहीं बैठ कर उस मंत्र का जाप करता रहा ।

मेरे शरीर में तीव्र ऊष्मा उठ रही थी ऐसा लग रहा था , जैसे अंदर ही अंदर कोई आग जल रही हो । उसे पूर्ण करते-करते लगभग आठ बज चुके थे ।

जाप पूरा हो जाने के बाद मैं बाहर निकला । तब तक तांत्रिक बाबा अपने चबूतरे पर बैठ चुके थे और उनके सामने पूरा शिष्य मंडल बैठा हुआ था । मैं भी जाकर बैठ गया ।

उन्होंने छिन्नमस्ता देवी के विषय में कुछ और महत्वपूर्ण बातें बताई और उसके बाद सारे लोग वापस अपनी अपनी झोपड़ी में चले गए ।

उन्होंने मुझे रुकने का इशारा किया मैं वहीं रुक गया । जब सारे लोग चले गए तो वे मेरे पास आए और उन्होंने कहा - डॉक्टर ! मेरे पास आने का तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो चुका है । जो मंत्र मैंने तुम्हें बताया था उसका अनुष्ठान तुम्हें छह महीने तक करना है और यह तुम वापस अपने स्थान पर जाकर कर सकते हो । यह महा शक्ति है । इसलिए इसका अनुष्ठान रात्रि काल में ही होगा । रात के नौ बजे से लेकर सुबह तीन बजे के बीच में जब तुमको समय मिले तब तुम इसका मंत्र जाप कर सकते हो । नित्य कम से कम एक घंटा और इससे जितना

ज्यादा तुम कर सको तुम्हें मंत्र जाप करना है । रोज गुरु पूजन और 11 माला गुरुमंत्र का जाप अनिवार्य रहेगा ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया । इसके बाद उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया । जैसे ही उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा .....

मुझे एक बिजली का जोरदार झटका सा लगा और

उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं चला .....

लेकिन.....

जब मेरी नींद खुली तब सुबह हो चुकी थी और मैं अपने लॉज के कमरे में पड़ा हुआ था ।

वहां कैसे पहुंचा कब पहुंचा इसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं चला !

विनोदिनी का आगमन

उसी दिन शाम की ट्रेन पकड़ कर मैं वापस हो गया और मुंबई पहुंच गया।

मुंबई पहुंचने के बाद मेरा वापस पुराना क्रम चालू हो गया ....।

क्लीनिक पेशेंट और रात हो जाने के बाद साधना का क्रम ऐसा ही चलता रहा.....

इतना कहकर डोम बाबा अचानक रुके और बोले -

बाकी फिर कभी .....

वह आ गयी है ...

उनके इतना कहते ही बाहर एक आवाज सुनाई दी !

जैसे जंगल में शिकारी या जंगली लोग एक दूसरे को सुनाने के लिए आवाज निकालते हैं,ठीक वैसे ही आवाज !

उसके बदले में डोम बाबा ने भी ठीक वैसे ही आवाज निकाली और तभी दरवाजा खुला और दरवाजे पर प्रकट हुई विनोदिनी !

हल्के सावले रंग वाली महिला ...

दुबले पतले शरीर की स्वामिनी !

लगभग साढे 5 फुट लंबी !

कुछ 35 से 40 वर्ष की आयु की !

मराठी स्टाइल की साड़ी पहने हुए जिसमें पैरों के नीचे से साड़ी को निकाल कर पीछे खोस लिया जाता है और वह धोती के जैसे दिखाई देती है, उसी प्रकार उसने साड़ी पहनी हुई थी !

नाक मे बडी सी नथनी !

माथे पर उषा ऊथुप जैसी बड़ी सी गोल लाल बिंदी !

कुल मिलाकर एक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली महिला दरवाजे पर खड़ी थी .....

उसे देखते ही डोम बाबा उठे और उसकी ओर लपक पड़े ।

दोनों एक दूसरे से गले मिल गए !

ऐसा लग रहा था जैसे बहुत समय से बिछड़े हुए दो दोस्त मिल रहे हो .....

दोनों की आँखें नम थीं !!

कुछ समय के बाद विनोदिनी ने मुझे देखा .....

उनकी चमकती हुई आंखों से जैसे कोई प्रकाश पुंज सा निकल रहा था !

जो आंखों के माध्यम से शरीर के अंदर तक प्रवेश कर रहा था .....

जिस भी व्यक्ति ने साधनाएं संपन्न की होगी .....

उसकी आंखों में आपको एक अलग ही चमक दिखाई देगी ।

वह व्यक्ति किसी भी कद काठी, रंग या स्वरूप का हो सकता है .....

लेकिन अगर आपको आंखें देखना आता हो तो आप उसकी आंखों से समझ जाएंगे कि वह साधक है .....

साधनाएं आंखों में एक अद्भुत तेज भर देती है !

विशेष रूप से अघोर और तंत्र साधना तो आंखों में इतना तेज भर देती हैं कि दुर्लभ लोग ही आप से आंखें मिला पाएंगे ।

सामने वाले की नजरें अपने आप झुक जाती हैं ....

मेरी नजरें भी झुक गईं ...

झोपड़ी मे खिलखिलाहट की आवाज गूंजी .....

कपालिनी साधना सूत्र

बाबा ने कहा - बेटा ! अघोरानंद यह है विनोदिनी !
जिसके बारे में मैं तुमसे कह रहा था ।
मैंने आगे बढ़ कर उनके चरण स्पर्श किए । उन्होंने
आशीर्वाद स्वरुप मेरे सर पर हाथ फेरा ।
विनोदिनी ने बाबा से कहा - अच्छा ! तो यह है तुम्हारा
अघोरानंद .....
जिसकी तुम तारीफ करते रहते हो ....
डोम बाबा ने सहमति में हूंकार भरी !
वे आगे बोलीं - गुरुदेव ने निर्देश दिया है कि आज की
रात्रि इसे कपालिनी साधना सम्पन्न करानी है ।

यह सुनकर मैं आश्चर्य में पड़ गया !
कहां तो मैं यह सोच रहा था कि मैं होशियारी दिखाकर
डोम बाबा के कक्ष में रुका था और उनसे उनकी पूर्व
कथाएं सुन रहा था ...

लेकिन...
यह तो गुरुदेव का निर्देशन था !

जिसकी वजह से मैं उस झोपड़ी में रुका और मुझे सिखाने के लिए विनोदिनी वहां प्रकट हो गई ।

गुरुदेव की लीला वास्तव में अद्भुत है !
वह कब क्या कर दें.....
कुछ नहीं कहा जा सकता ।
जब शिष्य अपना सब कुछ गुरु को सौंप देता है तो उसके बाद गुरु स्वयं उसके लिए मार्ग तैयार करता जाता है । समर्पण का मतलब धन दौलत का समर्पण नहीं बल्कि स्वयं को पूर्णतः उनका ही अंश मान लेना होता है ....
जब यह स्थिति आ जाये तो अलग-अलग प्रकार की साधनाये उसे विभिन्न माध्यमों से मिलती रहती है । विनोदिनी भी संभवत: उसी प्रकार का एक माध्यम थी । गुरु के पास जिस प्रकार की साधना होती है, वह सारी साधनाएं वह धीरे-धीरे शिष्य के अंदर अलग-अलग प्रकार से प्रदान करता जाता है । इसे आप ऐसे भी समझ सकते हैं .....
मान लीजिए एक पानी से भरी हुई बड़ी टंकी है, जो काफी ऊंचाई पर रखी हुई है । जमीन पर एक छोटी

और पूरी तरह से खाली टंकी रखी हुई है । अब इस छोटी टंकी को भरने का आपके पास दो तरीका हो सकता है ।
पहला आप उस छोटी टंकी को ऊपर छत तक ले जाएं और उस बड़ी टंकी में से पानी निकालकर छोटी टंकी को भर लें ....

दूसरा बड़ी टंकी से एक पाइप लाइन के द्वारा छोटी टंकी को जोड़ दें और कुछ सेकंड में छोटी टंकी भरकर छलछलाने लगेगी ।

गुरु के प्रति विश्वास, और इष्ट के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव जब शिष्य में आ जाता है तो यह बड़ी टंकी से पाइप लाइन जोड़ने जैसा होता है और उसके बाद साधनाएं और सिद्धियां शिष्य के भीतर उतरती है .... और इतनी उतरती है कि वह छलकने लग जाता है !
यूं समझ लीजिए कि गुरु पूरा का पूरा शिष्य के अंदर उतर जाता है !
वह शिष्य होते हुए भी गुरु की प्रतिकृति हो जाता है !
उसके अंदर वे सारी साधनाएं स्वत: स्पष्ट होने लगती है ....

जो गुरु ने सिद्ध की हुई होती है.....
सनातन धर्म की गुरु परंपरा इसी प्रकार से चलती है...
रामकृष्ण परमहंस ने जीवन भर साधनाएं की !
दुरुह जटिल और प्रचंड साधनाये !
जो शायद विरले साधकों ने संपन्न की होगी !
उसके बाद विवेकानंद एक समर्पित शिष्य के रूप में
उनके जीवन में आए .....
उसके बाद क्या हुआ यह आप लोग जानते ही
होंगे .....
एक ऐसा युवक जिसे भगवान के अस्तित्व पर विश्वास
नहीं था .....
वह सनातन धर्म का ध्वज वाहक बनकर आज भी याद
किया जाता है .....
खैर.....

समर्पण का भाव स्त्री के अंदर सहज रूप से होता है और
इसलिए सभी प्रकार की साधनाओं में और आध्यात्मिक
क्षेत्र में स्त्रियों के आगे बढ़ने की संभावना ज्यादा होती
है ।

पुरुष के अंदर भी जब समर्पण का भाव पैदा होता है तो उसके अंदर भी स्त्री जैसे गुण उत्पन्न हो जाए जाते हैं । जैसे-जैसे यह गुण विकसित होते जाते हैं पुरुष के अंदर समर्पण का भाव बढ़ने लगता है । इसका मतलब यह नहीं है कि पुरुष की प्रवृत्ति स्त्रियों जैसी हो जाएगी या वह किसी स्त्री के जैसे दिखने लगेगा ..... कई बार उच्चतम स्थितियों में ऐसा भी हो सकता है .... लेकिन पुरुष, पुरुष की तरह ही दिखेगा लेकिन उसके अंदर स्त्रियों की सामान्य प्रवृतियां जैसे ममता वात्सल्य करुणा आदि का प्राधान्य होने लगता है । इसे आप ह्रदय पक्ष का खुलना भी कह सकते हैं ।

स्त्री और पुरुष के बीच का अंतर आध्यात्मिक जगत में भी दिखाई देता है ।
जब पुरुष साधनाएं करता है और आगे बढ़ता है तो उसके अंदर का स्त्री शरीर जागृत होने लगता है और वह ज्यादा संवेदनशील हो जाता है !
उसके अंदर उदारता बढ़ने लगती है !!

इसके विपरीत जब स्त्री साधनाये करती है तो एक लेवल के बाद उसके अंदर का पुरुष शरीर जागृत होने

लगता है । उसके अंदर अहंकार जैसी प्रवृत्तियां उठने लगती है । इसलिए आप लोगों ने देखा होगा कि जो महिलाएं साधनाएं करती हैं या साधना के क्षेत्र में जिन्होंने कदम रखा है उनके अंदर कुछ शुरुआती वर्षों के बाद भयंकर अहंकार पनपने लगता है । कई तो अपने आप को देवी समझने लगती हैं.....

यहां पर उन्हें स्वयं को संभालने की जरूरत होती है और जो नहीं संभलती हैं .....

वह कुछ समय के बाद सिर्फ दिखावा करने लायक ही रह जाती हैं !

उनके अंदर आध्यात्मिकता का अंश समाप्त हो जाता है । फिर बाजीगरी चालू हो जाती है । विचित्र प्रकार के संगीत नृत्य का दौर चलने लगता है । इसके अलावा चित्र विचित्र भाव भंगिमायें दिखाने का दौर भी आता है । इन सबसे बढ़कर कई तथाकथित माताएं तो अपने भक्तों को लात घूंसे मारते हुए भी दिखाई देती है । इस प्रकार की कई माताएं और देवियों के दरबार हमारे देश में मौजूद है । जिनके अंदर वास्तव में आध्यात्मिक शक्तियां नहीं के बराबर हैं, लेकिन प्रोपेगेंडा भरपूर है .....

इनके दरबार के चक्कर लगाते हुए लोग अपने आपको भक्त और आध्यात्मिक समझने लगते हैं, लेकिन मेरी राय में अगर आप अपने घर में बैठकर नवार्ण मंत्र का जाप कर ले, तो उससे ज्यादा लाभ और अनुकूलता आपको प्राप्त हो सकती है ।

इन सारी स्थितियों को पार करते हुए आध्यात्मिक श्रेष्ठता प्राप्त करने वाली अत्यंत उच्च कोटि की साधिकाए भी इस धरा पर मौजूद हैं .....
विनोदिनी भी उनमे से एक थी !!!
जिनके माध्यम से मुझे कपालिनी जैसी एक अद्भुत सिद्धि प्राप्त होने वाली थी । जिसके बारे में मुझे कोई विशेष जानकारी नहीं थी । मनुष्य के सिर को कपाल कहते हैं और अघोरी और कापालिक मनुष्य के इसी कपाल से पात्र बनाकर उसमें भोजन तथा अन्य सामग्री ग्रहण करते हैं । कपाल से बना है कपालिनी .... तो मुझे लगा कि संभवतः यह किसी प्रकार की पैशाची सिद्धि होगी .....
जो भी हो गुरुदेव का निर्देश था तो मुझे उसे करना तो था ही .... तो मैं भी सावधान होकर बैठ गया ।

विनोदिनी ने डोम बाबा से कहा - तुम सारी व्यवस्था कर लो तब तक मैं इसे कुछ प्रारंभिक चीजें बता देती हूं ।

उनके इतना कहते ही डोम बाबा कक्ष से बाहर निकल गए ।

विनोदिनी ने मुझे अपने सामने बिठा दिया और अपनी आंखों में देखने के लिए कहा ।

उनकी आंखे इतनी तेजस्वी थी कि मेरी नजर टिक नहीं पा रही थी और मेरी पलकें झपक जा रही थी ।

उन्होंने क्रोधित होकर कहा - पलकें झपकनी नहीं है !

क्रोध मुद्रा के साथ मेरी आंखों में देखो !

क्या तुम एक स्त्री से नजर नहीं मिला सकते ?

ऐसे मे तुम साधना क्या करोगे ?

उनके इस उलाहने ने मेरे अंदर उर्जा का संचार किया ।

मैंने गुरुदेव को याद किया और उनकी आंखों में क्रोध मुद्रा में देखने लगा ।

मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उनकी आंखों से रश्मियां सी निकल रही हो ...

जो सीधे मेरी आंखों के अंदर प्रवेश कर रही हो !

दिप दिप करती हुई उनकी आंखें वास्तव में अद्भुत थी । उन्होंने उसी प्रकार से मुझे आंखों में देखने के लिए कहा और मैं उनको घूर कर देखता रहा । वह भी पूरी तरह से क्रोध मुद्रा में ....

वे भी अपनी तीक्षण आंखों से मुझे देख रही थी ....

उसके बाद मुझे एक जोरदार झटका सा लगा और मेरी आंखें स्वत बंद हो गई !

जैसे ही मेरी आंखें बंद हुई उनका हाथ मेरे सर पर हल्का सा स्पर्श हुआ ....

उसके साथ ही मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी रीढ की हड्डी में स्पंदन सा प्रारंभ हो गया है ....

चीटियां सी रेंगती महसूस हो रही थी .....

ऐसा लगभग 1 मिनट तक रहा होगा !

उसके बाद मुझे अपने चेहरे पर पानी के छींटे का एहसास हुआ और मैंने पुनः अपनी आंखें खोल दी ।

विनोदिनी ने कहा - अघोरानंद ! तंत्र साधना के क्षेत्र में यह आवश्यक होता है कि तुम सामने वाले को देखते ही उसके अतीत के विषय में सब कुछ जान सको और इसके लिए कई प्रकार की विद्याएं प्रचलित है ।

इनमे जो सबसे अधिक प्रचलित विद्या है वह है कर्ण पिशाचिनी !
इस साधना के माध्यम से तुम किसी भी व्यक्ति का अतीत देख सकते हो !
यह साधना दो प्रकार से की जाती है एक होती है वाममार्गी पद्धति, जोकि बेहद जटिल है, कठिन है लेकिन जल्द सिद्ध हो जाती है । इस साधना में या तो सफलता मिलती है या साधक की मृत्यु हो जाती है या वह पागल हो जाता है !

कर्ण पिशाचिनी साधना की दूसरी विधि दक्षिण मार्ग से होती है । जिसमें समय काफी ज्यादा लगता है और कर्ण पिशाचिनी को वाग्देवी के रूप में सिद्ध किया जाता है । इसके माध्यम से भी किसी का भूतकाल जाना जा सकता है । वाग्देवी के रूप में जब कर्ण पिशाचिनी की पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है तो कई बार भविष्य की भी जानकारी मिलने लगती है लेकिन भूतकाल की जानकारी तो निश्चित रूप से मिलती है ।

यह सब मेरे लिए एक रहस्यमय और अद्भुत विषय था । मै बड़े ध्यान से सुन रहा था ।

वे आगे बोलीं - एक और साधना होती है जिसके माध्यम से किसी का अतीत जानना संभव होता है । उसे वार्ताली साधना कहते हैं । यह साधना एक विशिष्ट मंत्र के माध्यम से संपन्न की जाती है । इसमें अजमोद की जड़ को हरताल में घिस कर उसे कुछ गोपनीय औषधियों के साथ मुंह में दबा लिया जाता है और मंत्र जाप संपन्न किया जाता है । जब यह साधना सिद्ध हो जाती है तो कान में वार्ताली देवी प्रश्न का उत्तर देती है या स्वप्न में उत्तर प्राप्त हो जाता है ।

स्वप्न में उत्तर प्राप्त करने के लिए स्वप्नेश्वरी देवी की साधना भी की जा सकती है । इसमें स्वप्नेश्वरी मंत्र का एक निश्चित संख्या में जाप करके अपने प्रश्न को बोल कर सो जाना होता है और नींद में ही स्वप्नेश्वरी प्रश्न का उत्तर प्रदान करती है ।

कई महाविद्याओं की साधना में भी भविष्य का निर्देश प्राप्त होता है । साथ ही भूतकाल के विषय में भी जानकारी प्राप्त हो सकती है । लेकिन महाविद्या साधना में वे अपनी इच्छा से ही इस प्रकार का आभास प्रदान करती है । यह आमतौर पर तब होता है जब

साधक के जीवन में कुछ घटित होने वाला होता है या उसे किसी चीज से सावधान करना होता है । महाविद्या साधना साधक को सिर्फ उतना ही आभास कराती है जितना उसके लिए आवश्यक होता है ।

तुम्हारा जन्म एक विशेष उद्देश्य के लिए हुआ है । इसलिए यह जरूरी है कि तुमको जरूरत पड़ने पर किसी भी व्यक्ति का भूत काल पता चल पाए ..... ताकि तुम उसके अनुसार आगे कार्य को संपन्न कर सको.... इसके लिए जो साधना सर्वश्रेष्ठ है !
वह है कपालनी साधना !
इस साधना के माध्यम से शमशान काली की एक घोर श्मशानी शक्ति प्रकट होती है । जो साधक के साथ 24 घंटे चलती है । जब उसे आवश्यकता होती है । वह उससे अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकता है । यह साधना थोड़ी जटिल और श्रम साध्य है जिसे विरले लोग ही पूर्ण कर पाते हैं !
बहुत कम गुरु इस प्रकार की साधना को अपने शिष्यों को प्रदान करने में सक्षम होते हैं । सक्षम गुरु भी विरले शिष्यो को ही यह सिद्धि या साधना प्रदान करते हैं,

क्योंकि इसके माध्यम से किसी भी व्यक्ति का भूतकाल किसी फिल्म की तरह उसके सामने प्रकट हो जाता है । ठीक वैसे ही जैसे फिल्मों में फ्लैशबैक होता है ।

इस प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो जाने से उसके दुरुपयोग की संभावना भी बढ़ जाती है .. खासतौर से स्त्रियों के विषय में । कई बार साधक इस प्रकार से साधनाओं का दुरुपयोग करते हैं तो समस्या बढ़ जाती है । वे इस सिद्धि के माध्यम से उनकी गोपनीय जानकारी को माध्यम बनाकर उनका शोषण करने लगते हैं । जिसकी वजह से तंत्र मार्ग बदनाम होता है और गुरु की साख पर भी बट्टा लगता है ।

मैं शांत भाव से उनकी बात को सुन रहा था । क्योंकि यह वास्तविकता है !

कई तांत्रिक इस प्रकार से अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं ।

जब कोई भूतकाल के विषय में जानकारी देता है तो आमतौर पर लोग उसे बहुत बड़ा भविष्यवक्ता मान लेते हैं.....

लेकिन ऐसा भूत सिद्धि से भी हो सकता है

और पिशाचीनी सिद्ध होने पर भी हो सकता है !
भूत काल की घटनाएं घटित हो चुकी होती है । इसलिए उनके बारे में जानना आसान होता है । इसके विपरीत भविष्य काल के बारे में जानना बेहद कठिन और मुश्किल होता है । ज्योतिष भी एक सीमा तक ही भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी कर पाते हैं । केवल वही ज्योतिष भविष्य की घटनाओं की सटीक भविष्यवाणी कर पाते हैं जिनके पास कोई सिद्धि होती है ।
इस क्षेत्र में भी फर्जी लोगों की संख्या ज्यादा है जिसकी वजह से ज्योतिष पर भी लोग बहुत ज्यादा विश्वास नहीं कर पाते हैं ।
दरअसल किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए निरंतर साधना करने की आवश्यकता होती है और साथ ही मानवीय गुणों का विकास भी साधक के अंदर होना चाहिए । जैसे ही भविष्यवाणियां सही होने लगती है ,लोग उस भविष्यवक्ता को सर आंखों पर चढ़ा देते हैं । उसके बाद उसके अंदर का अहंकार उसे स्वयं को भगवान समझने के लिए मजबूर कर देता है । वह साधनाएं करना भूल जाता है । जैसे जैसे साधनाएं

क्षीण होती जाती हैं ,उसके अंदर की सिद्धि भी कमजोर होती जाती है । कुछ समय के बाद उसकी भविष्यवाणी गलत साबित होने लगती है ।
आप लोगों ने भी कई बार देखा होगा कि कुछ भविष्यवक्ता अचानक से प्रसिद्ध हो जाते हैं और लोग उनके सामने लाइन लगाकर अपना भविष्य जानने के लिए खड़े होते हैं !
लेकिन दो चार साल के अंदर या 5 या 10 साल के अंदर, उनका नामोनिशान गायब हो जाता है ।
यह साधना पक्ष के कमजोर होने की वजह से होता है !
अस्तु .....

विनोदिनी आगे बोली - यह साधना तुम्हें आज से प्रारंभ करनी है और अगली अमावस्या तक तुम्हें इसे संपन्न करना है ।
इस बात को सुनकर मैंने सहमति में सिर हिलाया ।
उसके बाद उन्होंने कहा - मैं तुम्हें इसका मंत्र बता रही हूं । तुम्हें नित्य इसका 108 बार जाप करना है । यह मंत्र लगभग दो पेज का है , इसे तुम्हें कंठस्थ करना होगा । उसके लिए आवश्यक है कि तुम्हारे कंठ में सरस्वती का

वास हो । इसके लिए सबसे पहले मैं तुम्हारे जिह्वा पर सरस्वती बीज मंत्र का अंकन करूंगी । उसके बाद तुम्हें यह मंत्र आसानी से याद हो जाएगा ।

वास्तव में दो पेज का मंत्र याद करना कोई आसान बात नहीं है । एक एक दो दो लाइन के मंत्र में भी कभी-कभी एक आध अक्षर छूट जाता है और दो पेज का मंत्र तो खैर काफी बड़ा था ।

सर्प अस्थियों की माला

इसके बाद उन्होंने मुझे एक विशेष सरस्वती का मंत्र बताया और कहा - देवी सरस्वती के कई प्रकार के मंत्र होते हैं , लेकिन देवी सरस्वती के साथ आबद्ध हुआ मारण मंत्र अपने आप में अद्भुत होता है और यह मंत्र वैसा ही है ।

वह एक शाबर मंत्र था जिसमें दो लाइन थी । उसमें पहली लाइन में सरस्वती सिद्धि के विषय में कहा गया था और दूसरी लाइन में शत्रु नाश की संकल्पना भी की गई थी ।

इस प्रकार के सरस्वती मंत्र मैंने उसके बाद कभी नहीं देखे ।

वह मंत्र वास्तव में मेरे जीवन की धरोहर है !

वह एक ऐसा मंत्र है, जिसका एक निश्चित संख्या में श्मशान भूमि में बैठकर जाप करने मात्र से शत्रु अपने आप स्तंभित हो जाता है और विरोध भूल जाता है ।

उसके विषय में चर्चा फिर कभी ...

उस मंत्र का जाप उन्होंने मुझे करने के लिए कहा और एक विचित्र सी माला अपने थैले में से निकाली और मुझे दी !

उस माला में जो मनके लगे हुए थे वह हड्डियों के जैसे दिख रहे थे । उसके बीच में बने हुए छेद से धागा पार किया गया था । वह हड्डियां तीन तरफ से नुकीली दिखाई दे रही थी ।

मैं उसे गौर से देख रहा था !

तभी उन्होंने बताया - यह सर्प की अस्थियां है ! उन में प्राकृतिक रूप से बीच में छेद बना होता है । उसी के द्वारा इस माला का निर्माण किया गया है । जो सर्प प्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त होता है, उसकी रीढ की हड्डी में जो दाने होते हैं उसी के द्वारा इस प्रकार की माला का निर्माण किया जाता है । तभी वह प्रभावशाली होता है । किसी सर्प को मार कर अगर उसकी हड्डियों का प्रयोग किया जाए तो वह लाभदायक नहीं होता है ।

जितना पुराना सर्प होगा, उसके स्वाभाविक मृत्यु के बाद अगर उसकी हड्डियों का प्रयोग किया जाए तो वह माला सिद्ध माला होती है ।

विशेष रूप से स्वाभाविक मृत्यु प्राप्त नाग सांप की हड्डियों से बनी हुई माला का प्रयोग इस साधना के लिए किया जाता है और यह वैसी ही एक माला है ।

मुझे उस मंत्र का 24 मिनट तक जाप करना था । मैंने माला हाथ में ले लिया और उनके कहे अनुसार वज्रासन में बैठकर जाप करने लगा । जैसे ही मैंने जाप करना प्रारंभ किया वे कक्ष से बाहर चली गई ।
लगभग 10 मिनट का जाप हुआ होगा, जब कक्ष में सांप दिखाई देने लगे । कोई दाएं तरफ से आ रहा था । कोई बाईं तरफ से आ रहा था और कोई सामने से आ रहा था । कुल मिलाकर 20- 25 साँप कक्ष में प्रवेश कर चुके थे । उन्हें देखकर मेरी हालत खराब हो रही थी, लेकिन मैं यह भी जानता था कि इस प्रकार का परीक्षण मुझे देना ही होगा । इसलिए मैं कोशिश करके वहां शांत भाव से बैठा हुआ था । शांत कहना उचित तो नहीं होगा क्योंकि अंदर ही अंदर डर तो लग रहा था ।
अब वे सर्प मेरे चारों तरफ घूम रहे थे ।
मेरे हाथ में सर्प अस्थियों की माला थी । जिससे मैं मंत्र जाप कर रहा था । मेरे चारों तरफ से 20-25 साँप घूम

रहे थे । थोड़ी देर के बाद वह मेरे चारों तरफ घेरा बना कर बैठ गए । सब के सब फन काढ़ कर बैठे थे । ऐसा लग रहा था जैसे वे प्रतीक्षा कर रहे हो कि मुझे कब काटे ।

यह देखकर मेरी अंतरात्मा तक हिल चुकी थी ।

मैं अपने आसन पर बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभाले हुए बैठा था । कुछ देर में वे सर्प मेरे शरीर में चढ़ने लगे !

एक धीरे-धीरे मेरे सर के ऊपर तक पहुंच गया !

उसी प्रकार से कोई कमर पर सरक रहा था । कोई मेरी कलाई पर लिपटा हुआ था ।

कुल मिलाकर मेरी स्थिति बेहद नाजुक हो चुकी थी ।

मैं बड़ी मुश्किल से मंत्र जाप कर पा रहा था । अगले 10 मिनट तक वही स्थिति रही । वह उसी प्रकार से मेरे ऊपर इधर-उधर रेंगते रहे । कभी कोई सर्प सीधा मेरी आंख के सामने फन खड़ा करके खड़ा हो जाता । उसके सांसो की हवा मैं महसूस कर पाता था ।

इसी प्रकार से मेरा मंत्र जाप पूरा हुआ और जिस प्रकार से वह सर्प कमरे के अंदर प्रकट हुए थे उसी प्रकार से धीरे से बाहर निकल गए ।

उनके बाहर निकलते ही कुछ समय के बाद विनोदिनी भी कमरे के अंदर आ गई । सर्पों के चले जाने से मेरी हालत अब कुछ बेहतर हो चुकी थी । विनोदिनी ने कहा - जाप के 24 मिनट पूर्ण हो चुके हैं और तुम्हारा मंत्र जाप का यह पहला क्रम संपन्न हुआ । अब मैं तुम्हारी जिह्वा पर सरस्वती बीज मंत्र का अंकन करूंगी । उसी के लिए तुमसे यह मंत्र जाप कराया था ।

जिह्वा अंकन

मैं इससे पहले बाबा के मुंह से बनारस में उनके जिह्वा अंकन की कथा सुन चुका था ।

इसलिए मुझे लगा कि यह भी कुछ उसी प्रकार की प्रक्रिया होगी ... लेकिन यह वैसा नहीं था ।

विनोदिनी ने मुझे अपने सामने बैठने के लिए कहा और उसके बाद अपनी कमर में बंधी हुई पोटली में हाथ डाला और उसमें से एक चांदी की कील जैसी चीज बाहर निकाली ।

उसने मुझे जीभ बाहर निकालने के लिए कहा । जैसे ही मैंने जीभ को बाहर निकाला, उन्होंने मेरी जीभ को पकड़ लिया और बाहर की तरफ खींचा । मुझे ऐसा लगा कि मेरी जीभ पूरी बाहर ही निकल जाएगी !

जैसे ही मेरी जीभ मुंह से बाहर आई, उन्होंने विद्युत गति से मेरी जिह्वा पर कुछ लिख दिया । बिल्कुल उसी प्रकार जैसे हम पेन से लिखते हैं । उस कील का गडाव में अपनी जीभ पर महसूस कर सकता था , लेकिन मेरे कुछ महसूस करने से पहले ही उन्होंने वह मंत्र मेरे जीभ

पर लिख दिया और जीभ को वापस करके मुंह को बंद कर दिया । मेरी जीभ में तीव्र पीड़ा हो रही थी ।

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे उस में से खून निकल रहा हो ....

लेकिन उन्होंने बंद करके रखा हुआ था तो मैं उसी प्रकार बैठा हुआ था ।

इसके बाद उनका दाया हाथ मेरे कंठ पर आया । जहां पर वह गोल फूली हुई चीज, जिसे एडम्स एप्पल भी कहते हैं, होती है । उसे पकड़ कर उन्होंने जोर से दबाया । मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी सांस रुक जाएगी, लेकिन एक दो सेकंड दबाने के बाद उन्होंने उसे छोड़ दिया..... और मेरा मुंह भी छोड़ दिया ..... और शांत रहने का इशारा किया ।

इसके बाद उन्होंने कुछ विशेष प्रकार के मंत्रों का उच्चारण किया !

जिनकी ध्वनि अजीब सी थी और उन मंत्रों के साथ मेरे शरीर के लगभग सभी अंगों पर उन्होंने अपने अंगूठे का स्पर्श किया । संभवत वे उस विद्या को मेरे शरीर में स्थापित कर रही थी । जिसे न्यास भी कहा जाता है ।

गुरुदेव

यह सब कुछ संपन्न हो जाने के बाद उन्होंने मुझे 11 माला गुरु मंत्र का जाप करने के लिए कहा । वह भी मेरे साथ बैठकर गुरु मंत्र का जाप करने लगी ।

लगभग मंत्र जाप पूर्ण होने वाला था तभी कक्ष में हल्का हल्का सफेद प्रकाश महसूस होने लगा !

यह कुछ-कुछ वैसा था .... जैसे स्ट्रीट लाइट के नीचे जब कोहरा होता है..... तो सफेद सा दिखाई देता है..... कुछ-कुछ वैसा ही दिखाई दे रहा था ।

जब आखिरी माला पूर्ण हुई तो सामने स्पष्ट हो चुके थे....

साक्षात पूज्य पाद गुरुदेव !

सूक्ष्म रूप में !

अपनी चिर परिचित !

स्निग्ध मुस्कान चेहरे पर लिए हुए !

आशीर्वाद की मुद्रा में !!

हम दोनों ने उन को दंडवत प्रणाम किया । उसके बाद वे विलुप्त हो गए । शिष्य अगर पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ अपने गुरु मंत्र का जाप करता है तो सामान्यतः गुरु सूक्ष्म रूप में उस स्थान पर अवश्य उपस्थित होते हैं ।

इस प्रकरण में भी वैसा ही हुआ था !
गुरुदेव ने साक्षात उपस्थित होकर इस प्रक्रिया के लिए आशीर्वाद प्रदान किया था ।
इसके बाद उन्होंने मुझे वह मंत्र बताया जो लगभग दो पेज का रहा होगा । उन्होंने उसका उच्चारण केवल तीन बार मेरे सामने किया और अपने साथ उसका उच्चारण करवाया ।
तीसरी बार के बाद उन्होंने मुझे उसका उच्चारण खुद से करने के लिए कहा ।
मैंने उच्चारण प्रारंभ किया लेकिन दो लाइन के बाद अटक गया , तब उन्होंने मुझे उस सरस्वती मंत्र का 3 बार उच्चारण करने के बाद फिर से पाठ करने के लिए कहा जो उन्होंने मुझ से 24 मिनट जाप करवाया था ।
मैंने मन ही मन गुरुदेव को याद किया । उस मंत्र का 3 बार उच्चारण किया और फिर से उस दो पेज के मंत्र को याद करके दोहराने लगा । इस बार सफलतापूर्वक मैंने उसका पाठ कर लिया । मुझसे उन्होंने 11 बार उसका पाठ करवाया और जब उन्हें विश्वास हो गया है कि मुझे यह याद हो गया है तो उन्होंने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा...

जल साधना और वे जोंक

हम श्मशान के दूसरे छोर पर पहुंचे !

जहां पर डोम बाबा ने व्यवस्था की हुई थी । वह जगह बिल्कुल नदी के पास थी । वहां एक चबूतरा बना हुआ था जो किसी के मृत शरीर को मिट्टी देने के बाद वहां बनाया गया होगा । वह काफी बड़ा था । आमतौर पर मृत्यु के बाद भी धन-संपत्ति की महिमा दिखाने का शौक नहीं जाता है । जो जितना समर्थ व्यक्ति होता है, उसकी मृत्यु के बाद उसका स्मारक भी उतना बड़ा बनाया जाता है । कई बार ग्रेनाइट जैसे पत्थरों का उपयोग भी किया जाता है । वह वैसा ही एक चबूतरा था !

उसके ऊपर सारी सामग्री रखी हुई थी और वहां बैठकर मुझे मंत्र जाप करना था । डोम बाबा ने मुझे उस स्थान पर बैठाया ।

मेरे सामने एक नरमुंड रखा हुआ था जो एक गोल यंत्र जैसे घेरे के भीतर था । उन्होंने मुझसे उस नरमुंड का पूजन करवाया । उसके बाद मंत्र जाप की विधि बताई जो एकदम विचित्र थी । यह मंत्र जाप नदी के जल के भीतर खड़े होकर करना था । वह भी निर्वस्त्र अवस्था में !

गर्दन तक जल के भीतर खड़े होकर उस मंत्र का जाप करना था । इसके पहले मैंने इस प्रकार का कोई मंत्र जाप नहीं किया था, इसलिए मुझे यह सुनकर थोड़ा अजीब सा लगा ।

लेकिन करना तो था ही .....

तो मैं नदी में उतर गया !

नदी के अंदर लगभग तीन चार मीटर आगे जाने पर गले तक पानी आ गया !

डोम बाबा ने मुझे रुकने का निर्देश दिया और मंत्र जाप करने के लिए कहा !

वह पूरा इलाका झाड़ियों से घिरा हुआ था, जो नदी तक आ रही थी । नदी के दूसरी तरफ घना आम का बगीचा था और रात को उधर कोई आता नहीं था ।

मंत्र जाप चालू हो गया और सब कुछ ठीक चल रहा था ...

तभी....

मुझे अपने पांव पर किसी के काटने जैसा एहसास हुआ ।

वहां से निकलना संभव नहीं था ।

इसलिए मैं उस दर्द को सहन करता हुआ वही खड़ा रहा !
बीच-बीच में मुझे इसी प्रकार की पीड़ा होती रही ।
कभी ऐसा लगता जैसे कोई मुझे खरोच रहा हो !
कभी मुझे ऐसा लगता जैसे कोई मुझे काट रहा हो !
उन सब की पीड़ा को सहन करते हुए मैं मंत्र जाप करता रहा !
वह मंत्र काफी बड़ा था !
उसका केवल 108 बार जाप करना था !
मुझे 108 बार मंत्र जाप करने में कम से कम 4 से 5 घंटे का समय लगा होगा !
जब मेरा मंत्र जाप पूरा हुआ तब तक पौ फट चुकी थी !
हल्का-हल्का उजाला फैल रहा था !
थोड़ी बहुत हलचल प्रारंभ हो चुकी थी ।
मैं धीरे से जल से बाहर निकला ....
तो.....
मेरे पांव में घुटने से नीचे वाले हिस्से में तीन जोक और घुटने के ऊपर वाले हिस्से में 6 जोंक चिपके हुए थे ।
अगर आपको जोक के बारे में जानकारी ना हो, तो मैं बताना चाहूंगा कि जोक एक छोटा सा जीव होता है । जो मुश्किल से छोटी उंगली के साइज का होता है

। यह खून पीता है । यह जैसे-जैसे खून पीता जाता है इसकी साइज बड़ी होती जाती है । बड़ा होते होते यह एक छोटे केले के आकार का हो जाता है । इससे आप समझ सकते हैं कि वह कितना खून पी लेता होगा ।
मेरे शरीर में लगे हुए सारे के सारे जोक लगभग उस आकार के आसपास पहुंच चुके थे । मैंने उनको किसी प्रकार से खींच कर अपने शरीर से अलग करने की कोशिश की । लेकिन वे निकल ही नहीं रहे थे । इसी प्रयास मे मैं अपने चबूतरे के पास पहुंचा । वहां डोम बाबा बैठे हुए थे उन्होने नमक डालकर उन जोंकों को निकाला । जिन स्थानों से जोक को खींचा था वहां से हल्का हल्का खून निकल रहा था । बाबा ने एक गमछा मुझे दिया और साथ में एक झोला देते हुए वहां रखे हुए सारी सामग्री को उस में डाल लेने के लिए कहा । वह सामग्री प्रतिदिन उसी प्रकार से उस चबूतरे पर रखकर उसका पूजन संपन्न करना था । उसके बाद पानी के अंदर जाकर साधना करनी थी ।
ऐसा अगली अमावस्या तक करना था , यानि पूरे तीस दिन तक !

घर पहुंच कर जब मैंने देखा तो कई जगह की चमड़ी उधड़ चुकी थी और कई जगह से खून निकल रहा था। डेटोल वगैरा लगाकर मैंने उसे ठीक किया और लगभग एक डेढ़ घंटे सो गया। तब तक ऑफिस जाने का समय हो चुका था तो उठ कर फिर मैं ऑफिस चला गया। जब वापस घर लौटा तो शाम हो चुकी थी। हल्का भोजन करके मैं एक डेढ़ घंटे फिर सो गया। अलार्म लगा लिया था जिससे 7:30 बजे के आसपास मेरी नींद खुली और मैं शमशान की ओर बढ़ चला। आठ बजे के आसपास मैं श्मशान पहुंच चुका था।

उसके बाद मैं अपने चबूतरे पर पहुंचकर झोले के अंदर से सारी चीजों को उसी प्रकार से जमाया जैसे कल जमाया था। उस नरमुंड का पूजन आदि संपन्न करने के बाद फिर नदी में उतर गया।

यह क्रम नित्य का चलता रहा और लगभग 13,14 दिन बीत चुके थे।

वह पूर्णिमा की रात्रि थी।

पूरे शरीर में कई प्रकार के चोट के निशान आ चुके थे। जो मछलियों के काटने से लेकर जोक के काटने तक के थे। पानी मे खड़े होना बेहद दर्द भरा अनुभव होता था

। जो चोट लग चुकी थी उसमें पानी लगने से भी हल्की सी पीड़ा का एहसास होता था । कुछ समय तक वहां खड़े रहे रहने के बाद जब स्थिर हो जाते उस समय जोंक और मछलियों का आक्रमण चालू हो जाता !

यह रात भर चलता रहता !

इन सारी पीड़ाओं को सहते हुए मेरा मंत्र जाप जारी था !

उस दिन पूर्णिमा थी !

इसलिए चारों तरफ हल्की सफ़ेद रोशनी फैली हुई थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी ने हल्की रोशनी वाली ट्यूबलाइट वहां जला रखी हो !

उस रोशनी में पानी चमक रहा था !

वहां का नजारा बेहद खूबसूरत था !

दूर दिख रहे बगीचे के पेड़ किसी शरीर धारी विशालकाय जीव की तरह महसूस होते थे !

दूर दूर तक फैली हुई निस्तब्धता मन में भय का संचार भी करती थी ।

मसान घाट में कोई नहीं था !

सारे लोग अपने अपने संबंधियों को आग के हवाले कर चुके थे और उसके बाद अपने अपने घर जाकर सो चुके थे ।

कुत्ते भी बिल्कुल खामोश लेटे हुए थे !
कभी अचानक कोई कुत्ता इधर से उधर दौड़ता हुआ महसूस होता था ....
बाकी कोई सरसराहट भी महसूस नहीं हो रही थी !
बेहद खामोश सा वातावरण था !
तभी..... अचानक.....
बारिश शुरू हो गई !
एक तो ठंडा पानी !
ऊपर से बारिश !
यह करेला उस पर नीम चढ़ा , जैसे वाली बात थी !
उस दिन धीरे-धीरे बारिश सुबह तक होती रही और मैं उसी प्रकार भीगता हुआ ठंड से ठिठुरता हुआ मंत्र जाप करता रहा । अब मंत्र जाप की स्पीड थोड़ी बढ़ चुकी थी क्योंकि मंत्र अच्छी तरह से याद हो गया था । पौ फटने से थोड़ा पहले मेरा मंत्र जाप पूर्ण हो जाता था । उसके बाद मैं अपनी सामग्री को उस थैले में लपेट लेता और उसी चबूतरे पर सुबह होते तक एक नींद ले लेता था । जब सूरज की रोशनी चेहरे पर टकराने लगती .... तो मैं उठ जाता । उस समय लगभग 7:30 बज चुका होता था और मैं फिर अपने घर को लौट जाता ।

पानी गिर रहा था इसलिए मैं सीधे घर लौट गया । उस दिन जब मैं घर लौटा तो मेरा शरीर तप रहा था !

बहुत तेज बुखार लग रहा था !

मैंने छुट्टी लेने का निर्णय किया और पेरासिटामोल की एक टेबलेट खाकर सो गया ।

बुखार काफी तेज था.... लगभग 102 के आसपास रहा होगा !

पानी की ठंडक और आसमान से गिरती हुई बारिश की ठंडक दोनों ने मिलकर अपना जलवा दिखा दिया था !

मेरी हालत खराब थी !

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मैं अपने बिस्तर से भी नहीं उठ पाऊंगा , लेकिन थोड़ी देर की नींद के बाद बेहतर महसूस होने लगा !

मैंने उठकर चाय बनाकर पी और फिर से अलार्म लगा कर लेट गया । उसी प्रकार शाम के 7:30 बजे अलार्म बजा । मैं उठकर फिर से श्मशान की ओर बढ़ चला ।

कृष्ण पक्ष और वह काली आकृति

कृष्ण पक्ष प्रारंभ हो चुका था !

वह प्रतिपदा की तिथि थी ।

उस रात जब मैं मंत्र जाप कर रहा था तो मुझे अपने सामने एक धुंधली सी काली आकृति दिखाई देने लगी ।

वह आकृति लगभग एक फुट ऊंची थी और उसका कोई आकार नहीं दिखाई देता था !

वह गोल धूए के बादल जैसी थी । पहले तो मुझे लगा कि यह मुझे आभास हो रहा है !

लेकिन....

वह आकृति जब हिलने लगी तो मुझे लगा कि नहीं यह वास्तव में वहां पर मौजूद है ।

वह आकृति मेरे इर्द-गिर्द दिखाई देने लगी और कभी-कभी गायब हो जाती । उस दिन और कुछ नहीं हुआ और मेरा मंत्र जाप पूर्ण होने के बाद मैं रोज की तरह वापस लौट आया । बुखार भी था लेकिन पहले की तुलना में काफी कम था । उस दिन ऑफिस भी गया । अगले दो-तीन दिनों तक उसी प्रकार वह आकृति मेरे सामने दिखाई देती रही ।

पंचमी की रात्रि को वह आकृति धीरे-धीरे आकार लेने लगी और किसी स्त्री की तरह दिखाई देने लगी । उसमें सिर्फ उसका मुख मंडल दिखाई देता था । वह बहुत ही भयानक सा मुख मण्डल था !

लाल-लाल आंखें !

ऐसा लगता था जैसे उस में से खून टपक रहा हो !

रूखे रूखे से बाल जो झाड़ू की तरह चारों तरफ फैले हुए थे !

माथे में लाल रंग का बड़ा सा टीका ....

मुंह में से बाहर निकली हुई लाल रंग की जीभ!

जिसमें खून लगा हुआ दिखाई देता था या वैसा ही कुछ लाल लाल रंग का लगा हुआ था जो बूंद बूंद टपक रहा था !

उसे अचानक इस प्रकार सामने देखना किसी भयानक अनुभव से कम नहीं था ।

मैं अपने स्थान से पीछे की ओर भागने के विषय में सोचने लगा .... लेकिन तब तक पाँव नीचे की दलदली जमीन मे धंस चुके थे और मैं पीछे नहीं जा पाया । वह आकृति ठीक मेरी आंखों के सामने उसी प्रकार मौजूद रही ।

रात भर मेरी सांसे अटकी रहीं !
वह आकृति उसी प्रकार बीच-बीच में मुझे स्पष्ट होकर अपना आभास कराती रही । वह आभास मुश्किल से पांच सात सेकंड का ही होता था .... लेकिन उतना ही शरीर में थरथरी पैदा कर देने के लिए काफी होता था....
क्योंकि उस आकृति का स्वरूप ही इतना भयानक था ।

उस दिन मुझे हर जगह उस आकृति का आभास होता रहा..... जैसे वह मेरे इर्द-गिर्द ही हो ।
मेरे कानों में हल्की सी सरसराहट की आवाज आनी चालू हो गई ।
यह आवाज किसी के बुदबुदाने जैसी लगती थी....
लेकिन स्पष्ट नहीं थी ।
जब कोई भी व्यक्ति मेरे सामने आता तो मेरे कानों में ऐसी ही सरसराहट जैसी आवाज आने लगती थी....
जिसे समझने में मुझे दिक्कत हो रही थी लेकिन कोई कुछ कह रहा है....
ऐसा महसूस होता था ....

अगली रात मंत्र जाप चालू होते ही वह आकृति स्पष्ट दिखाई देनी चालू हो गई.....

अब वह आकृति ठीक मेरे सामने खड़ी हुई थी !

उसका पूरा शरीर दिखाई दे रहा था !

वह भी ठीक मेरे ही समान गर्दन तक पानी में थी !

अचानक.....

उसने डुबकी लगाई ....

कुछ ही क्षणों में मुझे अपने पैरों में किसी चीज के चुभने का आभास हुआ !

यह मेरे दोनों टखनों में हो रहा था !

पानी के नीचे हलचल हो रही थी ....

तभी मुझे महसूस हुआ जैसे उसके नाखून मेरे दोनों पैरों को दोनों तरफ से नोचते हुए ऊपर और कंधे की तरफ बढ़ते गए और मेरी गर्दन तक पहुंच गए .....

फिर वही नाखून खरोच मारते हुए नीचे जाने लगे .....

कुल मिलाकर मेरी पीठ पर और पीछे की तरफ कम से कम तीन से चार बार ऊपर से नीचे तक उसने नाखूनों से खरोचा होगा ।

हर बार ऐसे महसूस होता था जैसे तीन चार कील एक साथ गड़ाकर कोई खींच रहा हो ।

गले से बहते हुए खून को मैं महसूस कर रहा था और शरीर में लगे हुए चोट से बहते हुए खून का एहसास उसमे हो रही जलन से हो रहा था ।

इतना सब करने के बाद वह फिर से मेरे सामने आकर खड़ी हो गई !

और....

चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान लेकर मेरी तरफ देखने लगी ....

जैसे पूछ रही हो कि कैसा लगा ? मजा आया ?

उसकी हंसी देखकर मेरी पीड़ा और बढ़ रही थी । अब तक शायद मछलियों को भी खून की खुशबू आ गई होगी .....

छोटी-छोटी मछलियां उन चोटों पर आक्रमण करने के लिए पहुंच गई थी, क्योंकि वहां से मांस काटने की जो अनुभूति होती है..... जिसका मैं अब आदी हो गया था .... वह हो रही थी ।

यह लगभग पूरे शरीर में थी !

बगल से लेकर पीछे तक पूरा शरीर हर तरफ ऐसा लग रहा था, जैसे सैकड़ों छोटी मछलियां इधर-उधर काट रही हों ।

वह सारी रात उसी प्रकार से पीड़ा में गुजरी और काफी मुश्किल से उस रात का मंत्र जाप पूर्ण हुआ ।

क्योंकि उतना हो जाने के बाद वह रुकी नहीं थी हर 10-15 मिनट के बाद वह प्रकट हो जाती और शरीर के किसी ने किसी हिस्से को नोच कर चली जाती ।

कुछ समय के बाद उसकी परीक्षण प्रक्रिया बदल गई । वह मेरे सर के बालों को पकड़कर पानी में डूबाती और जब सांस अटकने की स्थिति आ जाती ..... तब छोड़ देती ।

जैसे वह यह तय करके आई थी कि आज इसको किसी भी हालत में मंत्र जाप करने नहीं देना है ।

मैं गुरु कृपा से इस बात पर अटल था कि किसी भी हालत में मंत्र जाप करना है ।

इन सब के चलते जो मंत्र जाप मेरा साढ़े चार बजे के आस पास पूरा हो जाता था वह उस दिन पूरा होने में लगभग साढ़े छह बज गए ।

जब मैं नदी से बाहर निकला तो मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि शरीर मे कहीं भी चोट के निशान दिखाई नहीं दे रहे थे, जबकि रात भर उसने मुझे बुरी तरह से नोचा था !

घड़ियाल

देर होने की वजह से मुझे विश्राम करने का समय नहीं मिला तब तक ऑफिस जाने का समय हो चुका था । उस दिन जब मैं ऑफिस पहुंचा तो उच्च अधिकारियों का एक दल निरीक्षण करने के लिए आया हुआ था ...।

वह समाप्त होते-होते और सब समेटते 6:30 बज गए और उसके बाद घर पहुंचते-पहुंचते मुझे लगभग 7:00 बज गए । इस चक्कर में उस दिन सोने का अवसर भी ज्यादा नहीं मिल पाया । आंखें नींद से बोझिल हो रही थी !

लेकिन साधना के लिए जाना अनिवार्य था तो मैं फिर से मसान घाट पहुंच गया ।

यह कठिन था.....

उस रात जब मैं नदी के पास पहुंचा तो मैंने देखा कि वहां पर बांस से एक मचान बना हुआ है । डोम बाबा मेरा इंतजार कर रहे हैं ।

उन्होंने कहा - अब परीक्षण बढ़ेंगे और रात को झपकी लगने से तुम पानी में ना गिर जाओ इसलिए यह मचान बनाया है ।

वह इस तरीके से बनाया गया था कि उसमें दो बांस मेरे कांख में आते और उनके सहारे मैं वहां खड़ा रह सकता था । नींद आने की स्थिति में सामने ना गिरने के लिए आगे पीछे भी दो बांस इस प्रकार से बंधे हुए थे कि मैं उनके ऊपर ही गिरता । पानी के अंदर गिरने की संभावना नहीं थी ।

यह डोम बाबा की दूरदर्शिता थी या आने वाले परीक्षण का पूर्वानुमान ...

यह तो मैं नहीं कह सकता .....

लेकिन उस दिन की व्यवस्था उन्होंने उस प्रकार से की हुई थी जो मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं थी।

जब आप साधना के क्षेत्र में उतरते हैं तो किसी अनुभवी साधक या गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे तो आप बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं । इसके साथ ही आने वाली समस्याओं का पूर्वानुमान लग जाने से वह आपको उसके लिए आवश्यक तैयारी करने में भी मदद कर देते हैं !

जिससे साधना का मार्ग सफल हो जाता है !
सरल हो जाता है !!
कुछ-कुछ वैसा ही मेरे साथ हो रहा था ।

रात आगे बढ़ती गई और मेरा मंत्र जाप चलता रहा ....
लगभग एक घंटे तक कुछ नहीं हुआ ।
मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कुछ ना कुछ घटित होगा या वह रहस्यमय स्त्री फिर से प्रकट होगी.....
लेकिन कुछ नहीं हुआ !
मैं निश्चिंत होकर मंत्र जाप कर रहा था, तभी अचानक मुझे एक झपकी सी आई और मैं सामने के बांस से जा टकराया !
जैसे ही बांस से सिर टकराया, नींद टूट गई और मैं फिर से मंत्र जाप करने लगा ।
तभी....
मुझे कोई बड़ी सी चीज नदी में तैरकर मेरी तरफ आती हुई दिखाई दी !
उसका आकार काफी बड़ा था !
यह बेहद डरावनी सी स्थिति थी !

थोड़ा और पास आने पर पता चला कि वह एक घड़ियाल था !

आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि भारत की नदियों मे घड़ियाल पाये जाते हैं । घड़ियाल 6 मीटर तक लम्बा हो सकता है । घड़ियाल प्रायः काले जैसे रंग के होते हैं। इनका निचला हिस्सा पीला या सफ़ेद होता है। घड़ियाल का थूथन लम्बा, पतला और ऊपर एक घड़े की तरह की आकृति वाला होता है।

सबसे खतरनाक बात यह है कि घड़ियाल के मुंह में सौ से ज्यादा तेज तथा आपस मे एक दूसरे मे फँसने वाले दांत होते हैं। इसकी वजह से घड़ियाल की झपट और पकड़ बहुत ही मजबूत होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह करीब दो हजार न्यूटन के बल से अपने शिकार को दबोच सकता है। जिसके बाद उसका निपटना बिलकुल तय होता है । वह घड़ियाल भी करीब करीब पाँच मीटर लंबा तो रहा ही होगा और उसका खुला हुआ मुंह करीब करीब डेढ़ दो फीट का लग रहा था ।

शिवनाथ नदी के उस इलाके में मैंने इसके पहले घड़ियाल नहीं देखे थे । लेकिन नदी में तो कुछ भी हो सकता है ।

मुझे लगा कि अब यह घड़ियाल मुझे बड़ी आसानी से पकड़ लेगा, क्योंकि मैं तो मचान के बीच में पहले से ही फसा हुआ हूं ।

मैंने मन ही मन गुरुदेव को याद किया और फिर मंत्र जाप आरंभ कर दिया.....

उस घड़ियाल ने अपना बड़ा सा मुंह खोला और मेरी तरफ बढ़ना प्रारंभ कर दिया ।

मुझे लगा कि अब मेरा काम हो गया.... कुछ क्षणों मे मेरा सिर उसके मुंह मे होगा ।

जब वह लगभग मेरे से एक फुट दूर रहा होगा तभी अचानक कहीं से एक हट्टा कट्टा अजगर उस पर झपटा .....

दोनों पानी में गुत्थम गुत्था हो गए ।

मुझसे मुश्किल से एक डेढ़ फुट की दूरी पर यह सब हो रहा था .....

पानी के थपेड़े मुझ पर पड़ रहे थे और पूरे पानी मे हलचल मची हुई थी ...

उसी प्रकार से एक दूसरे के साथ लुढ़कते पलटते हुए लगभग दस मिनट हो गए ।

मैं दम साधे उनकी वह लड़ाई देख रहा था और आने वाली घटना के विषय में आशंकित हो रहा था .....

जैसी मैं आशंका कर रहा था वैसा कुछ नहीं हुआ ...

अचानक वही आकृति स्पष्ट हुई और उसने उन दोनों के ऊपर एक दृष्टि डाली और वह मुझसे दूर होते चले गए और फिर पानी शांत हो गया !

मैंने कृतज्ञता भरी निगाहों से उस शक्ति की ओर देखा । वह मुस्कुराइ और लुप्त हो गयी ।

मेरे दिल की धड़कन को सामान्य होने में कम से कम पांच मिनट लग गए होंगे क्योंकि उस समय मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मृत्यु साक्षात मेरे सामने खड़ी हुई थी ।

इसी प्रकार के अजीब अजीब परीक्षण रोज चलते रहे और चतुर्दशी की रात आ गई !

यानी अब सिर्फ दो रातें बची थी !

अमावस्या को साधना की पूर्णता हो जानी थी ।

चतुर्दशी की रात

चतुर्दशी की रात को मैं मसान घाट पहुंच गया । उसके बाद मैंने अपने झोले से उस नरमुंड को नित्य की तरह निकाल कर चबूतरे के ऊपर सजाना चालू कर दिया ....

तभी....

उस नरमुंड से हंसने की आवाज आने लगी !

ऐसा लग रहा था .....

जैसे कंकाल की हड्डियां टकरा रही हो !

फिर वह नरमुंड जिसे मैंने उस घेरे के अंदर रखा वह धीरे से हवा में ऊपर उठने लगा !

उठता उठता .....

वह अनंत आकाश में विलीन हो गया केवल उसके अट्टहास की ध्वनियाँ सुनाई दे रही थी ।

मैं असमंजस में था कि मैं अब क्या करूं ?

क्योंकि...

उस नरमुंड को घेरे के अंदर रखने के बाद मेरी रोज की मंत्र जाप की प्रक्रिया चालू होनी थी , जिसमें मुझे पानी में खड़े होकर मंत्र जाप करना था ।

लेकिन.....

नरमुंड तो गायब हो चुका था ।

थोड़ी देर तक मैं वहां खड़ा रहा फिर मैंने सोचा कि जो गया वह गया ...

जो कर सकते हो ..... वह कर लिया जाए ।

मैं पानी में जाकर खड़ा हो गया । जाप करते हुए लगभग एक घंटा बीता होगा जब अचानक सामने वह नरमुंड प्रकट हो गया !

वह किसी रेडियम जैसे चमकने वाले पदार्थ की तरह चमक रहा था ....

हल्के सफेद प्रकाश में उसकी आंखों के गड्ढे में से हल्की पीली रश्मिया निकल रही थी !

जो अंधेरे में और भयानक लग रही थी !!

वह आंखों से लगभग एक फुट की दूरी पर हवा में आकर स्थिर हो गया ।

और वहीं लटका रहा ....

कुछ देर बाद अचानक एक विस्फोट सा हुआ और वह नरमुंड दो भागों में विभक्त हो गया ।

ऐसा लग रहा था जैसे ऊपर से किसी ने आरी से उसे काट दिया गया हो ।

दोनों हिस्से अलग अलग होकर मेरे सामने एक वृत्त के आकार में घूमने लगे । दोनों उसी प्रकार अब भी चमक रहे थे ।

लगभग 10 मिनट के बाद वह स्थिर हो गए !

अब उनका पीछे वाला हिस्सा मेरी तरफ था !!

अर्थात आंख की तरफ वाला हिस्सा सामने हो गया था और पीछे का हिस्सा मेरी तरफ था !

दोनों टुकड़े अलग-अलग थे !

दायां हिस्सा धीरे-धीरे आकर मेरे दाएं कान के बगल में और बायां हिस्सा आकर मेरे बाएं कान के बगल में स्थिर हो गया और वहीं रुका रहा !

मेरा मंत्र जाप चलता रहा !

लगभग 15 या 20 मिनट और हुए होंगे जब वे दोनों हिस्से आकर मेरे खोपड़ी से चिपक गए !

मुझे ऐसा महसूस होने लगा ....

जैसे.....

वे खोपड़ी के अंदर घुसने की कोशिश कर रहे हो !

इस प्रक्रिया में खून बहने लगा.....

मैं अपनी गर्दन पर बहते हुए खून को महसूस कर रहा था !

और.....

उस चुभन से होने वाले दर्द को भी.....

जो उन हड्डियों के मेरे खोपड़ी में घुसने से मुझे महसूस हो रही थी !!!

वह दर्द बेहद असहनीय सा था !

मैं जब लगभग बेहोश होने की कगार पर था .....

तब अचानक वह दर्द रुक गया ।

उस फटी खोपड़ी के दोनों हिस्से मेरी खोपड़ी में घुस चुके थे ।

रक्त अभी भी दोनों तरफ से बह रहा था.....

जो मेरी गर्दन से होता हुआ नीचे पानी में जाता हुआ मैं देख पा रहा था । इन सब रहस्यमय क्रियाओं से होता हुआ....

उस दिन का मंत्र जप पूर्ण हो गया !

मैं जब पानी से बाहर निकला.....

तो....

मुझे अपने सिर के दोनों तरफ दर्द का एहसास हो रहा था ।

लेकिन.....

छूकर देखने पर वहां किसी प्रकार के चोट के निशान नहीं थे !

पर....

सूखा हुआ रक्त वहां मौजूद था ।

मैंने उसको अच्छी तरह से रगड़ कर धोया और वापस अपने चबूतरे पर आकर बची हुई सामग्री झोले में डाली और वही सो गया .....

अमावस्या और कपालिनी का प्राकट्य

वह रविवार का दिन था । इसलिए ऑफिस जाने की हड़बड़ी नहीं थी और मैं आराम से दस बजे तक वहीं सोया रहा ।

मेरे चेहरे पर जब पानी की बूंदे गिरी तब मैं हड़बड़ा कर उठा तो देखा सामने विनोदिनी खड़ी थी !

मैंने हड़बड़ा कर उनको प्रणाम किया और उठ कर बैठ गया ।

उन्होंने मुझसे कहा - तेरी प्रक्रिया बहुत अच्छी है, तूने लगभग सारे परीक्षणों को पार कर लिया है । अब एक अंतिम परीक्षण आज और होगा और उससे अगर तू पार हो गया तो तुझे महाकाली की कृपा.....

उसकी शक्ति का अंश कपालिनी.....

साक्षात कपालिनी सिद्ध हो जाएगी ।

एक बात का ध्यान रखना कि तू गुरुदेव का शिष्य है और उनकी मर्यादा का ध्यान रखना भी तेरा कर्तव्य है । इस सिद्धि की सहायता से कोई ऐसा कार्य मत करना, जो इसका उल्लंघन करता हो ।

इस सिद्धि के बाद तेरे जीवन में ऐसी ऐसी बातें पता चलेगी, जो तुझे विचलित कर सकती हैं, लेकिन उन

सब को देखते समझते हुए तटस्थ रहकर अपना जीवन व्यतीत करना है !

इस बात का ध्यान रखना !!!

मैंने सहमति में सिर हिलाया और अपना झोला समेटकर घर की ओर रवाना हो गया !

बहुत दिन के बाद तबीयत से सोने का अवसर मिला था, तो पूरा दिन मैं बिस्तर पर ही पसरा रहा । सावधानी के लिए शाम के छह बजे का अलार्म लगा चुका था ।

जब वह बजा तो मैं उठा !

तब तक पूरी ताकत लौट चुकी थी !

चाय पीने के बाद हल्का भोजन किया !

उसके बाद गुरु मंत्र की इक्कीस मालाओं का जाप करके मैंने गुरुदेव से साधना की पूर्णता की प्रार्थना की !

किसी भी साधना को करते समय अगर उसके पहले आप गुरु पूजन या गुरु मंत्र का जाप कर लें तो साधना में सफलता की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं !

यह मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है ।

गृहस्थ साधकों के साथ यह दिक्कत होती है कि वह जब तक काम नहीं होता है, तब तक गुरु मंत्र का जाप करते रहते हैं .....

जैसे ही काम पूरा हो जाता है तो यह भूल जाते हैं कि गुरु भी है और गुरु मंत्र जाप भी करना है.....
जब जीवन में दूसरी कोई समस्या सामने आती है तब फिर गुरु याद आता है !!!

तंत्र साधना के क्षेत्र में आए हुए साधक को नियमित रूप से अपने गुरु का मंत्र जाप करते रहना चाहिए इससे उसकी उर्जा संतुलित सुरक्षित और विकसित होती रहती है ।

रात को मैं फिर से मसान घाट पहुंच गया !
आज साधना की आखिरी रात थी !
अमावस्या तिथि..... यानी कि साधना को चलते हुए लगभग तीस दिन का समय हो चुका था । विनोदिनी ने अंतिम परीक्षण की बात की थी, इसलिए मन में थोड़ा सा संशय भी था कि पता नहीं क्या होगा ?
यही सब सोचता हुआ मैं अपने चबूतरे तक पहुंच गया ।
वहां पहुंचने के बाद मैंने घेरा बनाया ।
नरमुंड नहीं था । इसलिए घेरे के अंदर कुछ नहीं था । मैं यही सोच रहा था कि तभी अचानक मुझे तीव्र पीड़ा सी महसूस हुई.....

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा सिर बीच से फट गया हो और उसके दो टुकड़े हो गए ।

उसके बीच में से वह मुंड बाहर निकला .....

साबूत.....

रक्त से सना हुआ.....

वह स्वयं उस घेरे के अंदर जाकर बैठ गया ।

थोड़ी देर में मेरा सर भी जुड़ गया.....

इन सारी चीजों को मैं प्रत्यक्ष महसूस कर रहा था .....

सर के जुड़ते ही पीड़ा भी थोड़ी कम हो गई !

उसके बाद मैंने वह पूजन संपन्न किया ....

जो नित्य प्रति करता था ....

आज पूजन करते ही पूरा वातावरण बिल्कुल शांत और स्थिर सा हो गया !

हवा भारी हो गई ....

एक अजीब सी गंध जो चिता के जलने की गंध जैसी थी.....

वह पूरे वातावरण में पहले से व्याप्त थी !

वह गंध अब और तीव्र हो गई और उसके साथ-साथ एक अजीब सी खुशबू भी फैल गई.....

वह खुशबू कुछ-कुछ चमेली के तेल जैसी थी, लेकिन उससे कई गुना तेज !

कुछ ऐसा लग रहा था, जैसे ढेर सारी चमेली के फूलों को मसल कर वहां डाल दिया गया हो !

यह दोनों गंध एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत थीं ।

एक बेहद मादक और सुखद थी.....

तो दूसरी उतनी ही भयानक और मन को अशांत कर देने वाली गंध थी !

यह दोनों ही गंध उस समय वातावरण में फैली हुई थी .....

उस खोपड़ी की दोनों आंखें लाल रंग से चमकने लगी !

ऐसा लगा जैसे उसके अंदर कोई दिया जल रहा हो या कोई छोटी सी लाइट लगा दी गई हो ।

अंधेरे में उसे देखना वास्तव में एक भयानक अनुभव था ।

मैं नित्य उसके सामने एक छोटा सा दीपक भी लगाता था ....

वह हल्का-हल्का टिमटिमा रहा था ।

मैं पूजन संपूर्ण करने के बाद आखिरी चरण के लिए नदी की ओर चल पड़ा ।

मुश्किल से मैं दो कदम चला होऊंगा । जब अचानक पीछे से चीखने की आवाज आई !

मुझे लगा कि मैं मुड़ कर देख लूँ !

अपने आप को किसी तरह रोककर सीधा अपने मचान की तरफ बढ़ गया ।

उस चीख से बात खत्म नहीं हुई, बल्कि उसके बाद चारों तरफ चीख-पुकार मच गई ।

ऐसा लग रहा था, जैसे कोई बहुत बड़ी भीड़ में अफरा तफरी मच गई हो .....

या बहुत सारे लोग आपस में एक दूसरे से झगड़ रहे हो.....

या भारी मारकाट मची हुई हो ।

स्त्रियाँ बच्चों और पुरुषों सभी के स्वर उसमें मौजूद थे ।

कोई चीख रहा था ....

कोई रो रहा था.....

और कोई चिल्ला रहा था !

आपस में झगड़ने जैसी ध्वनियाँ भी आ रही थी ।

अभी तक 27-28 दिन बीत चुके थे और उसमें ऐसा अनुभव नहीं हुआ था ...

दिखाई कोई नहीं दे रहा था ....
लेकिन इस प्रकार की अजीब अजीब आवाजें सब तरफ से आ रही थी ।
मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं देख नहीं पा रहा हूं लेकिन वह सारे लोग जिनकी आवाज मैं सुन पा रहा हूं वह उसी श्मशान घाट में मौजूद है ।

आज की परिस्थिति में देखे तो अस्पताल जीवन का प्रारंभ है ....
और मसान घाट उसका अंत !
यह एक ऐसा स्थान है जहां पर अनंत आत्माएं विचरण करती रहती है ... जो सभी प्रकार की अतृप्त आत्माओं का निवास स्थल है ।
श्मशान घाट वह स्थान है जो भगवती के द्वारा उनके लिए नियुक्त गणों और गणिकाओं के अधिकार क्षेत्र में आता है और वे यहां पर नग्न तांडव करते हैं.....
आने वाली आत्माओं को उनकी जीवन भर की कार्यशैली और क्रियाकलापों के अनुसार वे प्रताड़ित भी करते है.....

उनकी प्रताड़ना का स्तर बहुत भयानक होता है और यातनाएं भी....

आत्मायें निर्धारित समय तक उन यातनाओं को स्वीकार करते हुए श्मशान घाट की सीमा के अंदर ही रहती है ....

इसलिए आम तौर पर सनातन धर्म में महिलाओं और बच्चों को श्मशान घाट में जाने के लिए मना किया जाता है ।

उनका मन और मस्तिष्क दोनों सुकोमल होते हैं जिन पर आसानी से नियंत्रण किया जा सकता है ।

जो आत्मायें ज्यादा प्रबल और कठोर होती हैं , जिन्होंने अपने जीवन में बहुत ज्यादा दुष्कर्म किए होते हैं, वह इस प्रकार की किसी आत्मा का अवलंबन करके अपनी बची हुई वासनाओं को पूर्ण करने की कोशिश करती हैं ।

इसलिए आवश्यकता ना होने पर बच्चों महिलाओं और कोमल मस्तिष्क वाले व्यक्तियों को श्मशान घाट, कब्र, मजार जैसे स्थानों पर जाने से बचना चाहिए, क्योंकि यह सारे के सारे मृत आत्माओं के रहने के स्थान है ।

अगर आप वहां पर जाते हैं तो उनके सीमा क्षेत्र का अतिक्रमण करते हैं और ऐसी स्थिति में वह आपके ऊपर हावी हो सकते हैं । उसके बाद कभी कभी परिस्थितियां जटिल हो जाती है !

हो सकता है यह बात आपको कुछ अजीब लगे .....
लेकिन आप थोड़ा सा व्यावहारिक रूप से सोचें.....

मंदिर में आपको अधिकांश ऐसे लोग मिलेंगे जो ईश्वर में श्रद्धा रखते हैं !
पूजा पाठ करने की मानसिकता वाले लोग हैं !
तो ऐसे लोग मंदिर जाना पसंद करते हैं ।

अगर आप किसी बार में जाएं !
तो वहां पर ऐसे लोग मिलेंगे जिनको शराब पीना पसंद है !
या जिनका शौक शराब पीना है !
तो ऐसे लोग आपको वहां पर मिलेंगे ।

आप किसी अखाड़े में चले जाएं,

तो वहां ऐसे लोग मिलेंगे जिनको पहलवानी का शौक है !

या ऐसे लोग जिनको पहलवानों को लड़ते हुए देखने का शौक है !

यानी कुल मिलाकर पहलवानी की इच्छा रखने वाले लोग आपको अखाड़े में मिलेंगे ।

इसी प्रकार से हर किस्म के लोगों का अलग-अलग मिलन स्थल होता है ... या उनके रहने की जगह होती है ।

तो.....

जिस स्थान पर किसी को दफन किया गया है या उसका अंतिम संस्कार किया गया है....

तो वह स्थान उसी प्रकार की आत्माओं के लिए निर्धारित हो जाता है.....

यही प्रकृति का नियम है ।

खैर ....

जब मैं पानी में जाकर खड़ा हुआ !

तो....

वहां भी मुझे दोनों प्रकार की खुशबू आ रही थी ....

और चीखने चिल्लाने की आवाज भी .....

मैंने अपने मन को कठोर करते हुए मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया ....

लगभग एक या डेढ़ घंटे का समय बीता होगा !

जब मुझे अपने शरीर पर किसी का स्पर्श महसूस हुआ !

ऐसा लगा जैसे कोई मेरे शरीर पर हाथ फेर रहा था ।

मैंने आंख खोल कर देखा....

तो....

सामने में एक अत्यंत आकर्षक और रूपवान स्त्री

बिल्कुल मुझसे सट कर खड़ी हुई थी ।

यह देख कर मैं हड़बड़ा गया !

क्योंकि....

इतनी रात में.....

जिस जगह पर मैं खड़ा था.....

वहां पर.....

किसी स्त्री का इस प्रकार से उपस्थित होना वास्तव में किसी अद्भुत आश्चर्य से कम नहीं था ।

फिर मेरे मन में विचार आया कि यह हो सकता है विनोदिनी के द्वारा बताया गया आखिरी परीक्षण हो ।

और वास्तव में वह वही था .....

उसे देखने मात्र से शरीर में आवेश का संचार हो रहा था ।

जिस आयु में मैं था, उसमे अपने आप पर ऐसी स्थिति में नियंत्रण रखना संभव नहीं था । मैंने अपनी आंखें बंद कर ली और गुरुदेव को याद करके पुनः मंत्र जाप में लीन हो गया । मुझे अपने आसपास उसकी उपस्थिति का आभास बराबर होता रहा । अचानक खिलखिलाने की आवाज आई !

मैंने आंखों को हल्का सा खोल कर देखा ....

तो....

वहां पर दो और स्त्रियां प्रकट हो चुकी थी !

सभी निर्वस्त्र अवस्था में थी और मेरे मेरे इर्द-गिर्द घूम रही थी । जिसे देखकर मेरे मन में घबराहट और वासना दोनों ही जागने लगी ।

मन में इच्छा हुई कि मंत्र जाप छोड़कर उन्हें पकड़ लो ....

लेकिन....

तभी अंदर से एक आवाज आई !

विनोदिनी की आवाज !

जो उन्होंने शब्द कहे थे वह मेरे मस्तिष्क मे फिर से गूंजे ...

मर्यादा का ध्यान रखना .....

गुरुदेव की मर्यादा का ध्यान रखना !!

जैसे ही मुझे इसका स्मरण हुआ .....

गुरुदेव को मन मे स्मरण किया गुरुमंत्र का जाप किया और मैं फिर से आंखें बंद करके मंत्र जाप करने में लीन हो गया ।

वे तीनों मेरे इर्द-गिर्द उसी प्रकार से किलोल करते हुए घूमती रही ...

हां !

इतना उन्होंने ध्यान रखा कि वह मेरे शरीर को स्पर्श नहीं कर रही थी ...

लेकिन उनकी उपस्थिति और उस तीव्र मादक सुगंध का एहसास मुझे हो रहा था ।

अचानक मुझे आभास हुआ कि वह सुगंध गायब हो गई और चिता के और मांस के जलने की जो दुर्गंध आ रही थी ....

वह भयानक रूप से तीव्र हो गई !

खिलखिलाने की आवाज भी आ रही थी ।
मैंने फिर से अपनी आंखों को खोलकर देखा तो उनका स्वरूप बदल चुका था । मेरे इर्द-गिर्द जो खूबसूरत महिलाएं घूम रही थी .....
उनके स्थान पर तीन कंकाल घूम रहे थे ।
वे सारे के सारे कंकाल अंधेरी रात में भी चमक रहे थे ।
कुछ देर के बाद वे तीनों गायब हो गई....

उसके बाद पानी के अंदर से हलचल सी होने लगी ।
तभी किसी ने मेरा पैर पानी के अंदर पकड़ लिया ।
ऐसा लगा जैसे किसी घड़ियाल ने शायद मेरे पांव पकड़ लिए हों !
उसके दांतो की चुभन मैं महसूस कर रहा था !
ऐसा लग रहा था, जैसे वह मेरे पैरों को चबा जाएगा ।
उसके दांत दो तीन बार मेरे पांव में चुभे !
वह बांस अगर नहीं होता तो....
संभवत: मैं नीचे गिर गया होता ।
वह उसी प्रकार से मेरे पांव पर चोट करता रहा और फिर थोड़ी देर के बाद वह भी शांत हो गया । तब तक मैं उस बांस के सहारे लटकने की स्थिति मे आ चुका था ....

तभी....

मुझे सामने से कुछ शोरगुल सा सुनाई देने लगा ....

ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारे लोग हल्ला कर रहे हो.....

लेकिन कोई नहीं दिख रहा था .....

अचानक ....

नदी के सतह के ऊपर ढेर सारे चमचमाते हुए बिंदु दिखाई देने लगे जो तेजी से मेरी तरफ बढ़ रहे थे ....

एक बिंदु आकर मेरे माथे से टकराया !

ऐसा लगा जैसे कोई छोटा सा पत्थर आकर माथे से टकरा गया हो !

उसके बाद तो उन बिंदुओं की बौछार होने लगी !

यह सारे के सारे प्रकाश बिंदु आकर मेरे शरीर के अलग-अलग हिस्सों में टकराते !

उस समय बिल्कुल वैसा एहसास होता जैसे गुलेल से पत्थर मारने से लगने वाली चोट का होता है !

उसके बाद वे सारे प्रकाश बिन्दु वहां से गायब हो गये ।

ऐसा लग रहा था जैसे वे सारे के सारे मेरे शरीर के अंदर समाहित हो गए हो .....

इसके बाद फिर चीखने चिल्लाने की आवाज आने लगी ...

हवा तेजी से चलने लगी ...

इतनी तेज हवा चल रही थी कि मेरे पास के पेड़ लहरा रहे थे ...

लेकिन सामने आम के बगीचे के पेड़ बिल्कुल शांत दिखाई दे रहे थे ।

मेरे पास में जो पेड़ था वह दाएं बाएं झूल रहा था ।

पानी में लहरें उठने लगी !

घास की सरसराहट की आवाज भी सुनाई दे रही थी ...

जिससे पता चल रहा था कि उस स्थान पर जहां मैं खड़ा था वहां हवा तेज चल रही है ...

और तभी.....

नदी के पानी में एक भंवर सा उठा और वह गोल गोल घूमने लगा .....

वह भंवर घूमता हुआ मेरे करीब आने लगा ..... जैसे जैसे वह मेरे करीब आने लगा .....

मेरे अंदर यह इच्छा प्रबल होने लगी कि जहां मैं खड़ा हूं वहां से भाग जाऊँ ...

उस प्रकार के घूमते हुए पानी में अगर आप फस जाए....

तो उससे नहीं निकल सकते ... चाहे आप कितने बड़े तैराक हों !

यह बात मुझे पता थी !

लेकिन तभी मन मे विचार कौंधा कि यह सारे तो परीक्षण है ...

जिसमें मुझे स्थिर होकर खड़ा रहना है !

इसलिए मैं वहीं पर स्थिर खड़ा रहा !

वह भंवर धीरे-धीरे मेरे करीब आता चला गया और मुझे उसने अपने घेरे में ले लिया ।

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं भी उसके अंदर घूम रहा हूं ....

मुझे अपने अस्तित्व का एहसास गायब होता हुआ महसूस होने लगा....

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उस भंवर के अंदर से होता हुआ किसी लंबी सुरंग जैसी चीज से गुजर रहा हूं । उसमें से होता हुआ मैं एक अत्यंत प्रकाशमय जगह पर पहुंच गया !

जहां चारों तरफ हल्का हल्का नीला प्रकाश फैला हुआ था !

उस प्रकाशमय जगह के बीच में एक अद्भुत महल दिखाई दे रहा था ...
जो स्वयं नीले और सफेद रंग के पत्थरों से जगमगा रहा था !
ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह रत्नों से बना महल हो ।
तभी न जाने कहां से दो रहस्यमय स्त्रियां प्रकट हो गई ।
उनके एक हाथ में त्रिशूल था और दूसरा हाथ खाली था । उन्होंने मेरे एक एक हाथ को पकड़ा और उस महल की ओर लेकर आगे बढ़ गई ...

जब हम उस महल से अंदर घुसे तो आगे एक विशाल कक्ष दिखाई दे रहा था। जिसमें चारों तरफ अद्भुत सतरंगी प्रकाशमान रत्न जड़े हुए थे !
सामने एक विशाल सिंहासन था जो नीले रंग के किसी रत्न से बना हुआ दिखाई दे रहा था !
उसके ऊपर विराजमान थी महामाया महाकाली अपने जाज्वल्यमान स्वरूप में !
और उनके साथ विराजमान थे ....
साक्षात देवाधिदेव महादेव महाकाल !
अपने तेजस्वी प्रचंड स्वरूप में .....

मुझे उनके सामने खड़ा करके वे दोनों स्त्रियां बाहर चली गई !

उन्होंने मुझे अपने करुणामयी नेत्रों से देखा और अभय मुद्रा में हाथ उठा दिया !

मैं साष्टांग दंडवत प्रणाम की मुद्रा में लेट गया !

और मेरे मुख से स्वतः उच्चरित होने लगा ...

उनकी स्तुति का यह स्तोत्र .....

महाकाल रमणी के चरणों मे अर्पित ....

शवासन संस्थिते महाघोर रुपे ,महाकाल प्रियायै
चतुःषष्टि कला पूरिते |
घोराट्टहास कारिणे प्रचण्ड रूपिणीम,अम्बे महाकालीम
तमर्चयेत सर्व काले ॥

मेरी अद्भुत स्वरूपिणी महामाया जो शव के आसन पर भयंकर रूप धारण कर विराजमान है, जो काल के अधिपति महाकाल की प्रिया हैं, जो चौंषठ कलाओं से युक्त हैं, जो भयंकर अट्टहास से संपूर्ण जगत को कंपायमान करने में समर्थ हैं, ऐसी प्रचंड स्वरूपा मातृरूपा महाकाली की मैं सदैव अर्चना करता हूं |

उन्मुक्त केशी दिगम्बर रूपे,रक्त प्रियायै श्मशानालय संस्थिते ।
सद्य नर मुंड माला धारिणीम,अम्बे महाकालीम तमर्चयेत सर्व काले ॥

जिनकी केशराशि उन्मुक्त झरने के समान है ,जो पूर्ण दिगम्बरा हैं, अर्थात हर नियम, हर अनुशासन,हर विधि विधान से परे हैं , जो श्मशान की अधिष्टात्री देवी हैं ,जो रक्तपान प्रिय हैं , जो ताजे कटे नरमुंडों की माला धारण किये हुए है ऐसी प्रचंड स्वरूपा महाकाल रमणी महाकाली की मैं सदैव आराधना करता हूं |

क्षीण कटि युक्ते पीनोन्नत स्तने, केलि प्रियायै हृदयालय संस्थिते।
कटि नर कर मेखला धारिणीम, अम्बे महाकालीम तमर्चयेत सर्व काले ॥

अद्भुत सौन्दर्यशालिनी महामाया जिनकी कटि अत्यंत ही क्षीण है और जो अत्यंत उन्नत स्तन मंडलों से सुशोभित हैं, जिनको केलि क्रीडा अत्यंत प्रिय है और वे सदैव मेरे

ह्रदय रूपी भवन में निवास करती हैं . ऐसी महाकाल प्रिया महाकाली जिनके कमर में नर कर से बनी मेखला सुशोभित है उनके श्री चरणों का मै सदैव अर्चन करता हूं ||

खड्ग चालन निपुणे रक्त चंडिके, युद्ध प्रियायै युद्धभूमि संस्थिते ।
महोग्र रूपे महा रक्त पिपासिनीम, अम्बे महाकालीम तमर्चयेत सर्व काले ॥

देव सेना की महानायिका, जो खड्ग चालन में अति निपुण हैं, युद्ध जिनको अत्यंत प्रिय है, असुरों और आसुरी शक्तियों का संहार जिनका प्रिय खेल है,जो युद्ध भूमि की अधिष्टात्री हैं , जो अपने महान उग्र रूप को धारण कर शत्रुओं का रक्तपान करने को आतुर रहती हैं , ऐसी मेरी मातृस्वरूपा महामाया महाकाल रमणी महाकाली को मै सदैव प्रणाम करता हूं |

मातृ रूपिणी स्मित हास्य युक्ते, प्रेम प्रियायै प्रेमभाव संस्थिते ।

वर वरदे अभय मुद्रा धारिणीम, अम्बे महाकालीम
तमर्चयेत सर्व काले ॥

जो सारे संसार का पालन करने वाली मातृस्वरूपा हैं, जिनके मुख पर सदैव अभय भाव युक्त आश्वस्त करने वाली मंद मंद मुस्कुराहट विराजमान रहती है , जो प्रेममय हैं जो प्रेमभाव में ही स्थित हैं , हमेशा अपने साधकों को वर प्रदान करने को आतुर रहने वाली ,अभय प्रदान करने वाली माँ महाकाली को मै उनके सहस्त्र रूपों में सदैव प्रणाम करता हूं |

मुझे ऐसा लग रहा था....
जैसे मेरे इर्द-गिर्द हर तरफ से

अंबे महाकालीम तमर्चयेत सर्व काले

का स्वर गुंजारित हो रहा हो ...
जिसके बीच में मैं अभिभूत होता हुआ खड़ा हूं !
कुछ क्षण ऐसी स्थिति रही होगी !

उसके बाद एक जोर का झटका सा लगा ...

जब मैंने आंखें खोल कर देखा तो सब कुछ शांत हो चुका था ...

मैं अपने उसी बांस के मचान पर लटका हुआ था ।

उस दिव्य अवस्था से निकलने में मुझे थोड़ा सा समय लगा॥

उसके बाद मैंने बचा हुआ मंत्र पाठ पूरा किया !

भगवती को हृदय से प्रणाम किया !

जैसा कि विनोदिनी ने निर्देशित किया था .....

उसी प्रकार से सारी पूजन सामग्री को नदी में विसर्जित कर दिया और वापस घर आ गया ।

सिद्धि बन गयी जी का जंजाल

घर आने के बाद स्नान आदि कर्मों से निवृत्त होकर मैं कार्यालय की ओर चल पड़ा !

वहां पहुंचने के बाद मुझे अजीब अजीब से अनुभव होने लगे ...

जो व्यक्ति मेरे सामने से गुजरता था !

मुझे उसका भूतकाल और भविष्य काल दोनों दिखाई देने लगता था !

जब मैं कार्यालय के अंदर बैठा था तभी मुझे अपने अधिकारी कक्ष से बाहर निकलते हुए दिखे ...

मेरे मानस पटल पर एक एक्सीडेंट होता हुआ दिखा ।

उसे देख कर मेरी प्रबल इच्छा हुई कि मैं जाकर उनको रोक लूँ ....

लेकिन फिर मुझे लगा कि क्या कहकर रोकूंगा कि मुझे ऐसा लग रहा है ...

और मैं झिझक गया तब तक वे गाड़ी मे बैठकर निकल गए ।

लगभग एक घंटे के बाद खबर आई कि उनकी गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया है और वे अस्पताल में भर्ती हैं ।

शाम को मैं अस्पताल पहुंचा तो उनकी पत्नी सदी का पल्लू मुह मे दबाये सुबक सुबक कर रो रही थी .....
ऐसा लग रहा था जैसे उनको बहुत बड़ा आघात पहुंचा हो ...
मैंने उन्हें भी प्रणाम किया और वापस मुडा तभी मेरे मानस पटल पर एक अजीब सा दृश्य चमका ... जिसमें उस अधिकारी की पत्नी ड्राइवर के साथ आपत्तिजनक अवस्था में दिख रही थी ।
उस समय की परिस्थिति को देखते हुए मैं शांत होकर वापस हो लिया ।

जब मैं घर वापस आ रहा था तो बगल में रहने वाली भाभी मंदिर से लौट रही थी !
भय्या दुबई मे एक बाड़ी कंपनी मे थे ।
सभी उन्हे अत्यंत धार्मिक और शालीन महिला मानते थे ।
वे यहाँ अपने सास ससुर और देवर के साथ रहती थी ।
वे अपने सास ससुर का पूरा ध्यान रखती और उनको अस्पताल ले जाने से लेकर सारे कार्य करती थी ! सभी उन्हे एक गुणी और सुशील बहू मानते थे .....

तभी मेरे मानस पटल पर एक दृश्य चमका..... जिसमें वह एक होटल मे अपने ही देवर के साथ आपत्तिजनक अवस्था में दिख रही थी ।

उसके अगले दिन जब मैं कार्यालय से वापस आ रहा था तो मुझे दीनानाथ जी मिले । जो एक बहुत बड़े समाजसेवी थे ।
उनसे मेरी पुरानी पहचान थी तो उन्होंने मुझे अपने अनाथ आश्रम में आने के लिए कहा ...
मैं उनके साथ हो लिया .....
वहां पंडाल आदि सजे हुए थे और स्थानीय नेता से लेकर बड़े-बड़े लोग वहां मौजूद थे ।
उन सब के बीच में प्रदर्शन की वस्तुओं की तरह अनाथ बच्चों को सजा सजा कर रखा गया था । लेकिन....
उनकी तरफ देखते ही मेरे मानस पटल पर फिर से एक दृश्य आ गया ...
जिसमें उन बच्चों की बड़ी बेरहमी से पिटाई हो रही थी ....
स्वयं दीनानाथ वहाँ खड़े थे ....

मैं वहाँ नहीं रुक पाया और किसी तरह वहां से उठकर अपने घर आ गया ।

अगले दिन सुबह सुबह मुझे अपने दुखी पड़ोसी मिल गए । वे विधुर थे , लगभग 45 वर्ष उनकी आयु रही होगी । तीन साल पहले उनकी बीमार पत्नी की स्टोव मे आग लग जाने से झुलसकर मौत हो गयी थी ।

वे हमेशा उनके जाने का दुखड़ा रोते रहते थे.....

इसलिए सभी की सहानुभूति के पात्र भी थे ....

उनको देखते ही मेरे मानस पटल पर एक ऐसा दृश्य दिखा .....

जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था ।

वे स्वयं अपनी पत्नी के ऊपर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा रहे थे ।

यह देखकर मै विचलित हुआ और लगभग वहाँ से भाग खड़ा हुआ.....

इसी प्रकार से विचित्र विचित्र प्रकार के सत्य का सामना मुझे लगातार होता रहा !!

तीन-चार दिन में मैं बुरी तरह परेशान हो गया मुझे लगा कि यह सिद्धि तो मुझे मार ही डालेगी !!!

आप स्वयं सोचे कि जिसे आप यह सोच रहे हो कि वह आपके साथ अत्यंत सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करता या करती है.....

और आपसे बहुत ज्यादा प्रेम करता या करती है .....

वह वास्तव में ढोंग कर रही है या कर रहा है तो आपका क्या हाल होगा ?

यहां तो सारे के सारे दृश्य स्पष्ट किसी चलचित्र की तरह मुझे दिखाई देते थे !

ऐसा लगता था जैसे कोई फिल्म सामने चल रही हो !

सारे लोग स्पष्ट दिखते थे !

जैसे मैं वापस उस कालखंड में पहुंच जा रहा था ।

किसी टाइम ट्रेवलर की तरह .....

कुछ दिनों मे ही मेरी रातों की नींद उड़ चुकी थी !

इतनी परेशानी तो मुझे तीस दिनों तक नदी के पानी में खड़े होकर साधना करने में भी नहीं आई थी !!

सिद्धि पर नियंत्रण

मैंने सोचा कि अब इसका कुछ उपाय करना पड़ेगा और मैं शाम को डोम बाबा के झोपडी मे पहुंच गया और उनसे सारी राम कहानी कह सुनाई ,,,,,,

मेरी बात सुनकर वह खिल खिलाकर हंस पड़े और बोले - बेटा ! भूत काल और भविष्य काल जान लेना.....

सुनने में बड़ा अच्छा लगता है । लेकिन जब वास्तव में तुम उसे देखने लग जाओ तो जीवन जीने की इच्छा ही समाप्त हो जाएगी ।

मैंने कहा - बाबा, आप के कहने पर मैंने यह साधना संपन्न की थी.....

लेकिन ऐसे हर किसी के बारे में मुझे पता चलता रहेगा.....

तब तो....

मेरा जीना मुश्किल हो जाएगा ।

आप कुछ ऐसा करो कि जिसके बारे में मुझे जानने की इच्छा हो केवल उसी के बारे में मुझे पता चले ।

बाबा ने कहा - ठीक है !

उन्होंने मुझे अपने सामने बिठाया और मेरे माथे पर तीन लकीरे बनाई और कोई मंत्र पढ़कर फूंका और फिर मुझे

कहा - जब भी तुझे किसी के बारे में जानना होगा तो अपने माथे पर अपने बाएं हाथ की तीन उंगलियों से त्रिपुंड जैसा खींचना ....

उसके बाद उस व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त करना तो कपालनी तेरे कानों में उसके विषय में जानकारी देगी और तुझे उसका हाल-चाल पता चल जाएगा ।

यह सुनकर मुझे साधना में सिद्धि मिलने से भी ज्यादा खुशी हुई .....

क्योंकि इन कुछ दिनो में ही मैं मानसिक रूप से इतना विचलित हो गया था कि कुछ दिन मे शायद आत्महत्या करने की स्थिति में पहुंच जाता ।

जिन लोगों के विषय में आपके मन में कोई धारणा बनी हुई हो .....

वह अगर उसके बिल्कुल उलट निकले तो संसार के प्रति आपकी जितनी माया और मोह है वह सब कुछ समाप्त हो जाएगा.....

फिर आप स्वयं अपने मोक्ष की इच्छा करने लगेंगे .....

कुछ कुछ वैसी ही स्थिति मेरे साथ हो चुकी थी .....

-:अन्य रचनाएँ :-

01. तांत्रिक अघोरानंद ।
02. अघोरानंद की अप्सरा ।
03. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
04. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
05. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
06. अघोरानंद और छाया की माया ।
07. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
08. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
09. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
12. अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।
13. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।
14. अघोरानंद और चाँदनी महल की आत्माएं ।
15. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गं ।

16. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गं का रहस्य ।

17. अघोरानंद और चम्पा बंजारन ।

18. अघोरानंद और एंबरग्रीस ।

19. कापालिक चंडेश्वर ।

20. कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।

21. वह रहस्यमय युवती ।

22. परेतिन की शादी ।